श्री श्रीष चन्द्र दीक्षित
मुख्य परामर्षदाता
पूर्व सांसद व पूर्व पुलिस महानिदेषक
श्री भारतेन्दु प्रकाष सिंघल
राष्ट्रीय प्रधान
पूर्व सांसद (राज्य सभा) व पूर्व पुलिस महानिदेषक
मे . ज . (से दृ नि .) विष्वास स . जोगलेकर
राष्ट्रीय कार्यकारी प्रधान
संपादक
प्रो0 सतीष चन्द्र
संपादक मंडल
डॉ महेष चन्द्र
देवेन्द्र मित्तल, रामाश्रय उपाध्याय
प्रो0 श्री धर पन्त, डॉ0 रामषरण गौड़
प्रकाषक व मुद्रक
देवेन्द्र मित्तल (उपप्रधान)
प्रकाषन स्थान
3308, सेक्टर–डी–3 वसंत कुंज,
नई दिल्ली – 110070
ꣳ
SUBSCRIPTION RATE
Inland : Life Rs. 800/-
Annual 100/-
Overseas : Life US$ 100
Annual US$ 10
Per copy : £1 $1.50, IRs 15
ADVERTISEMENT TARIFF
Outer Cover : Rs. 15000/-
Inner Cover : Rs. 12,000/-
Full Page : Rs. 10,000/-
Half Page : Rs. 5,000/-
Payable by MO/Bank Draft/Crossed Cheque in the name of
Sanskritik Gaurav Sansthan
869- Sector-A, Pocket-C, Vasant Kunj,
New Delhi-110070
मुद्रण स्थान
ऋषि ऐन्टर प्राइजेजꣳ
ꣳ
ꣳ
ꣳ
ꣳ
ꣳ
ꣳ

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

द्विमासिक
BI-MONTHLY

वर्ष 10–11 अंक 6–1 विषय सूची सितम्बर से नवम्बर संयुक्तांक 2009

संपादकीय – आवरण ध्

हिन्दुत्व की आधारशिला क्या हैध् *ध्शैलेश मटियानी* 4

सवाल उठाते तथ्य 9

बहुराष्ट्रीय कंपनियां – विश्व व्यापार संगठन, एक पहेली – *दीपक शर्मा 'प्रदीप'* 10

विश्व व्यापार संगठन के भारत पर दुष्प्रभाव 10

हिन्दी ही कर सकती है विश्व में भारत का प्रतिनिधित्व – *राजीव मिश्र* 12

पक्षपातपूर्ण पंथनिरपेक्षता *–बलबीर पुंज* 13

सांस्कृतिक गौरव संस्थान का जुलाई में मेरठ में आयोजित कार्यकर्ता शिविर 14

डोगरा शासनकालीन आयुर्वेदिक साहित्य – *रणवीर प्रकाश* 19

भारत के प्रधानमंत्री सरदार मनमोहन सिंह जी के नाम खुला पत्र 20

पावन भारतीय संस्कृति – दिशा और दशा *–श्रीरामदासानुदास शरद् चन्द्र* 21

लोकमान्य ! हम शर्मिन्दा हैं ... स्वराज को हम भूल गए *–राकेश उपाध्याय* 24

पाठक विचार सरणि 26

पुस्तक समीक्षा 26

Islamic Vs. British Rule in India ***-Dr. Shridhar Pant*** 28

Assault on Hinduism by Rashtriya Sanskrit Sansthan 30

Crusade for Survival 31

Mount Kailash : A cultural Bharat 33

Editors response 34

**Diary of Events, Select Articles,
Book Reviews and Letters** 35

O W N E R : S A N S K R I T I K G A U R A V S A N S T H A N

Phone : 26195368, 26181315 E-mail <sgsdelhi05@gmail.com>

संस्थान की नई वेबसाइट देखें :– www.hindusthangaurav.com

गरीब देश और महँगे खेल

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

भारत अगले साल दिल्ली में होने वाले कॉमनवेल्थ गेम्स को अब तक का सबसे भव्य आयोजन बनाने के लिए दो अरब डॉलर (94 अरब रुपये) खर्च करेगा। भारतीय खेल मंत्रालय के सचिव सिंधुश्री खुल्लर ने बताया कि कॉमनवेल्थ गेम्स का यह बजट पूर्व निर्धारित बजट से काफी अधिक है।

(राष्ट्रीय सहारा, दिनांक 30 नवम्बर 2009)

94 अरब रुपये की विशाल धनराशि हिन्दुस्थान जैसे लगभग 50 करोड़ गरीब लोगों वाले देश के लिए क्या छोटी-मोटी धनराशि कही जा सकती है? क्या हिन्दुस्थान को इतनी बड़ी धनराशि इन खेलों के आयोजन पर खर्च करनी चाहिए जबकि अधिकांश देशवासियों को यह पता है और वे इस पीड़ा को हृदय में दबाए हुए हैं कि हिन्दुस्थान के खिलाड़ी बमुश्किल दो-चार स्वर्णपदक ला सकेंगे और देशवासियों को कुछ रजत और कुछ कांस्य पदकों से संताष करना होगा।

किन्तु इस बारे में कुछ प्रतिष्ठित और जाने-माने खिलाड़ियों के विचार भी नीचे दिए गए हैं जो सच्चाई को उघाड़ने में बेबाक हैं :-

क. "तैयारी के नाम पर बहुत कुछ ऐसा भी हो रहा है, जिसकी ज़रूरत नहीं है। मसलन खेल गांव को फाइव स्टार लुक देने का कोई मतलब नहीं।"

ख. कॉमनवेल्थ खेलों के दौरान उन्हें ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैण्ड के स्कूल-कॉलेजों में ठहराया गया। सुविधा के नाम पर कमरे और बिस्तर उपलब्ध थे।

ग. यह खेल देश को कर्जे में डुबोने के लिए किए जा रहे हैं, कुछ लोगों के स्वार्थ खेलों से जुड़े हैं, खाने-कमाने के लिए सारा तामझाम जोड़ा गया है, खेल को चलाने वाले भ्रष्ट लोग हावी हैं, तमाम खिलाड़ियों का खर्च देशवासियों की जेबों से निकाला जाएगा।

(तीन कॉमनवेल्थ खेलों में जाने-माने थ्रोअर प्रवीण कुमार जो महाभारत धारावाहिक में भीम की भूमिका में थे)

पंजाब केसरी 22.11.2009 से साभार

विचित्र बात यह है कि उक्त खेलों के उद्घाटन और समापन पर बहुत थोड़ी-सी राशि यानि मात्र 84 करोड़ रुपये खर्च होंगे।

(दैनिक जागरण, दिल्ली, दिनांक 25 नवम्बर 2009)

टिप्पणी : यदि निम्न आय वर्ग का लगभग 250 वर्ग फुट कुर्सी क्षेत्रफल का एक मकान किसी गरीब के लिए बनाया जाए तो उस पर लगभग 1,25,000 से 1,50,000 रुपये खर्च होंगे। उद्घाटन और समापन पर 84 करोड़ रुपये खर्च करने के स्थान पर यदि इसमें से 75 करोड़ रुपये बचाकर ये मकान बनाए जाएं तो 4950 मकान बन सकेंगे। किन्तु क्या इस प्रकार का कहीं कोई सोच है?

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

कॉमनवैल्थ खेल आयोजित कर हम सुपर पावर नहीं बनने वाले। हां कुछ अवसरवादियों के वारे-न्यारे जरूर हो जाएंगे। हो सकता है कि देश में कुछ और करोड़पति बन जाएं।

वर्तमान केन्द्रीय सरकार श्रीमती इन्दिरा गांधी की सरकार की ही उत्तराधिकारी है जिन्होंने गरीबी हटाओ का नारा दिया था। किन्तु आज ऐसा लगता है कि आज गरीबी हटाने के बजाए उसी कांग्रेस की सरकार 'गरीब हटाने' का अभियान चला रही है, जैसा कि खाद्य वस्तुओं के भावों से स्पष्ट है।

देश को जब अर्थशास्त्री के रूप में प्रधानमंत्री मिले थे तो आम आदमी को लगा था कि शायद सरदार जी के पास हमारी व्यथा को समझने की सिक्सथ सेंस होगी परन्तु आम आदमी की थाली से कम होता पोषण गरीबों को अपने वोट की ताकत को समय से पहले दुबारा अजमाने पर मजबूर करेगा। कांग्रेसी अब भी अर्थशास्त्री प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह जी की योजनाओं को सराहते नहीं थकते। अरे भाई! थोड़ा-सा तो संतोष रखिए । हमारे प्रधानमंत्री अर्थशास्त्री रहे हैं। मनुष्य हर चीज़ के बिना कुछ दिन तो जी ही सकता है मगर नहीं जी सकता तो हवा के बिना, वह तो हमारे अर्थशास्त्री प्रधानमंत्री जी की बदौलत हमें मुफ्त ही मिल रही है।

संपादक मंडल

हिन्दुत्व की आधारशिला क्या है ?

-शैलेश मटियानी

प्रख्यात कथाकार स्व. शैलेश मटियानी ने यह लेख जून 1994 में लिखा था। पन्द्रह वर्ष पूर्व प्रकट किए गए ये विचार आज की परिस्थिति में और अधिक प्रासंगिक हैं। आलेख की एक-एक पंक्ति मनन करने योग्य है-सं.

हिन्दुत्व की परिभाषा के सवाल में कहीं कोई ऐसा पेंच नहीं, जिसे रहस्य की श्रेणी में रखा जा सके। जिसकी उलझनें सुलझाना या गाँठें खोलना कठिन हो। हिन्दुत्व एक नितान्त पारदर्शी प्रत्यय है और इसका एकमात्र तथा सीधा सम्बन्ध भारतवर्ष नाम के देश की 'प्रजातिकता' से है।

और स्पष्ट कहा जाए तो 'हिन्दुत्व' का सीधा आशय 'स्वाधीन भारतवर्ष के निवासियों' से है। पहले मुसलमानों और फिर अंग्रेज़ों की गुलामी की लगभग 10-11 शताब्दियों को केन्द्र में रखा या एक किनारे कर दिया जाए, तो यह स्थिति और वास्तविकता भलीभाँति स्पष्ट हो जाएगी कि 'हिन्दू' सम्बोधन भारतवर्ष के उन मूल निवासियों के लिए प्रयुक्त होता रहा, जो मुसलमानों और अंग्रेज़ों की गुलामी से पूर्व स्वाधीन भारतवर्ष के निवासी थे।

दरअसल, हिन्दू या हिन्दुत्व के लिए सबसे गहरा और संघातक संकट मुसलमानों या अंग्रेज़ों से नहीं, बल्कि कांग्रेस के द्वारा उत्पन्न किया गया और आज भी कांग्रेस का यह हिन्दुत्व तथा हिन्दू-विरोधी अभियान ज्यों-का-त्यों ही नहीं, बल्कि और तीव्र रूप से बरकरार है। हिन्दू या हिन्दुत्व को सांप्रदायिकता का पर्याय या सूचक बनाने का काम मुस्लिम शासकों या अंग्रेज़ों के द्वारा नहीं, बल्कि कांग्रेस तथा कम्युनिस्ट पार्टियों के द्वारा किया गया और जब तक इस वास्तविकता को सामने नहीं रखा जाए तब तक हिन्दू और हिन्दुत्व ही नहीं, बल्कि भारतवर्ष और भारतीयता की पहचान भी घपले में ही रहेगी, **क्योंकि जैसा प्रारंभ में ही कहा-हिन्दुत्व स्वाधीन भारतवर्ष के निवासियों का प्रजातिक सम्बोधन रहा है और रहेगा।**

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

अर्द्ध-इस्लामी संविधान

पाकिस्तान बनवाकर, भारत के मुसलमानों ने भी यह स्पष्ट कर दिया कि भारतवर्ष नाम के किसी देश या देश का नाम भारतवर्ष होने से उनका कोई अस्तित्व या स्मृति का सम्बन्ध नहीं हो सकता। यह एक कटु सत्य है कि अगर कल 'शेष भारतवर्ष' का भी इस्लामीकरण संभावित दिखाई पड़े, तो इससे या इसमें भारतवर्ष के मुसलमानों को कोई वास्तविक आपत्ति नहीं होगी। इसके लिए उन्हें दोषी नहीं ठहराया जा सकता, क्योंकि इस्लाम का मूल तर्क ही 'मज़हब के हिसाब से मुल्क' के सिद्धान्त पर आधारित है और इसलिए मुगल शासकों के शताब्दियों के राज्य के बाद भी भारतवर्ष 'इस्लामी मुल्क' नहीं बना।

शरीयत से शासन, यह इस्लामी मुल्क की बुनियादी शर्त है और चूंकि मुगल शासन के दौर में भी भारतवर्ष में 'शरीयत' से राज्य-व्यवस्था का परिचालन नहीं हुआ, इसलिए भारतवर्ष का नाम भारतवर्ष या हिन्दुस्थान ही बना रहा और इसकी स्थिति तथा हैसियत मुस्लिम शासकों के द्वारा शासित गुलाम हिन्दू देश की बनी रही।

पाकिस्तान में अकबर यहां तक कि हुमायूँ और जहाँगीर-शाहजहाँ, को भी इस्लाम का इतिहास-पुरुष इसीलिए नहीं माना गया, क्योंकि पाकिस्तान के सिद्धांतकारों की यही धारणा रही कि इन्होंने भारतवर्ष को इस्लामी मुल्क बनाने की मुहिम नहीं चलाई। जबकि जिन्ना साहब ने भारतवर्ष के एक चौथाई हिस्से को तो पूरी तरह इस्लामी मुल्क बना लिया, साथ-साथ कांग्रेस को शेष भारतवर्ष के लिए 'अर्द्ध-इस्लामी संविधान' बनाने का अवसर सुलभ करा दिया। **हिन्दुत्व की पहचान या परिभाषा को लेकर सैद्धान्तिक या वैचारिक धुंध की सारी जड़ें कांग्रेस द्वारा अर्द्ध-इस्लामी तथा पूरी तरह से जातिवादी संविधान की व्यवस्था में ही अंतर्निहित हैं। भारतवर्ष के हिन्दुओं का देश होने की वास्तविकता को संवैधानिक रूप से समाप्त कर डालने का कार्य भारतवर्ष के इतिहास में पहली बार उस औपनिवेशिक चरित्र तथा बनावट वाली कांग्रेस के द्वारा किया गया, जो अपनी वास्तविकता को छिपाये रखने के लिए 'राष्ट्रीय कांग्रेस' का मुखौटा अभी भी इस्तेमाल करती रही है।** जो भारतवर्ष के स्वाधीनता-संग्राम को आधे में ही समेट लेने की शर्त पर ब्रिटिश हुकूमत की विरासतदार बनाई गई।

नाभिनाल का सम्बन्ध

भारतवर्ष की जिस भी पीढ़ी के सामने कांग्रेस की यह वास्तविकता उघड़कर आएगी कि भारतवर्ष के एक स्वाधीन तथा हिन्दुओं का देश होने के सवाल को संवैधानिक रूप से सदा-सदा के लिए समाप्त करने का काम कांग्रेस के द्वारा किया गया, सिर्फ वही पीढ़ी हिन्दू, हिन्दुत्व और भारतवर्ष के बीच के अंतरसम्बन्धों को भी जान सकेगी **क्योंकि भारतवर्ष और हिन्दुत्व, ये दोनों परस्पर नाभिनालबद्ध हैं। भारतवर्ष के बिना हिन्दुत्व का कोई अस्तित्व नहीं और भारतवर्ष का अस्तित्व भी तभी तक है, जब तक इसकी हिन्दू बहुलता बनी रह सके।** इस निर्णायक तथा भारतवर्ष के संदर्भ में राष्ट्रीय महत्त्व की वास्तविकता को इस बात से अधिक स्पष्ट रूप से समझा जा सकेगा कि भारतवर्ष नाम के देश या कि देश का नाम भारतवर्ष होने से हिन्दुओं का नाता, या वास्ता क्या है?

कल अगर कोई, उदाहरण के लिए मान लीजिए कि भाजपा प्रस्ताव करे कि भारतवर्ष का नाम बदलकर कुछ और रखा जाए, तो इस पर सबसे गहरी और गंभीर आपत्ति करने वाले हिन्दू ही होंगे, क्योंकि भारतवर्ष नाम के साथ ही हिन्दुओं की स्मृति और भारतीय संस्कृति के सारे तार गुँथे हुए हैं। इण्डिया और हिन्दुस्तान नाम भारतवर्ष की छाया में ही चलाए जा सकते हैं – 'भारतवर्ष' नाम हटाकर नहीं। भारतवर्ष और हिन्दुत्व के बीच के इस नाभिनाल सम्बन्ध को समझे बिना हिन्दुत्व की पहचान का सवाल पेचीदा बना रहेगा। जबकि, जैसा पहले ही कहा गया कि **हिन्दुत्व स्वाधीन भारत के निवासियों का परिचायक प्रत्यय है।**

अगर कांग्रेस ने गांधीजी के तिरोधान का कूटनीतिक लाभ उठाते हुए 'भारतीय संविधान' को अर्द्ध-इस्लामी नहीं बनाया होता, तो पाकिस्तान के बाद भारत में बाकी रहे मुसलमानों को यह निर्णय लेना ही पड़ता कि वे अपने नाभिनाल सम्बन्ध को इस्लामी मुल्कों या इस्लामी निजाम के साथ जोड़े रखने या भारतवर्ष के साथ घुलने में से, एक ही रास्ता चुन सकते हैं। भारतवर्ष को स्वयं का देश मानकर यहाँ रहने वाले मुसलमानों को तब हिन्दू समाज से समरस होने का रास्ता चुनना

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

ही पड़ता, क्योंकि तब 'संविधान' में इस्लामी नागरिकता की पृथक व्यवस्था नहीं होने से, रीति-रिवाज और उपासना-पद्धति की भिन्नता के बावजूद, सभी एक समान (अर्थात् भारतीय) कानूनों के वृत्त में होते।

मुसलमान जवाब दें

'हिन्दुत्व' का भारतवर्ष से क्या नाता या वास्ता है, यह स्वयं हिन्दुओं की समझ में तभी आ सकेगा, जब भारतवर्ष अभी और विभाजित होगा। जातिवाद की राजनीति हिन्दू समाज को और भी क्षत-विक्षत तथा जर्जर कर देगी और खाड़ी तथा अन्य इस्लामी मुल्कों का यह सपना साकार होता सामने दिखाई पड़ेगा कि पास्तिान के बाद बाकी बचे रहे भारतवर्ष को भी अगर इस्लामी परचम के तले ले आया गया, तो फिर खीस्त (ईसाई) गोलार्द्ध का सामना कठिन नहीं होगा। इस प्रश्न का उत्तर भारत के मुसलमानों की ओर से समय रहते जान लिया जाना चाहिए कि अगर कल हिन्दू समाज के और भी विघटित होने पर भारतवर्ष के पूरी तरह इस्लाम मुल्क बनने की स्थितियाँ आकार लेने लगे, तो क्या भारत के मुसलमान इसका प्रतिरोध करेंगे और इसे इस्लामी मुल्क नहीं बनने देंगे ?

सवाल पेचीदा 'हिन्दुत्व की पहचान' या परिभाषा का नहीं बल्कि भारतवर्ष नाम के देश या कि देश का नाम भारतवर्ष होने के साथ भारत के मुसलमानों के अंतरसम्बन्धों का है। **अगर भारत के मुसलमानों का भारतवर्ष के साथ नाभिनाल का सम्बन्ध संभव हो गया, तो भारतवर्ष की सांस्कृतिक विरासत के सवाल भी हल हो चुके होते।** तब 'मुस्लिम वोट बैंक' हथियाने के लिए कांग्रेस को वह 'उपासना विधेयक' पारित नहीं करना पड़ता, जो भारतवर्ष की सांस्कृतिक विरासत के सवालों को सदैव के लिए समाप्त कर देने के षड्यंत्र की उपज है। तब अयोध्या, काशी और मथुरा के मामले भी आपसी सौहार्द से हल हो चुके होते, क्योंकि भारतवर्ष से नालबद्ध होने को भीतर से प्रतिश्रुत मुसलमानों को यह मान लेने में तब कोई कठिनाई नहीं होती कि किसी भी देश की स्वाधीनता के मामले में उसकी सांस्कृतिक विरासत के सवाल पहले होते हैं, कोरी राजनीतिक स्वाधीनता के बाद में। जो जातियाँ देश की सांस्कृति विरासतों से बेसरोकार हों, वे कभी भी स्वाधीन राष्ट्र का सपना नहीं देख सकतीं, इसका सब से दुखद और शर्मनाक उदाहरण स्वयं हिन्दू रह चुके और अपने इस जाड्य तथा आत्महीनता से अभी भी उबर नहीं सके हैं।

भाजपा की चूक है कि यह राष्ट्र और राष्ट्रीयता की राजनीति की हवाई नारेबाजी तो जाने कब से करती चली आ रही है, लेकिन इसने कांग्रेस की इस वास्तविकता को सामने रखने की प्रभावी पहल कभी नहीं की कि कैसे कांग्रेस के मौजूदा चरित्र या ढाँचे के बरकरार रहते भारतवर्ष का एक स्वाधीन राष्ट्र हो सकना सरासर असंभव है।.... भूलना नहीं चाहिए कि यह महात्मा गांधी वाली कांग्रेस कतई नहीं, जो भारतवर्ष के स्वाधीनता संग्राम की अगुवाई कर रही थी। यह ब्रिटिश साम्राज्यवाद के साथ सत्ता-हस्तांतरण का सौदा पटाने वाली कांग्रेस है, जिसके कारण गांधी को पूरी तरह टूट जाना पड़ा। गांधी और पटेल के न रह जाने पर, इस कांग्रेस ने भारतवर्ष की एक स्वाधीन राष्ट्र बनने की संभावनाओं को सिरे से समाप्त कर देने की औपनिवेशिक राजनीति का खुला खेल फर्रुखाबादी शुरू कर दिया और अर्द्ध-इस्लामी तथा जातिवादी संविधान के वे सारे चोर-दरवाजे खोल दिए, जो हिन्दू समाज और हिन्दुत्व की जड़ों को ध्वस्त करने के इरादे से ही 'संविधान' के अंतर्भूत कर रखे गए थे। अभी राजनैतिक दलों को भी पता नहीं कि जातिवाद के घमासान में छिन्न-भिन्न हिन्दू समाज की तब क्या नियति होगी, जब बाहरी हमलों के कारण भारतीय सेनाएँ भीतर की व्यवस्था संभालने की स्थिति में नहीं होंगी। **जो भी हिन्दू समाज को तोड़ने की राजनीति करेंगे, 'मुस्लिम वोट बैंक' उन्हीं राजनीतिक पार्टियों का साथ देगा, यह उत्तर प्रदेश में साबित हो चुका है। स्पष्ट है कि कट्टरपंथी मुस्लिम नेता कांग्रेस पर दबाव बढ़ा रहे हैं कि कांग्रेस अपनी नीतियों को और अधिक हिन्दू तथा हिन्दुत्व विरोधी बनाए।**

जातिवादी संघर्षों से हर हाल में सिर्फ हिन्दू समाज बिखरेगा और विघटित होगा तथा इससे शेष भारतवर्ष के भी इस्लामीकरण का संकट खुलकर सामने आ जाएगा, इस वास्तविकता से अवगत होते ही हिन्दू मानस में जरूर उथल-पुथल होगी। तब हिन्दुत्व को राजनीति के केन्द्रीय तत्त्व या ताबीज़ के रूप में देखना और देशवासियों को यह समझना होग कि कैसे हिन्दुत्व ही भारतवर्ष का एकमात्र रास्ता हो सकता है। **यह समेकित और संकल्पित हिन्दू समाज ही भारतवर्ष को**

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

स्वाधीन राष्ट्र का रूप दे सकता है। भारत के मुसलमान भी भारतवर्ष से समरस तभी होंगे, जब देखेंगे कि अब हिन्दू समाज में टूट-फूट संभव नहीं।

'हिन्दुत्व' भारतवर्ष को एक देश के रूप में बचाए रख सकने का एकमात्र रास्ता है। पाकिस्तान और बंगलादेश मुस्लिम राष्ट्र बन चुके हैं। पृथक इस्लामी नागरिकता की संवैधानिक व्यवस्था के चलते कश्मीर घाटी भी जा चुकी और पाकिस्तान के संयुक्त राष्ट्र संघ में प्रस्ताव वापस लेने से कश्मीर की भारतवर्ष में वापसी नहीं हुई है।

हिन्दू-दमन एकमात्र लक्ष्य

हिन्दू समाज को इस आत्महीनता से उबारना आज की पहली राष्ट्रीय जरूरत है, कि शताब्दियों की गुलामी के बाद अब स्वयं की या भारतवर्ष की स्वाधीनता के सवालों को उठाना ठीक नहीं है। जाग्रत जातियाँ हज़ारों-हज़ार वर्षों की गुलामी को भी अंतिम प्रमाण कदापि नहीं मानेंगी। **यह सवाल सिवाय चालबाज़ी के और कुछ नहीं कि भारत के मुसलमानों का क्या होगा ?** भारतवर्ष को स्वयं का देश मानने और इससे नाभिनाल का सम्बन्ध रखने वाले मुसलमानों की हैसियत भारतवर्ष में हिन्दुओं से कमतर कतई नहीं होगी। सवाल भारतवर्ष से समरस और प्रतिश्रुत होने का है, मुगल या ब्रिटिश इंडिया से नहीं। **'मुस्लिम इंडिया' के लिए भारतवर्ष में कोई स्थान न हो सकता है और न ही होना चाहिए। भारतवर्ष का सवाल भारतवर्ष की जातीय स्मृति तथा इसकी सांस्कृतिक विरासतों का सवाल भी है, क्योंकि 15 अगस्त 1947 पाकिस्तान और ब्रिटिश तथा मुस्लिम इण्डिया की पैदाइश की तारीख तो हो सकता है, भारतवर्ष की उत्पत्ति की कालरेखा नहीं।**

हमारे ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध स्वाधीनता संग्राम का लक्ष्य 15 अगस्त 1947 के बाद के भारतवर्ष को प्राप्त करना नहीं था। जो आन्दोलन पूरे परिप्रेक्ष्य, राष्ट्रीय स्वाधीनता की एक समग्र अवधारणा सम्मत नहीं हो, उसे राष्ट्रीय आन्दोलन नहीं माना जा सकता। भारत का स्वाधीनता संग्राम मुगल हुकूमत के दौर को भारतवर्ष की राष्ट्रीय स्वाधीनता का हिस्सा मानकर नहीं चलाया गया था। इसमें भारतवर्ष में इस्लामी नागरिकता के बंदोबस्त की शर्त कहीं शामिल नहीं थी। यह भारतवर्ष को एक स्वाधीन राष्ट्र बनाने का अभियान था और इसमें सिर्फ भारतीय नागरिकता की बात केन्द्र में रखी गई थी।

भारतवर्ष इस्लामी मुल्क नहीं और किसी गैर-इस्लामी देश में इस्लामी नागरिकता की पृथक व्यवस्था का उदाहरण सिर्फ कांग्रेस के द्वारा प्रस्तुत किया गया है और इसी अर्द्ध-इस्लामिकता का दूसरा नाम धर्मनिरपेक्षता है। अर्थात् हिन्दू, हिन्दुत्व का दमन तथा राष्ट्रनिरपेक्षता ही छद्म- धर्मनिरपेक्षता का एकमात्र लक्ष्य है।

इस्लामीकरण का खतरा

भारत के मुसलमानों को इस्लमी नागरिकता की शर्तें वापस लेनी होंगी, क्योंकि अगर ऐसा नहीं हुआ, तो भारतवर्ष के अभी और विभाजनों के खतरे बढ़ते ही जाएंगे। **भारतवर्ष का जो नक्शा कांग्रेस के हाथों में हैं, वह सरासर अर्द्ध-इस्लामी है। इस वास्तविकता को अगर समय रहते नहीं समझा गया तो, भारतवर्ष के बाकी बच रहे भूगोल-खगोल में से फिर इस्लामी मुल्क पैदा होंगे और अंततः सारा भारतवर्ष इस्लामीकरण के कगार पर खड़ा मिलेगा।**

जब अन्य किसी भी देश में (जो इस्लामी मुल्क न होकर स्वाधीन राष्ट्र हो) अलग से इस्लामी नागरिकता की व्यवस्था कहीं नहीं की गई है, तो भारतवर्ष के मुसलमानों के लिए ऐसा अपरिहार्य कैसे और क्यों मान लिया जाए? **अगर**

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

इस्लामी कानून मुसलमान हो सकने की बुनियादी शर्त है तो क्या अन्य सारे गैर-इस्लामी देशों में रहने वाले मुसलमान, मुसलमान नहीं रह गए?

हिन्दुत्व की पहचान और परिभाषा की कुंजी यहाँ है। यहाँ, अर्थात भारतवर्ष के एक स्वाधीन राष्ट्र होने की प्रतिभूति और ऐसी चिन्ता, चेतना तथा दावेदारी में जो भारत की एक स्वाधीन राष्ट्र की हैसियत स्वीकार करें, उनको भारत-विरोधी नहीं माना जा सकता। जो भारतवर्ष की राष्ट्रीय स्वाधीनता के विरुद्ध हों और इस सवाल को पूरे राष्ट्रीय तथा ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में उठाए जाने के रास्ते बंद कर देना चाहते हों, वे फिर चाहे जाति से हिन्दू ही क्यों न हों, उन्हें राष्ट्र विरोधी करार देना ज़रूरी होगा, क्योंकि ऐसा किए बिना भारतवर्ष को एक स्वाधीन राष्ट्र का रूप दिया ही नहीं जा सकता।

सांस्कृतिक विरासत

हिन्दुत्व की आधारशिला स्वाधीन भारतवर्ष की मूल नागरिकता है। हिन्दू भारतवर्ष के प्रजातिक तत्त्व हैं। हिन्दू की पहचान धर्ममूलक न होकर, प्रजातिक है। यह हिन्दू प्रजाति भारतवर्ष को स्वयं का देश और राष्ट्र मानने के प्रत्यय और संकल्प से ही हिन्दुत्व का दावा कर सकती हैं। हिन्दुत्व भारतवर्ष को एक स्वाधीन तथा सांस्कृतिक-आध्यात्मिक राष्ट्र मानने की प्रतिश्रुति का परिचायक हैं और जो हिन्दू इससे इनकार करते हों, उनको हिन्दुत्व का दावेदार सिर्फ मानसिक-वैचारिक गुलामों की श्रेणी में ही माना जा सकता है।

कांग्रेस धोखे में है कि अगर उसने मान लिया हो कि छद्म धर्मनिरपेक्षतावाद के द्वारा भारतवर्ष की राष्ट्रीय स्वाधीनता के सवालों को सदैव के लिए समाप्त कर दिया जा चुका है। आने वाला इतिहास छद्‌म-धर्मनिरपेक्षतावाद के पटाक्षेप का होगा। हिन्दुत्व की राजनीति इसके बिना संभव ही नहीं।

भारत के मुसलमानों को, आज नहीं तो आने वाले इतिहास में, स्वीकार करना ही होगा कि राष्ट्र की सांस्कृतिक विरासतों के पुनरुद्धार का अर्थ इस्लाम या मुसलमानों का तिरस्कार अथवा बहिष्कार नहीं माना जा सकता। अगर पाकिस्तान और बंगलादेश में मस्जिदों को ढहाकर मंदिर बनाए गए होते, तो ये उन मस्जिदों का पुनरुद्धार करते या नहीं? इस सवाल का जवाब जरूरी है, क्योंकि इसी में मथुरा, काशी और अयोध्या के उत्तर भी मौजूद होंगे।

हिन्दुत्व की आधारशिला, कोरा वेदपाठ नहीं, पृथ्वीसूक्त (भूमि सूक्त) का परिपालन है। पृथ्वी को जगत-माता के रूप में देखने के प्रत्यय में से ही देश को भारतवर्ष के रूप में देखे जाने की प्रतिश्रुति उत्पन्न हुई और यह या ऐसी स्मृति ही हिन्दुत्व की आधारशिला है और आकाश को पिता के रूप में देखने की स्मृति और परंपरा का साक्ष्य। जिन्हें इससे इनकार हो, जो भारतवर्ष की स्मृति और संस्कृति के सवालों को निषिद्ध करार देते हों और मानते हों कि भारतवर्ष की राष्ट्रीय स्वाधीनता के सवालों को सिर्फ ब्रिटिश विरासत के अर्द्ध-इस्लामी दायरे में ही देखा जाए, उनका हिन्दुत्व अभिशाप के सिवाए कुछ नहीं। भारत के मुसलमान की 'वंदेमातरम्' पर आपत्ति को पं. नेहरु की पूर्ण सहमति की जड़ें यहीं हैं।

जैसे कोई व्यक्ति अपनी समस्त आयु तथा उपार्जनों समेत ही पूर्ण हो सकता है, ऐसे ही राष्ट्र भी अपने पूरे इतिहास तथा सांस्कृतिक सामाजिक उपार्जनों के समेत ही संपूर्ण या संप्रभुता संपन्न हो सकते हैं। भारतवर्ष को इसके पूरे सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक परिप्रेक्ष्य में देखने की प्रतिश्रुति का ही दूसरा नाम 'हिन्दुत्व' है। इस आधारशिला को गँवाना ठीक नहीं है।

टिप्पणी : इस लेख का गहराई से अध्ययन करके तदनुसार तत्काल कार्य आरंभ करना अत्यंत आवश्यक है।

'पाथेय कण' पाक्षिक (बी-19, न्यू कॉलोनी, जयपुर) 16 मार्च तथा 1 अप्रैल 2009 के अंक से साभार

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

सवाल उठाते तथ्य

देश में सादगी और फिजूलखर्ची पर बहस की जरूरत और दिशा को लेकर भ्रम की स्थिति इसलिए भी है, क्योंकि हम इससे जुड़े तथ्यों से आँखें चुराते हैं। दरअसल, भारत में दो देश एक साथ बसते हैं, एक भारत और दूसरा इंडिया। भारत गरीबों, मज़दूरों, किसानों और दलितों की दुनिया है और इंडिया आईटीएज के विकास और संपन्नता का। एक का आजादी के छह दशक बाद भी अंधेरे से पीछा नहीं छूट रहा है और दूसरे में चकाचौंध इतनी ज्यादा है कि हम हतप्रभ रह जाते हैं। एक में करोड़ों लोग बसते हैं जबकि दूसरे में महज कुछ हजार या लाख। ऐसे में इन दोनों स्थितियों के बीच संतुलन की कोई रेखा खींच पाना खासा चुनौतीपूर्ण है। सादगी का मसला प्रदर्शन से ज्यादा आचरण से जुड़ा हुआ है और यह कुछ लोगों के बजाय जब तक सब लोगों से नहीं जुड़ेगा, इसका प्रभाव निर्णायक नहीं होगा। सादगी फिजूलखर्ची के खिलाफ तो है ही, यह उस संवदेनशीलता से भी जुड़ा है, जो अपने आसपास की विपन्न और अविकसित हालात से हमें जवाबदेह तरीके से जोड़ता है। जाहिर है कि जब तक इस तरह की संवदेशील जवाबदेही की स्थितियां ऊपर से नीचे तक नहीं बनेंगी, हम पूरे देश में विकास और खुशहाली की भेदभाव-रहित एक जैसी स्थिति बहाल नहीं कर सकते हैं :-

1. भारत में प्रति व्यक्ति औसत आय 38,084 रुपये है।
2. 70 करोड़ आबादी को रोजाना औसत 20 रुपये में अपना जीवन बसर करना पड़ता है।
3. 39 करोड़ लोग अब भी गरीबी रेखा के नीचे हैं।
4. 60 करोड़ लोगों को पीने का साफ पानी नहीं मिल पाता।
5. 35 करोड़ की आबादी प्राथमिक शिक्षा से वंचित है।
6. 62 करोड़ लोगों के पास अपना घर नहीं है।
7. 20 करोड़ लोग शहरों में फुटपाथ पर सोते हैं।
8. 15 करोड़ लोगों की जिन्दगी मुआवज़ों पर टिकी है।
9. **राजनीति से जुड़े नेताओं की औसत आय नौ लाख रुपये सालाना है।**
10. 30 करोड़ लोगों की आय 1.75 लाख रुपये सालाना है।
11. देश में अरबपतियों की गिनती 24 है।
12. 15 करोड़ लोग करोड़पति हैं।
13. आठ करोड़ लोग हर महीने स्वास्थ्य सेवा पर औसतन 12 लाख रुपये खर्च करते हैं।
14. 15 करोड़ लोग सिर्फ बोतलबंद पानी पर 50 करोड़ रुपये खर्च करते हैं।
15. 12 करोड़ लोग शिक्षा पर सालाना औसतन 12 लाख रुपये खर्च करते हैं।
16. 7 करोड़ लोगों के पास एक से ज्यादा घर हैं।
17. 1.25 करोड़ लोग होटल में रहना पसंद करते हैं।

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

प्रेमप्रकाश
'राष्ट्रीय सहारा' दिल्ली, दि. 22 सितम्बर 2009 से साभार

बहुराष्ट्रीय कम्पनियां - विश्व व्यापार संगठन, एक पहेली

-दीपक शर्मा 'प्रदीप'

आपको विदित ही है कि 30 नवम्बर, 1-2 दिसम्बर 2009 को विश्व व्यापार संगठन की मंत्री स्तरीय वार्ता जिनेवा में होने जा रही है। इस बैठक के संबंध में वाणिज्य मंत्री, श्री आनंद शर्मा हाल ही में अमेरिका गए थे। वहाँ से उनका यह बयान आया कि "भारत दोहा दौर की वार्ता चक्र को सफल बनाने के लिए अड़िग है।" इसी संबंध में विश्व व्यापार संगठन के डायरेक्टर जनरल श्री पास्कल लेमी एवं विकसित देशों के वाणिज्य मंत्री दिनांक 3-4 सितम्बर 2009 को वार्ता के लिए नई दिल्ली आए।

दोहा चक्र की वार्ता 2001 में जब हुई थी तब राष्ट्र ऋषि दत्तोपंत ठेंगड़ी जी के नेतृत्व में देश भर में छेड़े गए जन आन्दोलन के फलस्वरूप पहली बार विश्व व्यापार संगठन के जिन्न को श्री मुरासोली मारन ने बोतल में बंद किया था। प्रत्येक दो वर्ष में होने वाली इस बैठक के पश्चात् 2003 में श्री अरुण जेटली, 2005, 2007 में श्री कमलनाथ गए थे। किसी ने भी दोहा चक्र की वार्ता को आगे नहीं बढ़ाया। अब श्री आनंद शर्मा को वाणिज्य मंत्री बनाना एवं अचानक इस जिन्न को बोतल से बाहर निकालने का प्रयास किया जाना, सरकार के रवैये पर संदेह उत्पन्न करता है। संभवत: विकसित देश अपनी आर्थिक मंदी को विकसित देशों की कीमत पर दूर करने के प्रयास के रूप में इस वार्ता को 8 वर्ष बाद पुन: सफल बनाना चाहते हैं।

इस वार्ता में सिंगापुर मुद्दों (रुपये की पूर्ण परिवर्तनीयता जिसके कारण अनेक क्षेत्र जैसे बैंकिंग, इंश्योरेंस, टेलीकॉम, रिटेल ट्रेड आदि शत प्रतिशत विदेशी निवेश के लिए खुल जाएंगे), कृषि सब्सिडी, दवाइयों एवं बीजों पर पेटेंट, आयात शुल्क, नामा इत्यादि अनेक मुद्दे अत्यंत गंभीर है। दिनांक 13 अगस्त 2009 को सरकार ने आसियान देशों के साथ मुक्त व्यापार समझौता भी कर लिया है। **इसके तहत लगभग 4 हजार वस्तुओं को वर्ष 2016 तक आयात शुल्क से पूरी तरह मुक्त मुक्त कर दिया जाएगा। संक्षेप में ऐसा प्रतीत होता है कि यह सरकार अमेरिकी एजेंडे को पूरी तरह लागू करने में लगी हुई है।**

विश्व व्यापार संगठन एक ऐसा संगठन है जो कि देश के करोड़ों वृद्ध, नौजवानों, महिलाओं एवं बच्चों की दुर्दशा के लिए बड़ी हद तक जिम्मेदार है। ऐसे संगठन का मुखिया भारत में आए तो इसके विरोध के स्वर पूरे भारत में अवश्य सुनाई देने चाहिए।

स्वदेशी जागरण मंच

विश्व व्यापार संगठन के भारत पर दुष्प्रभाव

श्री पास्कल लेमी दिनांक 3-4 सितम्बर 2009 को नई दिल्ली में भारत के साथ व्यापारिक वार्ता करने आए। भारत सरकार यदि विश्व व्यापार संगठन के सामने पूरी तरह समर्पण करे तो देश के करोड़ों किसान, व्यापारी एवं उद्योगपति संकट में पड़ जाएंगे।

कृषि की सब्सिडी एवं आयात शुल्क के मुद्दे के कारण देश के करोड़ों किसाने खतरे में पड़ जाएंगे। हमारे यहाँ 64 करोड़ किसान हैं, जिन्हें नगण्य सब्सिडी दी जाती है। तो ऐसे में कृषि वस्तुओं का मुक्त आयात के सामने हमारे किसान कैसे खड़े हो पाएंगे। देश में 2 लाख किसान अब तक आत्महत्या कर चुके हैं।

WTO के दबाव में भारत को 1970 का अपना पेटेंट कानून बदलना पड़ा। पहले किसी दवाई को बनाने का 'फार्मूला' पेटेंट किया जाता था। इस कारण एक ही दवाई को अनेक लोग विभिन्न फार्मूलों से बना लेते थे। जिसके

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

परिणामस्वरूप दवाइयां विश्व में सबसे सस्ती भारत में ही थीं। अब Product Patent कानून लागू हो गया है। अर्थात् यदि किसी ने एड्स की दवाई बना ली तो दुनिया में कोई भी दूसरा व्यक्ति इस दवाई को नहीं बना सकता। इस प्रकार एड्स की दवा कंपनी को मनमानी लूट का अधिकार मिल जाएगा।

'बौद्धिक अधिकार संपदा' नामृ का चक्रव्यूह विकसित देशों ने रचा हुआ है। इसके माध्यम से दुनिया का शोषण करने का नया मार्ग खुला है। इसमें कॉपीराइट, पेटेंट, ट्रेड मार्क, इंडस्ट्रीयल डिजाईन, इंटीग्रेटिड सर्किट्स, जियोग्राफीकल इंडिकेशन, अनडिसक्लोज्ड इन्फोरमेशन आदि इन 7 नामों से दुनिया का शोषण किया जा रहा है। इसको अगर समझना हो तो अकेले कॉपीराइटस से अमेरिका दुनिया भर से 1.43 ट्रिलियन (14 खरब 30 अरब) डॉलर कमा लेता है। जबकि उसका जीडीपी 13 ट्रिलियन डॉलर का है। जिन चीज़ों पर अमेरिका कॉपीराइट्स से कमाता है उन अधिकतर चीज़ों को बनाते भी प्रतिभावान भारतीय ही हैं।

अमेरिका के कुल राजस्व संग्रह का 66 प्रतिशत इसी प्रकार से आता है कि जो अमेरिकी कंपनियां दुनिया के अन्य देशों में जाकर कमाती हैं वह कमाई जब वे अमेरिका ले जाती हैं तो अमेरिका सरकार उस पर 35 प्रतिशत की दर से कॉरपोरेट इन्कम टेक्स लगाती है। जैसे पेप्सी कोक आदि आदि।

शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रवेश का मार्ग खोलने की तैयारी है। इससे विदेशी स्कूल एवं कॉलेज भारत में अपने संस्थानों को खोलेंगे। जिस कारण अरबों रुपये की फीस विदेशों में चली जाएगी। साथ ही साथ उन स्कूल/कॉलेजों के पाठ्यक्रमों पर भारत सरकार का कोई नियंत्रण नहीं होगा। इस वजह से सांस्कृतिक मूल्यों में तेजी से गिरावट की बड़ी आशंका है।

विदेशी ऑडिट कंपनियों (KPMG, Price Waterhouse Cooper, Earnst & Young, Dociette etc.) के लिए भारत में मुक्त प्रवेश की तैयारी हो रही है। इससे हमारे चार्टर्ड एकाउंटेंट्स को तो आघात पहुँचेगा ही साथ ही देश के वित्तीय तंत्र में सत्यम् जैसे घोटालों की संख्या भी बढ़ेगी।

अभी प्रधानमंत्री जी-8 सम्मेलन में इटली गए थे। वहाँ वैज्ञानिकों आदि से सलाह किए बिना 2 डिग्री तापमान में कमी लाने के लिए जलवायु समझौते पर उन्होंने भारत की सहमति व्यक्त की। यह समझौता अक्टूबर में होगा। इसके अनुसार प्रत्येक अमेरिकी नागरिक को 20 टन ग्रीन हाउस गैसों का प्रदूषण करने का अधिकार होगा। जबकि प्रत्येक भारतीय नागरिक को 3 टन का अधिकार होगा। भारत द्वारा अपना उत्पाद बढ़ाने के कारण यदि प्रदूषण का स्तर 3 टन प्रति व्यक्ति से बढ़ जाता है तो अमेरिकी सरकार भारत के माल पर दण्डात्मक आयात शुल्क लगा देगी। जिस कारण भारतीय माल महंगा हो जाएगा एवं प्रतिस्पर्धा से बाहर हो जाएगा।

विश्व मुद्रा कोष (IMF) में आर्थिक मंदी को दूर करने के लिए 250 अरब डॉलर का catalyst package के रूप में एक विशेष कोष (Special Drawing Rights) SDR की योजना बन रही है। आईएमएफ (अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष) पर अमेरिका का पूरा नियंत्रण है। इसमें भारत चीन सहित देशों को धन देने के लिए मजबूर किया जा सकता है। विकसित देशों के कारण यह आर्थिक मंदी आई है। यह सर्वज्ञात है कि इस विषय में हमें सावधान रहना है कि हम इसमें कितनी जिम्मेदारी लें। डॉलर की मजबूती को लेकर शंका बनी हुई है। इस कारण चीन अपने 2000 करोड़ डॉलर के विशाल विदेशी मुद्रा भंडार को किसी अन्य मुद्रा में बदलने के लिए खेल, खेल सकता है।

स्वदेशी जागरण मंच की सरकार से यह मांग है कि विश्व व्यापार संगठन का सदस्य बनते समय देश को जो लाभ बताए गए थे, उनमें से अभी तक क्या लाभ-हानि हुई, इसका श्वेत पत्र सरकार विश्व व्यापार संगठन की नवम्बर 2009 में होने वाली बैठक में जिनेवा जाने से पहले देश के सामने प्रस्तुत करे।

सौजन्य- राजकुमार भाटिया, स्वदेशी जागरण मंच, आजादपुर मण्डी, दिल्ली

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

हिन्दी ही कर सकती है विश्व में भारत का प्रतिनिधित्व : राजीव मिश्र

भाषा माता के समान होती है। माता के प्रति जो प्रेम होना चाहिए, वह भारतीयों का अपनी भाषा के प्रति नहीं है। इसके उलट विमाता के प्रति भारतीय अपना प्रेम प्रकट करते नहीं अघाते। इतना ही नहीं वरन् इस विमाता प्रेम के चलते अपनी सरल हृदया माता को प्रताड़ित करने से भी नही चूकते। भाषा ही किसी राष्ट्र की वाणी होती है। अपनी वाणी न होने की वजह से भारत आज भी गूंगा है। भारत एक बहुभाषी देश है। परन्तु यहां के अधिकांश लोग हिन्दी बोलते और समझते हैं। इस नाते हिन्दी संपर्क भाषा के रूप में अपना सहज ही स्थान बना सकी है। हिन्दी के इस व्यापीकरण में भारत के स्वतंत्रता-आन्दोलन का विशेष योगदान रहा है। स्वतंत्रता आन्दोलन की भाषा हिन्दी होने के कारण इसका प्रचार-प्रसार हिन्दीतर भाषी क्षेत्रों में भी हुआ। देश की अधिसंख्यक जनता द्वारा हिन्दी के बोले एवं समझे जाने के कारण संविधान में इसे राष्ट्रभाषा अर्थात जनसंपर्क की भाषा एवं राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है। भाषा का रूप परिवर्तनशील है। भिन्न-भिन्न प्रदेशों, समाजों के संपर्क में आने से प्रभावित होकर भाषा का रूप बदलता रहता है। इसे किसी के आश्रय की आवश्यकता नहीं पड़ती। भाषा भाव को व्यक्त करने का प्रमुख साधन है। वैसे तो संगीत, नृत्य, वाद्य एवं मूर्ति आदि कलाओं के माध्यम से भी भाव प्रकट किए जा सकते हैं, किन्तु इन साधनों से विचारों का आदान-प्रदान नहीं हो पाता। विचारों के आदान-प्रदान की शक्ति केवल भाषा में ही है। इसलिए यह प्रवाहमान बनती है।

महात्मा गांधी ने अपने सन् 1917 के बिहार प्रवास में मोतिहारी में सत्याग्रह के प्रसंग में एक पत्र जारी किया था, उन्होंने अन्य बातों के अतिरिक्त यह भी कहा था कि - "जो स्थान इस समय अनुचित ढंग से अंग्रेज़ी भोग रही है वह स्थान हिन्दी को मिलना चाहिए - उसके उचित स्थान मिलने में जितनी देर हो रही है उतना ही देश का नुकसान हो रहा है।" गांधी द्वारा कही उक्त बातें आज के परिप्रेक्ष्य में देखें तो कितनी प्रासंगिक पाते हैं। कोई भी देश मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाए बिना सुशिक्षित नहीं हो सकता। भारत को छोड़ कर संसार का कोई ऐसा अभागा देश नहीं है, जहाँ विदेशी भाषा द्वारा शिक्षा दी जाती है। भारत में सब विषयों की उच्च शिक्षा प्रायः अंग्रेजी में ही दी जाती है, जिससे विद्यार्थियों का आधे से अधिक समय भाषा की 'तोता-रटन्त' में नष्ट हो जाता है। समस्त देश के लिए शिक्षा का माध्यम बनने की पात्रता यदि किसी भाषा में है तो राष्ट्रभाषा हिन्दी में ही है। हिन्दी के साथ ही हमें अपनी अमर भाषा देववाणी संस्कृत को भी भुलाना नहीं चाहिए। उसकी शिक्षा के बिना भारतीयों की गति नहीं। अंग्रेज़ी भाषा को जो स्थान इस समय प्राप्त है, वह संस्कृत को मिलना चाहिए। परतंत्र भारत में राष्ट्रभाषा हिन्दी एक राष्ट्रीय नारा था और तब हिन्दीतर भाषी प्रदेशों में यह सबसे अधिक बुलन्द हुआ। हिन्दी प्रचारकों ने जिस त्याग, तपस्या और तन्मयता से हिन्दीतर प्रदेशों में हिन्दी का प्रचार और प्रसार किया, वह आज तक एक आदर्श मात्र प्रतीत होता है।

राष्ट्रभाषा और मातृभाषा में भेद है। मातृभाषा राष्ट्रभाषा हो सकती है। पर यह जरूरी नहीं कि राष्ट्रभाषा मातृभाषा ही हो। हिन्दी के राष्ट्रभाषा बनने का यह अर्थ नहीं है कि अन्य भाषा-भाषी, अपनी-अपनी मातृभाषाओं को त्याग करके हिन्दी को अपनाएं। राष्ट्रभाषा का अर्थ यह है कि सारे राष्ट्र की एक भाषा हो, जिसके द्वारा भिन्न-भिन्न प्रान्तों के लोग परस्पर संबंध रखें, विचारों का आदान-प्रदान करें तथा सर्व-प्रान्तीय कार्य इसी के द्वारा करें। ऐसा करना आवश्यक इसलिए है क्योंकि संपूर्ण राष्ट्र की एक सामान्य भाषा हुए बिना राष्ट्र फल-फूल नहीं पाता। इसे देश का दुर्भाग्य नहीं तो क्या कहें कि आज भारत के लोगों पर अंग्रेज़ी का भूत सवार हो गया है। एक होड़-सी मची है इस गुलामी की भाषा को गले से लगाने की। स्वाभिमान शून्य हो गए हैं सभी। इतना तो सभी जानते हैं कि जिस व्यक्ति, समाज एवं देश का स्वत्व चला जाए, स्वाभिमान नष्ट हो जाए, उसे पतन के गर्त में गिरने से विधाता भी नहीं बचा सकता।

आज यदि व्यक्ति, समाज एवं देश को पतन के मार्ग से हटा कर विकास के मार्ग पर ले जाना है तो एक ऐसे ओझा की खोज करनी होगी या निर्माण करना होगा जो लोगों के सिर पर सवार अंग्रेजियत का भूत उतार सके। हिन्दी भारतीयों की जीवनधारा है। हिन्दी संस्कृत का मां-बेटी का नाता है और वे परस्पर एक-दूसरे से बंधी हैं। भारत की प्रगति के लिए

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

हिन्दी को धर्म-जीवन संजीवनी एवं प्राणशक्ति के रूप में रक्षित किया जाना आवश्यक है। भारत की राष्ट्रभाषा एवं संपर्क भाषा होने के आलावा हिन्दी के बोलने तथा पढ़ने वाले अनेक देशों में फैले हुए हैं। देश में हिन्दी का प्रश्न बहुत कुछ देशवासियों की देशभक्ति की भावना से जुड़ा है। भारत में हिन्दी का महत्त्वपूर्ण स्थान बनना इसलिए भी आवश्यक प्रतीत होता है क्योंकि विश्व में भारत का प्रतिनिधित्व करने वाली भाषा हिन्दी ही हो सकती है।

नवोत्थान लेख सेवा हिन्दुस्थान समाचार' 2502-ए, नलवा गली, पहाड़गंज,नई दिल्ली-110 055 से साभार

पक्षपातपूर्ण पंथनिरपेक्षता

हज सब्सिडी को शासन स्तर पर मज़हबी भेदभाव का प्रमाण मान रहे हैं : बलबीर पुंज

पिछले दिनों मैंने विदेश मंत्रालय से भारत से हज यात्रा पर जाने वालों से संबंधित कुछ सवाल संसद में पूछे थे-हज सब्सिडी कब से दी जा रही है, पिछले पांच सालों के दौरान हज यात्रियों की संख्या तथा प्रति यात्री दी गई हज सब्सिडी और दूसरे पंथ अनुयायियों को दी जाने वाली ऐसी राज-सहायता। इस संबंध में दी गई जानकारी सेकुलर भारत में चल रहे विकृत पंथनिरपेक्षता को ही रेखांकित करती है।

वर्ष 2005 में हाजियों की संख्या 80786 और तब प्रति व्यक्ति 24844 रुपये हज सब्सिडी दी गई थी अर्थात करीब 200 करोड़ रुपये। मंत्रालय द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों से यह खुलासा हुआ कि प्रति वर्ष अकेले हज सब्सिडी में करीब सौ करोड़ की वृद्धि की गई है। वर्ष 2008 में हाजियों की संख्या 121695 है और प्रति व्यक्ति 60876 रुपये हज सब्सिडी दी गई। यह राशि करीब साढ़े सात सौ करोड़ रुपये है अर्थात पांच साल में चार गुना वृद्धि हुई है। अन्य मतावलम्बियों के संबंध में पूछे गए प्रश्न के जवाब में केवल कैलाश-मानसरोवर यात्रा का उल्लेख है। मंत्रालय ने बताया कि कैलाश-मानसरोवर की यात्रा के लिए कुछ अतिरिक्त संचार-तंत्रीय व्यवस्थाओं को करने के लिए सरकार प्रति तीर्थयात्री 3250 रुपये का भुगतान कुमाऊं मंडल विकास निगम को करती है। यह छोटी-सी राशि तीर्थयात्रियों का व्ययभार कम करने के लिए नहीं दी जाती। कानून और व्यवस्था कायम करना सरकार का दायित्व है और कैलाश-मानसरोवर यात्रा मार्ग में यदि संचार व सुरक्षा पर कोई राशि खर्च की जाती है तो उसकी तुलना हज सब्सिडी से कैसे की जा सकती है? यह भी स्वाभाविक प्रश्न है कि **हज सब्सिडी क्या सरकार अपनी जेब से देती है? यह तो जनता से एकत्रित राजस्व से दी जाती है। इसलिए हज सब्सिडी को मैं हिन्दुओं पर जजिया कर के समान ही मानता हूं।**

इस पंथनिरपेक्ष देश के हिन्दू नागरिक विकृत सेकुलरवाद को ढोकर जजिया ही तो अदा कर रहे हैं। सेकुलरिस्टों की घुटना टेक नीति का परिणाम है कि हिन्दुओं की अमरनाथ यात्रा को बाधित करने की कोशिश की जाती है, एक महीने की यात्रा को पन्द्रह दिन में खत्म करने के लिए हिंसक प्रदर्शन किया जाता है और सरकार मूक दर्शक बनी रहती है। यह कैसी पंथनिरपेक्षता है? यह कम लोगों को ज्ञात होगा कि मुसलमानों के लिए पवित्र मक्का और मदीना शहरों में गैर-मुसलमानों का प्रवेश हराम है। क्या काशी और हरिद्वार में गैर-हिन्दुओं का प्रवेश निषिद्ध करने की कल्पना की जा सकती है? इस्लाम हज के लिए कर्ज लेने या परिवारजनों की जरूरतों की अनदेखी कर यात्रा पर जाने के खिलाफ है। हज का फर्ज उसी के लिए है, जो अपने संसाधनों पर यात्रा करने की सामर्थ्य रखता है। **सऊदी अरब का मानना है कि हज सब्सिडी शरीयत के खिलाफ है।** मुस्लिम कट्टरपंथियों के लिए शरीयत ही कानून है, किन्तु हज सब्सिडी के मामले में कभी शरीयत अवरोध नहीं बनती। क्यों ? **वर्तमान बजट में मुसलमानों के विकास के लिए विभिन्न योजनाओं के मद में 1740 करोड़ रुपये का प्रावधान रखा गया है।** द्रमुक के सांसद अब्दुल रहमान ने सदन में इसका विरोध करते हुए इस राशि को अत्यंत अल्प बताया। मनमोहन सिंह तो देश के संसाधानों पर मुसलमानों का पहला हक और बजट का 15 प्रतिशत मुस्लिम समुदाय के कल्याण पर खर्च करने का वायदा कर चुके हैं। **सच्चर आयोग की रिपोर्ट के अनुसार वक्फ बोर्ड के पास करीब 1.25 लाख**

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

करोड़ रुपये की संपत्ति है। इसके निवेश से मुसलमानों के उत्थान की कई सेवाएं चलाई जा सकती हैं, किन्तु कभी इस तरह का प्रस्ताव नहीं आता।

इस सेकुलर देश में एक ओर हिन्दुओं के मंदिरों की आय पर तो सरकार डाका डालती है और दूसरी ओर मुसलमानों की वार्षिक तीर्थयात्रा के लिए राजकोष से सैंकड़ों करोड़ रुपये का अनुदान देती है। क्यों ? भारतीय संविधान के अनुच्छेद 27 में यह उल्लिखित है कि किसी एक विशेष मज़हब या मत को प्रोत्साहित करने के लिए किसी भी नागरिक को कर देने के लिए बाध्य नहीं किया जाएगा। राज्य विभिन्न सरकारी करों से एकत्रित सार्वजनिक राशि का उपयोग किसी विशेष मजहब को पोषित करने में नहीं करेगा।

एक सच्चा पंथनिरपेक्ष देश किसी एक मज़हब को न तो पोषित कर सकता है और न ही किसी खास मत का दमन कर सकता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि हिन्दू समाज के उपेक्षित वर्ग की तरह ही मुस्लिम समाज का एक बड़ा हिस्सा अशिक्षा, कठमुल्लापन और पिछड़ेपन का शिकार है। मुस्लिम समाज के जिस हिस्से तक शिक्षा पहुँची भी है वहाँ भी अंधविश्वास और कट्टरता को कम करने में सफलता नहीं मिल पाई है। प्रधानमंत्री देश के संसाधनों पर मुसलमानों का पहला हक मानते हैं। बजट में मुस्लिमों के उत्थान के लिए भारी-भरकम धनराशि की व्यवस्था भी की गई है। हज सब्सिडी के रूप में सैंकड़ों करोड़ रुपये खर्च किए जाते हैं। इन सबका दुरुपयोग यदि मुस्लिम समाज से कठमुल्लापन दूर करने में किया जाए तो मुस्लिम समाज और देश, दोनों का ही कल्याण होगा।

(लेखक भाजपा के राज्यसभा के सांसद हैं।)

'दैनिक जागरण' दिल्ली, दि.4 अगस्त 2009 से साभार

सांस्कृतिक गौरव संस्थान का जुलाई में मेरठ में आयोजित कार्यकर्ता शिविर

से साभारसंस्थान के उत्तर क्षेत्र के कार्यकर्ताओं का दो दिन का शिविर मेरठ में शिवमंदिर, साकेत (मेरठ) में दैनिक जागरण कार्यालय के पीछे शनिवार और रविवार दिनांक 25-26 जुलाई 2009 को आयोजित हुआ। उक्त शिविर का मुख्य दायित्व संस्थान के पूर्णकालिक कार्यकर्ता यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी और श्रीमती चेतना शर्मा (अधिवक्ता) ने संभाला। अन्य अनेक कार्यकर्ताओं ने भी शिविर के सफल आयोजन में योगदान किया।

25 जुलाई 2009

प्रथम सत्र का आरम्भ भगवान् श्रीराम के चित्र पर माल्यार्पण और दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। स्थानीय कार्यकर्ता **श्री लीलासिंह** ने ***''संगठन गढ़े चलो''*** गीत प्रस्तुत किया।

संस्थान के महामंत्री डॉ. महेश चन्द्र ने सांस्कृतिक गौरव संस्थान की विगत साढ़े ग्यारह वर्षों की गतिविधियों का संक्षिप्त परिचय दिया। उन्होंने बताया कि संस्थान एक पंजीकृत न्यास है जो आयकर अधिनियम की धारा-80 जी के अंतर्गत दान प्राप्त करने के लिए छूट प्राप्त है। साथ-साथ विदेशी योगदान विनियमन अधिनियम (एफ.सी.आर.ए.) के अंतर्गत भारत सरकार के गृह मंत्रालय में विदेशों से दान प्राप्त करने के लिए भी पंजीकृत है। अनेक नगरों में संस्थान के चैप्टर खुले और उनमें से कुछ निरंतर कार्यक्रमों और गोष्ठियों द्वारा सक्रियता से कार्य कर रहे हैं। संस्थान का मुख्य कार्य भारत के संविधान के अनुच्छेद 51क के अंतर्गत भारत के नागरिकों के कर्तव्यों का प्रचार और उनके पालन कराने के लिए अभियान चलाना है। उन्होंने अनुरोध किया कि संस्थान के आजीवन सदस्य बनाए जाएं साथ-साथ प्रकाशनों का अधिकतम प्रचार हो और वे घर-घर तक पहुँचे, इसके लिए जोरदार अभियान भी छेड़ा जाए, इस दृष्टि से उपस्थित कार्यकर्ताओं का आह्वान किया। यह भी बताया कि प्रकाशन सामान्यत: बिना लाभ बिना हानि के दृष्टिकोण से सुलभ कराए जा रहे हैं।

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

आरंभिक सत्र में सब कार्यकर्ताओं ने अपना परिचय भी दिया। इस सत्र में विभिन्न कार्यकर्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए जो निम्नलिखित हैं: -

श्री राजेन्द्र प्रसाद शर्मा (अधिवक्ता) का यह विचार था कि गौरव घोष का कलेवर बढ़ाया जाए, उसमें रुचिकर सामग्री का समावेश किया जाए, संपादक मण्डल का विस्तार किया जाए और अधिक से अधिक लेखकों को उनके लेख देकर सम्मिलित किया जाए। उनका यह विचार था कि समाज के विभिन्न वर्गों से संबंधित हितकारी सामग्री दी जाए। **उन्होंने इस वर्ष 10 आजीवन सदस्य बनाने का दायित्व स्वयं लेना स्वीकार किया।**

डॉ. हरपाल सिंह (गाजियाबाद) ने यह महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव दिया कि समाज में जागृति लाने के उद्देश्य से महत्त्वपूर्ण विषयों की पहचान की जाए और उनके कार्यान्वयन के लिए समयबद्ध कार्य किया जाए।

श्री शरद् चन्द्र (एडवोकेट) काशीपुर ने ठाकुरद्वारा और काशीपुर की आर्यायन संस्था का परिचय दिया और बताया कि ''उठो और रामराज्य की स्थापना करो'' विषय पर उन्होंने संस्थान के साथ मिलकर ठाकुरद्वारा और काशीपुर में दो भव्य संगोष्ठियां की जिनमें से ठाकुरद्वारा में पूर्व केन्द्रीय वाणिज्य मंत्री डॉ. सुब्रमणियन् स्वामी और काशीपुर में इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति (से.नि.) श्री शंभुनाथ श्रीवास्तव मुख्य अतिथि थे। दोनों गोष्ठियों में संस्थान के महामंत्री डॉ महेश चन्द्र भी सम्मिलित हुए। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि काशीपुर में आयोजित समारोह गोष्ठी मात्र न थी बल्कि एक सम्मेलन था जिसमें अनेक नगरों के कार्यकर्ता सम्मिलित हुए थे। उन्होंने सुझाव दिया कि इस विषय को विद्यालयों में परिचर्चा का विषय बनाया जाए और वे स्वयं मुरादाबाद और ऊधमसिंह नगर और बिजनौर में ये कार्यक्रम कराएंगे।

श्रीमती चेतना शर्मा (अधिवक्ता) ने 25 आजीवन सदस्य बनाने का आश्वासन दिया और कॉलेजों में ''उठो और रामराज्य की स्थापना करो'' विषय पर गोष्ठियां और वाद-विवाद प्रतियोगिताएं कराने का आश्वासन भी दिया।

श्री लीला सिंह ने स्वतंत्रता से पहले और स्वतंत्रता के पश्चात् देश में हिन्दू की स्थिति का भलीभाँति विवेचन किया और ज़ोर देकर कहा कि देश के हिन्दुओं को संगठित करने के लिए पूरी-पूरी कोशिशा होनी चाहिए। उनका यह कहना था कि ''उठो और रामराज्य की स्थापना करो'' अभियान को ज़ोरदार ढंग से सारे देश में बढ़ाया जाना चाहिए।

श्रीमती शकुन्तला कौशिक ने स्वयं सदस्य बनने के साथ 10 आजीवन सदस्य बनाने का आश्वासन दिया और उन्होंने नगर में और आसपास के क्षेत्रों में इस्लामिक आतंकवादियों द्वारा किए जा रहे अत्याचारों और फैलाए जा रहे आतंक का विस्तृत विवेचन किया, जिसकी वे स्वयं भुक्तभोगी रही थीं। उन्होंने आवाहन किया कि शान्त न बैठें और दृढ़ता का सहारा लें। युवा लड़कियों के चल-टेलीफोनों का दुरुपयोग न हो, इस विषय में सतर्क रहें ताकि हिन्दू लड़कियों को मुसलमान लड़के बहकाकर-फुसलाकर निकाह न कर सकें। **उनका यह आग्रह था कि कश्मीरी पंडितों के कश्मीर वापसी और बंगलादेशियों के बंगलादेश वापस भेजे जाने के लिए भी ज़ोरदार अभियान चलाएं।**

श्री ओम प्रकाश शर्मा ने चेतावनी देते हुए कहा कि जातिवाद के दुष्परिणाम हमें मतान्तरण के रूप में प्राप्त हो रहे हैं और अपने अपमान के लिए हम स्वयं जिम्मेदार हैं। उन्होंने **अपना घर देखो, अपने को सुधारो और तन-मन-धन से समाजसेवा में जुट जाओ, यह गम्भीर आवाहन किया।**

श्री वेद सिंह चौधरी (मेरठ) ने आर्यसमाज के द्वारा हिन्दू समाज की सेवा का और महर्षि दयानन्द के सुधारों का उल्लेख किया। उन्होंने यह इंगित किया कि समाज के प्रत्येक वर्ग में समरसता लाने का कार्य युवकों को करना चाहिए।

श्री भगवान दास मारवाड़ी का यह सुझाव था कि हिन्दुस्थान में इस्लाम के आतंकवादियों ने कुरआन का सहारा लेकर जो अत्याचार किए हुए हैं, उन पर रोक लगाने की कोशिश की जानी चाहिए। इस कार्य के लिए यथावश्यकता न्यायालय में याचिका दायर होनी चाहिए, जिसके लिए वे स्वयं भरपूर आर्थिक सहयोग करेंगे और स्वयं संघर्ष के लिए आगे रहेंगे।

प्रथम सत्र के पश्चात् माननीय श्री अशोक जी सिंहल इस शिविर में पधारे। उनका स्वागत श्रीमती चेतना शर्मा और श्री माया प्रकाश त्यागी ने किया। सांस्कृतिक गौरव संस्थान के राष्ट्रीय प्रधान श्री भारतेन्दु प्रकाश सिंहल, कार्यकारी प्रधान श्री देवेन्द्र मित्तल आदि का भी कार्यकर्ताओं ने पुष्पमालाओं से स्वागत किया।

द्वितीय सत्र

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

द्वितीय सत्र में उपस्थित सब कार्यकर्ताओं ने स्वपरिचय कराया। विभिन्न नगरों के कार्यकर्ताओं ने परिचय के दौरान उनके द्वारा किए जा रहे कार्यकलाप का भी संक्षिप्त परिचय दिया। इस सत्र का विषय था-**हिन्दुस्थान के इस्लामीकरण को रोकने के उपाय।**

सत्र के प्रथम वक्ता **श्री माया प्रकाश त्यागी** ने कुरआन, इस्लाम, पैगम्बर के अल्लाह के विषय में कहे गए विचारों की तुलना वेद वाक्यों से की। श्री त्यागी ने वेदों में ईश्वर के निराकार, निर्गुण और सगुण स्वरूपों की विवेचना करते हुए बताया कि संपूर्ण देश में वेदों के प्रचार और उनमें दी गई शिक्षाओं के प्रसार से देश के इस्लामीकरण को रोका जा सकेगा। उनके अनेक उद्धरण देते हुए बताया कि न केवल हिन्दुस्थान में बल्कि विश्व में आतंक का मूल कुछ मज़हबी ग्रंथ हैं। चूंकि जिहाद का फल जन्नत और उसमें सुलभ होने वाली हूरें, शहद की नदियां आदि हैं, इसलिए विश्व में आतंक फल-फूल रहा है। कुरआन में पुरुषों को यह भी बताया गया है कि स्त्रियां तुम्हारी खेती हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि समाज को इनके बारे में शिक्षित किया जाए तब ही इस्लामीकरण को रोका जा सकता है।

श्री शिव कुमार शर्मा ने बताया कि सुन्दर मुसलमान लड़के बाइकों पर सवार होकर घूमते हैं और हिन्दू लड़कियों को फँसाने का काम करते हैं। एक लड़की के मुसलमानों के घर जाने से पांच हिन्दू कम होते हैं और दस मुसलमान बढ़ जाते हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि इस्लामीकरण को रोकने के लिए राज-मिस्त्री, सफेदी करने वाले, दूध बेचने वालों आदि के रूप में मुसलमानों को घरों में प्रवेश न दिया जाए क्योंकि वे लविंग जिहाद मस्जिदों में सीख कर आ रहे हैं और हिन्दू समाज को सन्त्रास दे रहे हैं। वे इकट्ठे होकर थानों में सैंकड़ों की संख्या में आते हैं आक्रामक बन कर अपनी बात मनवाने में सफल होते हैं।

प्रसिद्ध इतिहासकार और अखिल भारत हिन्दू महासभा के उपाध्यक्ष श्री दिनेश चन्द्र त्यागी ने इस बात पर ज़ोर दिया कि ''सही इतिहास पढ़ें'' और यह जानें कि मुसलमानों के साथ हुए अनेक युद्धों में हिन्दुओं ने किस तरह विजय का डंका बजाया और हिन्दुस्थान के अनेक हिस्सों में समय-समय पर सैंकड़ों वर्ष हिन्दू वंशों ने शासन किया। इस विषय में उन्होंने विजयनगर साम्राज्य सहित छत्रपति शिवाजी, महाराणा प्रताप और महाराजा रणजीत सिंह के उदाहरण दिए। उन्होंने यह भी कहा कि 12 वर्ष में एक बार एक स्थान पर होने वाले कुंभ में कई महीनों के दौरान 6-7 करोड़ हिन्दू एकत्रित होते हैं, जबकि उनकी तुलना में मक्का में हज के दौरान अधिक से अधिक 25 लाख मुसलमान दुनियाभर से इकट्ठे हो पाते हैं। उन्होंने ज़ोर देकर यह कहा कि इस्लामीकरण को रोकने के लिए हिन्दुओं की सामूहिक शक्ति का भी गौरवपूर्वक उल्लेख होना चाहिए।

यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी ने इस्लामीकरण के सम्बन्ध में तीन हाल की घटनाओं का विवरण दिया। गाजियाबाद में हिन्दू लड़कियों को बहकाने और फुसलाने की घटनाएं और शास्त्री नगर में लगभग 4 हज़ार वर्ग गज़ भूखण्ड पर कब्रिस्तान के नाम पर अनधिकृत कब्ज़ा और कमेले द्वारा वातावरण को प्रदूषित करने के साथ-साथ भारी संख्या में पशुओं का काटा जाना जैसे उदाहरण इस्लामीकरण के ज्वलंत प्रयास हैं।

श्रीमती चेतना शर्मा ने अपने साथ हुई घटना का वर्णन किया और तालीबानीकरण के द्वारा जाटों के लड़कों के संहार का लोमहर्षक विवरण देते हुए इस्लामीकरण में तेज़ी आने का उल्लेख किया।

संस्थान के राष्ट्रीय कार्यकारी प्रधान श्री देवेन्द्र कुमार मित्तल ने मदरसों के द्वारा इस्लामीकरण के अनेक उदाहरण और उद्धरण दिए। उन्होंने बताया कि जहां 1950 में लगभग 80 मदरसे थे अब 5 लाख मदरसे हो गए हैं जहाँ कोमल मन वाले मुस्लिम बालकों/बालिकाओं को हिन्दुओं से घृणा करना, गाय काटना और काफिरों की हत्या करना जैसे पाठ पढ़ाए जाते हैं। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि मदरसों में पढ़ाए जाने वाले पाठों का शुद्धिकरण होना चाहिए जिससे देश के इस्लामीकरण को रोका जा सके।

द्वितीय सत्र की समाप्ति के पश्चात् दोपहर बाद का सत्र 3 बजे आरम्भ हुआ जिसका शुभारंभ गीत के साथ हुआ। पिछले सत्र का विषय आगे भी जारी रहा।

तृतीय सत्र

श्री चित्रमणि जी ने सामूहिक गीत प्रस्तुत किया। इस सत्र में भी इस्लामीकरण रोकने के उपायों पर आगे चर्चा हुई।

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

श्रीमती शकुन्तला कौशिक ने मेरठ में सन् 1987 में मुसलमानों द्वारा किए गए हिन्दुओं के संहार और भयंकर दंगे का लोमहर्षक विवरण दिया जिसमें पुलिस को स्थानीय हिन्दुओं से मदद की पुकार लगानी पड़ी थी। उन्होंने यह उपाय बताया कि हिन्दुओं को जहाँ भी वे कम संख्या में हैं, घर बेचकर मोहल्ला खाली नहीं करना चाहिए और आस-पास के हिन्दू बहुल मोहल्लों से संपर्क रखते हुए साहस पूर्वक डटे रहना चाहिए।

श्री लीला सिंह वर्मा ने यह ज़ोर देकर कहा कि हम सबको यह चाहिए कि हिन्दू संगठनों के साथ सहयोग करें और अपनी पहचान भी बनाकर रखें।

श्री शैलेन्द्र चौहान ने एक ऐसे शिक्षा संस्थान का उदाहरण दिया जहाँ मुस्लिम महिला शिक्षक लड़कों को माथे पर लगाए गए तिलक पोंछने का आग्रह करती थीं। उन्होंने बताया कि ऐसे अनेक उदाहरण स्थान-स्थान पर ध्यान में आते हैं।

श्री मोहन लाल कपूर ने सुझाव दिए कि हिन्दू संगठन एक मंच पर आएं, बलिदान और त्याग की भावना का विकास करें, कार्यकर्ताओं और उनके परिवार की देखभाल, सुरक्षा और पोषण की व्यवस्था करें। उन्होंने यह नारा दिया कि **हिन्दू बनाओ और हिन्दू बचाओ।**

श्री भगवान् दास मारवाड़ी ने श्री कपूर की तरह ही सुझाव दिया कि अनेक बलिदानी पैदा करने होंगे।

इस सत्र में मुख्य व्याख्यान माननीय श्री अशोक जी सिंहल ने दिया जो इस प्रकार है :-

श्री अशोक जी ने सांस्कृतिक गौरव संस्थान की स्थापना के कारणों पर विस्तृत प्रकाश डाला और बताया कि देश में अनेक बुद्धिजीवी और प्रतिभाशाली लोग सक्रिय सेवा से निवृत्त होने के पश्चात् खाली बैठे होते हैं, किन्तु समुचित मंच न होने के कारण चाहते हुए भी वे देश की सेवा नहीं कर सकते, इसलिए सांस्कृतिक गौरव संस्थान बुद्धिजीवियों के एक देशव्यापी मंच के रूप में स्थापित हुआ और यह संस्थान पिछले लगभग 11 वर्षों से इस कार्य में लगा हुआ है और विभिन्न स्तरों पर कार्य हो रहा है। श्री सिंहल ने देश में गोरक्षा के लिए जो उपाय किए जा रहे हैं उनका विवरण देने के साथ-साथ जो अनेक हिन्दू विगत कई शताब्दियों में मुसलमान बने और कुछ ईसाई बने, उनकी घर वापसी के लिए हो रहे प्रयत्नों का भी उल्लेख किया। समाज में अस्पृश्यता मुसलमानों के आगमन के पश्चात् आरम्भ हुई और अनेक क्षत्रियों को विवश होकर मल उठाने का कार्य करना पड़ा किन्तु वे मुसलमान नहीं बने, तब से अस्पृश्यता फैली और अब अनेक बड़े-बड़े संगठन सामाजिक समरसता लाने के कार्य में लगे हुए हैं। उन्होंने अनेक प्रकार के सेवा कार्यों, वनवासी क्षेत्रों में छात्रावासों, चिकित्सा केन्द्रों द्वारा हो रहे कार्यों का भी उल्लेख किया। एकता के सूत्रों के बारे में बताते हुए उन्होंने 4 नगरों में होने वाले कुम्भों, शबरीमलय पर होने वाले विशाल आयोजनों, जगन्नाथपुरी की रथ यात्रा का स्मरण कराया। उन्होंने दु:ख व्यक्त किया कि कानून बनाने वाले अंतर्राष्ट्रीय शक्तियों के षड्यंत्रों का शिकार होकर हमारी संस्कृति और सांस्कृतिक एकता को नष्ट करने का प्रयास कर रहे हैं, इसलिए **अरुन्धति वसिष्ठ अनुसंधान पीठ के माध्यम से जो अब तक सांस्कृतिक गौरव संस्थान के अंतर्गत थी,** विश्वविद्यालयों में अनुसंधान के कार्यों को नई दिशा देकर देश की जनता और संस्कृति के अनुकूल नीतियां बनाने के कार्य में लगाने का प्रयत्न किया गया है। स्व. दत्तोपंत ठेंगड़ी जी की भविष्यवाणी यह थी कि कम्युनिज़्म जल्दी ही अपने बोझ से समाप्त हो जाएगा और सन् 2012 तक अमेरिका का पूंजीवाद भी गिर जाएगा, ऐसा उल्लेख करते हुए श्री अशोक जी ने **दीनदयाल उपाध्याय जी के द्वारा प्रतिपादित एकात्म मानववाद के मार्ग का विवरण दिया, जिसके आधार पर देश का भावी निर्माण होना है।**

श्री सिंहल ने यह बताया कि इस्लाम, चर्च और माओवादियों के आक्रमण नए नहीं हैं, ये घृणा पर आधारित हैं, जबकि हमारा कार्य प्रेम पर आधारित है, इसलिए हमें लड़ने के लिए संगठन नहीं बनाना है, किन्तु सबको जोड़ने के लिए यह कार्य करना है।

उनका यह कहना था कि यदि सरकार मुस्लिम और ईसाई तुष्टिकरण बंद कर दे और सेना को यथोचित समर्थन मिले तो आतंकवाद शीघ्र समाप्त हो सकता है। उन्होंने उल्लेख किया कि असम में 30 आतंकवादी संगठन खड़े हैं, पहले जनजातियों को आपस में लड़वाते हैं, फिर उनके लिए दिखावे के रूप में शिविर लगवाते हैं, इस तरह के काम चर्च द्वारा किए जाते हैं। उन्होंने विश्वास प्रकट किया कि भगवान् की विराट लीला से ये राक्षसी वैश्विक शक्तियां आपस में टकरा कर समाप्त हो जाएंगी परन्तु हमें आत्मरक्षा के उपाय करने हैं।

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

सांस्कृतिक गौरव संस्थान का काम रचनात्मक है, यह बीज की रक्षा का कार्य है, ऐसा उनका विचार था। उन्होंने यह भी प्रश्न किया कि मतान्तरित सभी बन्धुओं को क्या हम सब वापस लेने के लिए तैयार हैं, यदि नहीं तो पहले समाज को तैयार करना होगा। पुन: ईश्वर की लीला का स्मरण करते हुए कार्यकर्ताओं का आवाहन किया कि अपना कार्य करते रहें और जिस प्रकार गंगा की धारा को अविरल बनाए रखने के ज़ोरदार प्रयत्न हो रहे हैं, ऐसे सभी कार्यों में सहयोग भी करते रहें।

माननीय श्री अशोक जी ने घोषणा की कि **संस्थान के पूर्णकालिक कार्यकर्ता श्री चित्रमणि भविष्य में उत्तराखण्ड के साथ हिमाचल प्रदेश के भी प्रभारी होंगे।**

रविवार दिनांक 26 जुलाई 2009

प्रात: काल 9.00 बजे शास्त्री नगर मेरठ स्थित सनातन धर्म शिव मंदिर में विशेष यज्ञ/हवन का अयोजन हुआ जिसमें अनेक स्थानीय और बाहर के महानुभावों ने आहुतियां दीं। इसके पश्चात् श्री मायाप्रकाश त्यागी, डॉ. महेश चन्द्र, यति नरसिंहानन्द सरस्वती आदि महानुभावों के व्याख्यान हुए।

पुस्तकालय के उद्घाटन के पश्चात् उपस्थित प्रबुद्धजन संगोष्ठी स्थल पर पहुँच गए और 26 जुलाई 2009 के शिविर के अगले सत्र आरम्भ हुआ। सर्वप्रथम *श्रीराम चन्द्र कृपालु भजु मन* स्तुति का सामूहिक गायन हुआ और *संगठन गढ़े चलो* गीत भी श्री चित्रमणि के साथ सबने मिलकर गाया।

सत्र का आरम्भ करते हुए श्री राजेन्द्र प्रसाद शर्मा (अधिवक्ता) ने चिंतन शिविर के पहले दिन के निष्कर्षों की जानकारी दी, जिसका विवरण पिछले पृष्ठों में दिया गया है।

तत्पश्चात् ''उठो और रामराज्य की स्थापना करो'' संगोष्ठियों के आयोजन, उनमें व्याख्यान देने वाले महानुभावों और उनमें प्रतिपादित रामराज्य की अवधारणा के संबंध में संस्थान के महामंत्री डॉ. महेश चन्द्र ने विस्तृत विवरण दिया। उपस्थित कार्यकर्ताओं के बीच ''उठो और रामराज्य की स्थापना करो'' संबंधी पत्रक वितरित किए गए।

प्रथम स्थानीय वक्ता **श्री संजीव पुण्डीर** ने रामराज्य को आदर्श शासन व्यवस्था बताया और कहा कि रामराज्य का अर्थ दुखरहित समाज और दुखरहित व्यक्ति होने में है। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि श्री रामचन्द्र जी ने कहा था कि **जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी** और इसके साथ ही उन्होंने निसिचर हीन करउं मही ...की घोषणा भी की थी जिसका उन्होंने पूरी तरह पालन किया।

श्री पुण्डीर ने विद्यालयों में गोष्ठियां और प्रतियोगिताएं कराने का निश्चय प्रकट किया। उनका आग्रह था कि घर-घर में रामायण के अखण्ड पाठ की व्यवस्था होनी चाहिए।

इस बीच **मेरठ के सांसद श्री राजेन्द्र अग्रवाल भी शिविर में पधारे।** उनका यथोचित स्वागत किया गया। उपस्थित कार्यकर्ताओं का उनसे परिचय कराए जाने के पश्चात् **काशीपुर के श्री शरद् चन्द्र** अधिवक्ता ने ''उठो और रामराज्य की स्थापना करो'' विषय में उद्गार प्रकट करते हुए उनके द्वारा ठाकुरद्वारा और काशीपुर में गोष्ठी और सम्मेलन कराए जाने की जानकारी दी गई। उन्होंने यह कहा कि विवेकयुक्त सामाजिक व्यवस्था की स्थापना ही रामराज्य है। उन्होंने वर्तमान में जो रामराज्य के शत्रु हैं उनका भी उल्लेख किया और कहा कि <u>अहिंसा का पाठ हिंसकों को पढ़ाया जाना चाहिए।</u>

मेरठ के प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री श्री अशोक शास्त्री ने मतों का ध्रुवीकरण जरूरी बताया क्योंकि हमारे शत्रु परस्पर मिल गए हैं। उनका यह भी विचार था कि समाज में समरसता के साथ न्याय पूर्ण व्यवस्था की स्थापना आवश्यक है अन्यथा रामराज्य का कोई अर्थ नहीं होगा।

श्री चित्रमणि ने घोषणा की कि वे उत्तराखण्ड में प्रत्येक ज़िले में गोष्ठी कराएंगे। चूंकि पहले दिन माननीय श्री अशोक जी ने श्री चित्रमणि जी को उत्तराखण्ड के साथ सांस्कृतिक गौरव संस्थान का हिमाचल प्रदेश का काम भी सौंपने की घोषणा कर दी थी इसलिए श्री चित्रमणि ने हिमाचल प्रदेश में भी कार्यक्रम कराने का संकल्प व्यक्त किया। **उन्होंने यह भी कहा कि वे 20 आजीवन सदस्य बनाएंगे।**

श्री राजेन्द्र अग्रवाल (सांसद्) ने ''उठो और रामराज्य की स्थापना करो'' विषय की सामयिकता पर प्रकाश डाला और समाज का संगठित होना ज़रूरी बताया। उनका यह पुष्ट विचार था कि समाज में एकता की स्थापना के लिए सबको

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

मिलकर कार्य करना चाहिए ताकि आतंकवादी शक्तियों का सफाया किया जा सके और उनसे लोहा लिया जा सके। उन्होंने देश के शत्रुओं के प्रति सावधान रहने का भी आवाहन किया। उन्होंने यह विश्वास दिलाया कि वे संस्थान के कार्यकलाप में यथावश्यक सहयोग देते रहेंगे।

अलीगढ़ से आए श्री माधव स्वरूप मित्तल ने हिन्दू समाज का अस्तित्व खतरे में होना बताया और संगठित होने के लिए मिलकर चलने की आवश्यकता का प्रतिपादन किया उनका यह विचार था कि हमारे पास लक्ष्य, योजना और नेतृत्व का अभाव है।

प्रसिद्ध लेखक और इतिहासकार **श्री दिनेश चन्द्र त्यागी ने बड़ा महत्वपूर्ण सूत्र दिया जो यह है :-**

A bit reactionary if Hindu becomes
all opponents will become national

अर्थात् यदि हिन्दू थोड़ा-सा प्रतिक्रियावादी हो जाए तो विरोधी राष्ट्रवादी हो जाएंगे। उनका यह विचार था कि संगठनों का संगठन किया जाए क्योंकि हिन्दुओं के लगभग 900 संगठन हैं और इसलिए विश्व हिन्दू महासंघ का गठन हुआ है जो हिन्दुओं में एकता के लिए कार्यरत है। उन्होंने रामराज्य की स्थापना अभियान का स्वागत किया और इस अभियान में अपना भरपूर सहयोग देने की इच्छा भी व्यक्त की।

यति नरसिंहानन्द सरस्वती ने उपस्थित कार्यकर्ताओं सहित श्री राजेन्द्र अग्रवाल (सांसद्), श्री अशोक शास्त्री, श्री दिनेश चन्द्र त्यागी आदि सब महानुभावों का हार्दिक धन्यवाद व्यक्त किया।

जन-गण-मन, राष्ट्रगान के साथ डेढ़ दिवसीय शिविर का समापन हुआ।

डोगरा शासनकालीन आयुर्वेदिक साहित्य - रणवीर प्रकाश

-डॉ. नरेश कुमार अरोड़ा तथा डॉ. अनिल कुमार महाजन

रणवीर प्रकाश आयुर्वेदिक साहित्य का अपने आप में एक अनूठा एवं अनुपम चिकित्सा ग्रंथ है। प्राचीन आयुर्वेदिक ग्रंथों का विविधतापूर्ण संग्रह इस ग्रंथ में कुशलतापूर्वक किया गया है। आज से लगभग एक सौ चालीस वर्ष पूर्व श्रावण मास की सप्तमी तिथि को विक्रमी संवत् 1925 में इस ग्रंथ की रचना जम्मू-कश्मीर राज्य के महाराजा रणवीर सिंह के शासनकाल में हुई। महाराजा जो कि स्वयं संस्कृत भाषा एवं भारतीय संस्कृति के बहुत बड़े विद्वान थे, ने इस ग्रंथ की रचना उस समय के उद्भट विद्वान पंडित जगधर द्वारा करवाई। क्योंकि आयुर्वेद के मूल ग्रंथ शुद्ध संस्कृत भाषा में उपलब्ध थे, इसलिए महाराजा की यह धारणा थी कि आयुर्वेद का ज्ञान सर्वसाधारण की भाषा में अधिक लाभदायक हो सकता है। इस उद्देश्य को सामने रखकर **इस ग्रंथ की रचना साधारण हिन्दी भाषा में छन्दबद्ध तरीके से करवाई। इस ग्रंथ को सर्वसाधारण में प्रचलित करने के लिए रामायण की तरह के दोहों और चौपाइयों के रूप का प्रयोग किया गया।**

प्रथम संस्करण निकलने के लगभग 50 वर्ष पश्चात् विक्रमी सम्वत् 1974 में इस ग्रंथ का द्वितीय संस्करण महाराजा प्रताप सिंह के शासनकाल में प्रकाशित हुआ। इस द्वितीय संस्करण का सम्पादन विद्वान् कश्मीरी पण्डित अमरनाथ जाडू द्वारा किया गया। यह ग्रंथ दो भागों में उपलब्ध है। पहले भाग में 424 पृष्ठ हैं और दूसरे भाग में 346 पृष्ठ हैं। यह ग्रंथ विभिन्न आयुर्वेदिक ग्रंथों का सम्मिश्रण है। मूलग्रंथों के चयन में बड़ी विविधता है और यह ग्रंथ देश के विभिन्न प्रदेशों के विद्वानों द्वारा रचित ग्रंथों का एक तर्कसंगत चयन है। उल्लेखनीय ग्रंथों में चरक संहिता, अष्टांग हृदय, भावप्रकाश, वंगसेन, चक्रदत्त, योगशतक, शारंगधर संहिता, भास्करयोग चिन्तामणि, वृन्दहारीत चिकित्सासार हैं। ,,,,,,,

इस चिकित्सा-ग्रंथ का एक अन्य उल्लेखनीय पक्ष जम्मू-कश्मीर राज्य में उपलब्ध औषध द्रव्यों में अरबी एवं फारसी नामों का समावेश है। इनके साथ-साथ इस ग्रंथ में यूनानी चिकित्सा पद्धति में प्रयोग की जाने वाली औषधों का भी विभिन्न रोगों के उपचार हेतु वर्णन मिलता है।

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

'चन्द्रभागा संवाद' मासिक 402-अंबफला, जम्मूतवी-180 005 से साभार

अनमोल वचन

न कालस्यास्ति बन्धुत्वं न हेतुर्न पराक्रमः ।
न मित्रज्ञातिसम्बन्धः कारणं नात्मनी वशः।।

(रामा. 25.7)

काल का किसी के साथ कोई भाईचारा नहीं होता। मित्रता अथवा जाति आदि का भी संबंध नहीं होता। काल को कोई अपने वश में नहीं कर सकता और काल पर किसी का पराक्रम नहीं चल सकता।

भारत के प्रधानमंत्री सरदार मनमोहन सिंह जी के नाम खुला पत्र

आदरणीय प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह जी

जय श्रीराम / सतश्री अकाल

प्रधानमंत्री के नाते दूसरे कार्यकाल को शुरू करने के लिए आपको हमारी ओर से हार्दिक बधाई। अपने पहले कार्यकाल में आपने हिन्दुस्थान को दारुल इस्लाम बनाने की दिशा में कई बड़े-बड़े काम किए हैं जिनमें से कुछ ये हैं :-

1. केन्द्रीय मंत्रीमंडल में अल्पसंख्यक मामलों का मंत्रालय बनाने के साथ-साथ उसके लिए अलग केबिनेट मंत्री नियुक्त करना
2. केबीनेट मंत्री के नाते जाने-माने इस्लाम परस्त व्यक्ति अब्दुल रहमान अंतुले को केबिनेट मंत्री बनाना
3. यह घोषणा करना कि देश के संसाधनों पर पहला अधिकार मुसलमानों का है
4. राजेन्द्र सच्चर की अध्यक्षता में मुसलमानों की आर्थिक दशा का आकलन करने और उसके सुधार के उपाय सुझाने के लिए सच्चर कमेटी का गठन और उस समिति की झूठी-सच्ची रिपोर्ट के आधार पर मुसलमानों को देश में अधिक से अधिक सुविधाएं, नौकरियां, छात्रवृत्तियां दिलाने का घोर सांप्रदायिक अभियान
5. मुसलमानों और अन्य अल्पसंख्यकों के उन छात्रों/छात्राओं को छात्रवृत्तियां देना जिनके परिवार की वार्षिक आमदनी 2 लाख रुपये या उससे कम हो। इसका परिणाम यह हुआ है कि अनेक हिन्दू परिवार मुसलमान बनने के लिए तैयार हो गए हैं।
6. मज़हबी जुनून से जन्मे पाकिस्तान की जन्मदात्री 'अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी' की तर्ज पर देश में तीन अन्य विष-बीज बोने (निर्माण) हेतु विश्वविद्यालयों के लिए करोड़ों रुपयों का अनुदान दिया जा रहा है।

ऐसे अनेक और भी उदाहरण है जिनसे हिन्दुस्थान को दारुल-इस्लाम बनाने के लिए आपके कार्यकाल में पूरी-पूरी कोशिश हुई है जिनमें हज यात्राओं की सब्सिडी, हज हाउसों का बड़ी संख्या में सरकारी भूमि पर सरकारी पैसे से निर्माण और अद्धसैनिक बलों में मुसलमानों की भर्ती का ज़ोरदार अभियान आदि शामिल हैं।

अब चूंकि आपका दूसरा कार्यकाल शुरू हो गया है, इसलिए यह बहुत ज़रूरी है कि आप हिन्दुस्थान के इस्लामीकरण की दिशा में और अधिक तेज़ी से कार्रवाई करें ताकि इस देश में आप अनंत काल तक प्रधानमंत्री बने रह सकें। इसके लिए हमारे कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं:-

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

1. चूंकि देश के लगभग 15 प्रतिशत मुसलमानों के लिए हर साल लगभग 15 हज़ार करोड़ रुपये अल्पसंख्यक वित्त एवं विकास निगम के द्वारा लगभग ब्याजमुक्त ऋणों के रूप में, 80 मुस्लिम बहुल ज़िलों में अनेक प्रकार की सुविधाएं देने आदि के लिए खर्च किए जा रहे हैं जबकि सामान्यत: मुसलमानों से हरेक वर्ष शायद अधिकतम डेढ़ से दो प्रतिशत आयकर (इन्कम टैक्स), कुल वैट की लगभग डेढ़ से दो प्रतिशत धनराशि, सेवाकर शायद बिल्कुल नहीं आदि मिलते हैं, (इस बारे में सच्चर कमेटी ने कोई सूचना इकट्टी नहीं की) इसलिए अच्छा यह होगा कि मुसलमानों को पूरी तरह आयकर, सेवाकर, वैट, बिक्रीकर (यदि कहीं हो), उत्पाद शुल्क, सीमा शुल्क आदि से मुक्त कर दिया जाएं और उनसे कुछ न लिया जाए, जैसा कि सन् 1200 से 1710 ई. तक हिन्दुस्थान में हुआ।

2. आयकर, सेवाकर, वैट, बिक्रीकर, उत्पाद शुल्क, सीमा शुल्क आदि करों का नया नामकरण करके हिन्दुओं के लिए उन्हें जज़िया टैक्स नंबर 1, 2, 3, 4, 5 तथा 6 आदि नामों से जाना जाए जिससे मुसलमानों के मुल्लाओं को यह लगने लगे कि हिन्दुस्थान अब दारुल-हरब नहीं है दारुल-इस्लाम हो गया है। हो सकता है कि इससे हिन्दुस्थान में आतंकवादी हमले, जिसके कारण सारे देश में दहशत का माहौल है, खत्म हो जाए और मुसलमानों के मुल्लाओं की हिन्दुस्थान को दारुल इस्लाम बनाने की कोशिशों की आवश्यकता ही नहीं रहेगी क्योंकि आप इस काम को पूरा करने में सहयोग दे रहे हैं।

इस दिशा में कुछ और भी सुझाव हो सकते हैं, फिलहाल इतना ही काफी होगा। विश्वास है कि आप हमारे इस अनुरोध को स्वीकार करके जल्दी से जल्दी संसद में इस बारे में कानून बनवाकर **अपने आपको गाज़ी सिद्ध कर सकेंगे।**

शुभकामनाओं सहित,

आपका

बैकुण्ठ लाल शर्मा 'प्रेम सिंह शेर'

पूर्व सांसद्

पावन भारतीय संस्कृति - दिशा और दशा

हिन्दू और हिन्दू स्थान ये शब्द कान में पड़ते ही दिलो-दिमाग में एक बिजली कौंध जाती है, अतीत के अनगिनत स्वर्णिम पृष्ठ आँखों के सामने खुलते चले जाते हैं, हिन्दुस्थान जो कि भारत और आर्यावर्त के नाम से जाना जाता है वह पावन धरा जहाँ सृष्टि के पहले मानव ने आँखें खोलीं वेदों का प्राकाट्य हुआ जिसके माध्यम से संसार की समस्त विद्या और कला अपने दिव्य रूप में प्रकट हुई, श्री मन्नारायण के चौबीस अवतारों की लीला भूमि जहाँ देवगण भी अवतार लेने को तरसते हैं और भी बहुत कुछ जिसे शब्दों में बाँध पाना असंभव है। वैदिक ज्ञान के आलोक में आर्यवंशी संपूर्ण भूमंडल में अपने उपनिवेश स्थापित करते हुए सार्वभौम चक्रवर्ती सम्राट के पद पर आरूढ़ हुए। वैदिक संस्कृति, श्रेष्ठतम आध्यात्मिक और मानव मूल्यों की स्थापना करते हुए विश्वबंधुत्व, विश्वशांति तथा सृष्टि में विराजमान प्रत्येक जीव के कल्याण का मार्ग चिर काल तक प्रशस्त करते रहे, सतयुग, त्रेता व्यतीत हुआ द्वापर के अंतिम चरण में भगवान का कृष्णावतार हुआ। महाराज युधिष्ठिर को महाभारतोपरांत सिंहासनासीन कर वासुदेव कृष्ण कलिकाल के प्रवेश से पूर्व निज लीला संवरण कर गोलोक प्रस्थान कर गए। परम तेजस्वी समग्र भूमंडल के सार्वभौम सम्राट महाराज युधिष्ठिर से सम्राट क्षेमक तक पांडवों की 31 पीढ़ियों ने 1700 वर्ष तक संपूर्ण पृथ्वी पर अखण्ड राज्य किया, तत्पश्चात् नन्द, मौर्य, शुंग, कण्व और आन्ध्रवंशीय राजाओं का शासन तथा केन्द्रीय शासन कमजोर होने पर भारत के विभिन्न भागों पर शक, पल्लव, तुषार और हूण वंशीय राजाओं ने राज्य किया। अंग्रेज़ी दासता में लिखे जाने वाले

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

भारतीय इतिहास ने भारत के इस गौरवशाली सत्य इतिहास को अस्वीकार कर दिया। अंग्रेज़ों ने भारत का भ्रष्ट और विकृत इतिहास विदेशी ईसाइयों से लिखवा कर भारत में मैकाले पद्धति द्वारा स्थापित शिक्षा संस्थानों द्वारा पढ़ाना प्रारंभ किया। जिसमें महाभारत को एक कपोल कल्पना माना गया। कितने आश्चर्य की बात है कि **ईसा के जन्म से 305 वर्ष पूर्व भारत आने वाला विद्वान मेगस्थनीज़ विक्रम की प्रथम शती से आठवीं शती तक आने वाले 100 चीनी विद्वान बौद्ध भिक्षुओं जिनमें इत्सिंग, फाहियान और ह्वेनसांग अति प्रसिद्ध हैं इन सबने अपने इतिहास और यात्रा विवरणों में महाभारत और उसकी सभी घटनाओं का वर्णन किया है।** सातवीं सदी का प्रथम अरब यात्री, सुलेमान सौदागर, अलमासूदी तथा 1010 से 1020 ई. तक अबूरिहां अलबरूनी जैसे विधर्मी इतिहासकार महाभारत का वर्णन अपने इतिहास में करते हैं। अकबर के दरबारी इतिहासकार अबुल फज़ल अपने ग्रंथ आइने अकबरी में बाकायदा पांडव राजाओं की वंशावली सहित महाभारत का वर्णन करते हैं। मगर उनके दरबार में कहीं भी यह कुविचार नहीं आया कि महाभारत को कपोल कल्पना कहने का दुस्साहस करें और भी बहुत से प्रमाण हैं। मगर 1757 ई. में प्लासी के बाद भारत की धरती पर पैर रखने वाले अंग्रेज़ों और ईसाई मत के मानने वाले कतिपय विदेशी इतिहासकारों ने अपने असत्य इतिहास से 2308 वर्ष पूर्व लिखित उपरोक्त सत्य इतिहास को झूठा बताकर अपने बाप को बाप मानने से इंकार कर दिया **उनकी झूठन पर पलने वाले वर्णसंकर भारतीय इतिहासकारों ने भी महाभारत को जो कि भारतीय इतिहास का सबसे बड़ा स्रोत है कपोल कल्पना कहना प्रारंभ कर अपनी माता की कोख में लात मारकर भारत द्रोह का जघन्य अपराध किया। अंग्रेज़ों का महाभारत को कपोल कल्पना कहना एक मजबूरी थी क्योंकि यदि वे महाभारत को सत्य मानते तो उन्हें वैदिक धर्म और संस्कृति को विश्व की प्राचीनतम और श्रेष्ठतम धर्म संस्कृति स्वीकार करना पड़ता। उन्हें मानना पड़ता कि सभी मानव आर्यो की संतान हैं तथा आर्यो का समग्र भूमण्डल में शासन रहा है और यदि वे ऐसा करते तो ईसाइयत और भारत में उनके शासन का जनाज़ा निकल जाता इसलिए उन्होंने अपने इतिहास में लिखा कि भारत का कोई लिखित इतिहास नहीं है, क्योंकि भारतीयों को इतिहास लिखना नहीं आता था। क्या आप मान सकते हैं कि जिस भारत में तक्षशिला, नालन्दा और विक्रमशिला जैसे सैंकड़ों विश्वविद्यालय थे जिनमें विश्व भर के लोग 75 से अधिक विषयों की शिक्षा प्राप्त करते थे उन हिन्दुओं को इतिहास लिखना नहीं आता था।** इसलिए समुद्री डकैती करने वाले अंग्रेज़ों को भारत का इतिहास लिखने की आवश्यकता हुई। मकसद सिर्फ एक ही था हिन्दू और हिन्दू राष्ट्र भारत को उसके गौरवशाली अतीत से पृथक् कर ईसाइयत का प्रचार और भारत में अंग्रेज़ी शासन को मज़बूत करना। **सन् 650 से इस्लामी जेहादी भारत की पश्चिमी सीमाओं से भारत को जीतने के लिए आक्रमण करने लगे काबूल, जाबुल और कोकान इन तीन राज्यों ने उनका लगातार तीव्र प्रतिरोध 229 वर्ष तक किया और उन्हें भारत में नहीं घुसने दिया। सन् 879 तक भारत एक हिन्दू राष्ट्र बना रहा। सन् 1017 में लाहौर के पतन के बाद भारत की पश्चिमी सीमाओं को छोड़कर महाराज पृथ्वीराज के समय तक भी भारत एक हिन्दू राष्ट्र रहा था।** सन् 1206 में दिल्ली पर मुस्लिम आधिपत्य के बाद सन् 1707 तक हिन्दू वीरों ने अपने शौर्य और प्रतिरोध से भारत को इस्लामी राज्य नहीं बनने दिया और अब आशा थी कि भारत पुनः अपना खोया हुआ पूर्व गौरव प्राप्त कर हिन्दू राष्ट्र बनेगा किन्तु अंग्रेज़ी शासन ने इस संभावना को धूमिल कर दिया। 1947 में जब अंग्रेज़ हिन्दुस्थान को छोड़कर भाग रहे थे तब मुस्लिम लीग के तत्कालीन नेताओं ने अपनी मज़हबी आस्था को सर्वोपरि रखते हुए एक सच्चे मुसलमान होने का परिचय दिया और बड़े गर्व से भारत को खण्डित कर इस्लामी देश पाकिस्तान का निर्माण कर लिया। **मगर हिन्दुओं का नेतृत्व करने वाले गांधी और नेहरू कैसे सच्चे हिन्दू थे जिन्होंने न केवल भारत को खण्डित किया वरन् भारत को भी हिन्दू राष्ट्र नहीं बनने दिया।** क्योंकि गांधीजी और नेहरू जी चाहते थे कि भले ही हिन्दू और भारत का सर्वनाश हो जाए पर उनके इस कुकर्म के बदले सारी दुनिया उन्हें धर्मनिरपेक्ष और मानवतावादी मानकर दुनिया के सबसे बड़े पुरस्कार नोबेल प्राइज़ से सम्मानित करे। यह वह पल था जिसका इंतज़ार उन करोड़ों आत्माओं को था जिन्होंने भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने के लिए अपना बलिदान दिया था जो स्वर्ग में बैठकर सदियों से इस दिन की प्रतीक्षा कर रही थी कि उनका बलिदान सार्थक होगा और भारत जो कि गुलामी से पूर्व हिन्दू राष्ट्र था आजादी के बाद हिन्दू राष्ट्र बनेगा, क्योंकि मुस्लिम देश पाकिस्तान के निर्माण के बाद भारत के हिन्दू राष्ट्र बनने में कोई बाधा नहीं थी। जीती हुई बाज़ी हाथ से निकल गई। स्वतंत्रता का वरदान अभिशाप में परिवर्तित हो गया। जिस भारत को सारी दुनिया में फैले हुए हिन्दुओं का नेतृत्व कर

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

विश्व की महाशक्ति बनना था वह पुनः सिर्फ मुसलमान और अंग्रेज़ों का गुलाम बनकर रह गया और अगर भारत हिन्दू राष्ट्र बन जाता तो विश्व में अनेक हिन्दू राष्ट्र बन जाते मारिशस, ग्याना, फिजी में हिन्दू बहुसंख्यक थे। भारत और नेपाल के सहयोग से हिन्दू बहुल थाइलैण्ड, कम्बोडिया, लाओस, इण्डोनेशिया, भूटान, तिब्बत और चीन हिन्दू बौद्ध राष्ट्र समूह में सम्मिलित हो जाते। मंगोलिया, कीनिया, त्रिनीदाद, में हिन्दू तीस प्रतिशत से अधिक होने के कारण वहां की राजनीति को प्रभावित कर सकते थे जिसके फलस्वरूप ईसाई और मुस्लिम राष्ट्रों के विरुद्ध विश्व में एक प्रचण्ड हिन्दू शक्ति का उदय हो जाता। गांधी जी और नेहरू जी के इस पाप में तत्कालीन सारी कांग्रेस भागीदार नहीं थी कांग्रेस के 60 प्रतिशत से अधिक प्रभावशाली नेता हिन्दुत्व और राष्ट्रभक्ति की भावना से ओतप्रोत थे, वे न तो देश का विभाजन चाहते थे और नेहरू को प्रधानमंत्री बनाना। कांग्रेस कार्यसमिति का सर्व सम्मत प्रस्ताव सरदार पटेल को प्रधानमंत्री बनाने के पक्ष में था किन्तु केवल गांधी जी की इच्छा से एक ऐसा व्यक्ति जो स्वयं को एक्सीडेंटल हिन्दू कहता था स्वतंत्र भारत का भाग्य विधाता बना। **नेहरू के शासन में हिन्दू और हिन्दू धर्म को अपमानित और समूल नष्ट करने का प्रयास योजनाबद्ध तरीके से प्रारंभ हुआ। जिस भ्रष्ट इतिहास की चर्चा हमने ऊपर की है वही विद्यालयों में पढ़ाया गया। हिन्दी के स्थान पर अंग्रेज़ी को वरीयता दी गई। धर्मनिरपेक्षता के नाम पर इस्लामी आतंकवाद और ईसाई मतान्तरण को प्रोत्साहित किया गया। भारत जो कि हिन्दू राष्ट्र है उसे कबीलों से आबाद होने वाला मिश्रित सांस्कृतिक राष्ट्र बताया गया। हिन्दू और हिन्दुत्व को सांप्रदायिक शब्द से लांछित किया गया।** रामसेतु प्रकरण और आज का भ्रष्ट शैक्षिक पाठ्यक्रम इसी नीति का परिणाम है और भी बहुत कुछ जो इस सारी पाप कथा को लिखने में असमर्थ है। जो अपने दादा-दादी के नाम तक नहीं जानते वो राम के होने का सबूत मांगते हैं। आज अपने ही देश में हिन्दू दूसरे दर्जे का नागरिक है। पूरे देश में हिन्दू, इस्लामी आतंकवादियों द्वारा सरेआम कत्ल किया जा रहा है। हिन्दू मंदिरों पर गज़नवी और गौरी की तरह के हमले किए जा रहे हैं। 5 लाख कश्मीरी हिन्दू दिल्ली की सड़कों पर पड़े हैं और 4 करोड़ बंगलादेशी आंतकी देश के अंदर हैं। हिन्दुओं के टैक्स और मंदिरों की रकम से इस्लामी आतंकवादियों को हथियार मुहैया कराए जा रहे हैं। मौलवियों और ईसाई पादरियों को तनख्वाहें दी जा रही हैं। हाजियों को हज कराई जा रही है। मदरसों को अनुदान देकर आतंकियों की फसल तैयार की जा रही है। इस्लामी आतंकी, माओवादी, नक्सलवादियों को सोनिया जी की ईसाई सरकार अपने दामाद की तरह सम्मान दे रही है। बेनज़ीर और मुशर्रफ ने कहा कि मदरसे आतंकियों के गढ़ हैं। शिवराज पाटिल ने कहा कि ये मानवता के सेवक हैं। सारी दुनिया के गैर-मुस्लिम राष्ट्राध्यक्ष कहते हैं कि मुसलमान सारी दुनिया में आतंक फैला रहे हैं मगर हमारे प्रधानमंत्री कहते हें कि भारत के संसाधनों पर पहला हक मुसलमानों का है। हद तो यह है कि वाममार्गी विचारों के समर्थन से चलने वाली सोनिया की सरकार ने संसद पर हमले के सजायाफता मुजरिम अफजल को अपने आंचल की छांव में छिपाकर माननीय सर्वोच्च न्यायालय और देश के सुरक्षा बलों के मुंह पर जोरदार तमाचार मारकर अपने इस्लमी आतंकवादी प्रेम को उजागर कर दिया है। इतना सब कुछ पढ़ने के बाद भी आपको यदि भारत और हिन्दुओं के भविष्य का अनुमान नहीं होता तो मैं समझता हूँ कि मेरा परिश्रम व्यर्थ है। अब एक ही प्रश्न शेष रह जाता है कि वर्तमान संकट को यथास्थितिवादी बनकर मूकदर्शक की तरह हिन्दू और हिन्दुस्थान का विनाश देखना है अथवा इस दिशा को बदलकर खोये भारत की पुनर्प्रतिष्ठा करनी है। इसका एक ही समाधान है कि भारत को हिन्दू राष्ट्र घोषित किया जाए। सारे विश्व में जो समुदाय बहुसंख्यक है उसी के धर्म से वह राष्ट्र जाना जाता है। सबसे बड़ी जनसंख्या ईसाई तो सबसे अधिक ईसाई देश विश्व की दूसरी बड़ी जनसंख्या वाले मुस्लिम तो 50 से अधिक मुस्लिम राष्ट्र, सबसे कम जनसंख्या यहूदी तो उनका भी एक देश तो फिर 85 करोड़ हिन्दू आबादी वाला भारत हिन्दू राष्ट्र क्यों नहीं हो सकता। भारत एक हिन्दू राष्ट्र था और एक हिन्दू राष्ट्र है। जो हिन्दू चाहेगा वही इस देश में होगा। अगर आज नहीं तो कल हम इसे प्राप्त करके रहेंगे। हिन्दू-हिन्दुत्व और हमारे पूज्य प्रतीकों का बहुत अपमान हो चुका है। बस अब और नहीं। भारत के हिन्दू राष्ट्र बनते ही इन सभी समस्याओं का समाधान स्वतः ही हो जाएगा क्योंकि 85 प्रतिशत समस्याएं भारत सरकार द्वारा पैदा की गई हैं। जिससे हिन्दू समाज इनमें उलझकर भारत-भक्ति और हिन्दुत्व से दूर हो जाए। आर्यायन द्वारा आयोजित हिन्दू संस्कृति व्याख्यानमाला एक विचार क्रांति अभियान है जो किसी मज़हब, व्यक्ति, संस्था अथवा राजनैतिक दल का विराधी नहीं। हमारा उद्देश्य हिन्दू समाज की

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

वर्तमान स्थिति की सही जानकारी देना है और आने वाले कल की सही तस्वीर अपने समाज के समक्ष रखने का है जिसे जानबूझकर छिपाया जा रहा है या गलत तरीके से पेश किया जा रहा है।

अत: केवल एक संकल्प एक साधना एक पुरुषार्थ अखण्ड हिन्दू राष्ट्र जहां से उठने वाला यज्ञ धूम विश्व को कल्मष मुक्त करेगा। वेदों का गान शांति, सद्‌भाव और मैत्री की तरंगों से भूमण्डल को स्पन्दित कर देगा। पुण्य सलिला भागीरथी की शुचिता से पवित्र हो वसुंधरा मोदमग्न हो जाएगी।

श्रीरामदासानुदास शरद चन्द्र (एडवोकेट)

संस्थापक, आर्यायन

लोकमान्य ! हम शर्मिन्दा हैं ... स्वराज को हम भूल गए

भारत को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराने में प्रख्यात स्वतंत्रता सेनानी एवं समाज सुधारक लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का योगदान अविस्मरणीय है। कांग्रेस के नरम दल के नेता के नाते उन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलन को नयी दिशा दी। 'गीतारहस्य' नामक पुस्तक के रचयिता तिलक के लेखों ने लाखों भारतीयों को अपने देश के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने की प्रेरणा दी। महाराष्ट्र में उन्होंने गणेश पूजा का प्रारंभ कर लोगों में धार्मिक और सांस्कृतिक चेतना का प्रवाह किया। उत्कट देशभक्ति के प्रेरणास्रोत व "स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा" का उद्‌घोष करने वाले तिलक का जन्म 23 जुलाई 1856 को एवं 1 अगस्त 1920 को देहावसान हुआ। यानी अगस्त में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की 89वीं पुण्यतिथि पड़ी। **'प्रवक्ता डॉट कॉम' के विशेष आग्रह पर युवा पत्रकार राकेश उपाध्याय ने समकालीन राजनीति और तिलक की प्रासंगिकता विषय पर तीन कड़ियों में आलेख लिखा है।**

1 अगस्त 2009 को लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक को गुजरे लगभग 90 साल पूरे हो गए। हम अब यह दावा नहीं कर सकते कि देश में कोई ऐसा होगा जिसने लोकमान्य को अपनी आंखों से कभी देखा होगा, हां इतना जरूर कहा जा सकता है कि लोकमान्य की आंखों के सपने अभी भी कुछ भारतीयों की आंखों में तिरते होंगे। संभवत: मुट्‌ठीभर ऐसे भी अवश्य होंगे जो आज भी सही मायनों में 'स्वराज' आने का इंतजार कर रहे हैं।

मुझे लगता है कि तिलक आज जिंदा होते तो शायद पहले से भी कहीं अधिक वेग से हिन्दुस्थान में स्वराज की स्थापना के संघर्ष में बिगुल बजा रहे होते। आज के भारत का कड़वा सच यही है कि भारतीय राजनीतिक पटल पर एक भयानक तमस और कुहासा चारों ओर छाया दिख रहा है। तिलक का कालखण्ड बीतने को शताब्दी आ गई लेकिन उस समय जो गाढ़ा अंधकार भारत के राजनीतिक क्षितिज पर छाया हुआ था, जिससे निजात दिलाने के लिए तिलक भारतभूमि पर पैदा हुए, वह तो आज कहीं ज्यादा विकराल हो उठा है। लोकप्रियता को ही मानक मान लें तो आज देश में किस राजनीतिक दल का कौन नेता दावा कर सकता है कि उसकी एक दहाड़ पर हिन्दुस्थान ठप्प हो सकता है? शायद ही कोई राजनेता ऐसा हो जिसके पास अखिल भारतीय दृष्टि हो, जिसके लिए भारतवर्ष के प्रत्येक प्रांत की जनता में बेइंतहा प्यार हो, जो अपने जीवन में किसी विचारधारा की लीक पर चलता हो, जिसको कोई सिद्धांत हो और वह सिद्धांत उसके आचरण से स्पष्ट झलकता भी हो।

आज हिन्दुस्थान की 77 प्रतिशत आबादी जब 10 से 20 रुपये प्रतिदिन में गुजर-बसर कर रही है, सारा देश सांस्कृतिक संक्रमण, बेरोजगारी, आंतरिक आतंकवाद और वैदेशिक आतंकवाद, घोर गरीबी, गांवों की खस्ताहाल हालत, बजबजाते शहरों और कस्बों से लहूलुहान हो उठा है, विदेशी कारपोरेट कल्चर हिन्दुस्थान और उसकी नियति के निर्धारकों राजनीतिक नेताओं और अफसरों को पूरी तरह से जब अपनी गिरफ्त में ले चुका है तब हमें तिलक की याद आती है। तिलक की ही याद क्यों ? क्योंकि यही वह अकेला शख्स था जिसने 100 साल पहले भारत की राजनीति को अपने मन और बुद्धि से सोचना सिखाया। हाँ ये तिलक ही थे जिन्होंने पहले पहल यह करके दिखाया था। उनकी सिंहगर्जना से ब्रिटिश हुकूमत हिलती थी और कांग्रेस का नरमपंथी धड़ा भी। आखिर यूं ही उन्हें तमाम ब्रिटिश दस्तावेजों ने 'फादर ऑफ इंडियन अनरेस्ट' अर्थात भारत में अशांति का जन्मदाता होने के खिताब से नवाज़ा नहीं था। यह उनकी लोकप्रियता का ही भय था कि ब्रिटिश हुकूमत को उन्हें गुपचुप कालेपानी जैसी कैद के लिए बर्मा (म्यांमार) स्थित माण्डले जेल रवाना करने पर मजबूर होना पड़ा।

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

तिलक के समय हिन्दुस्थान की राजनीतिक परिस्थिति क्या थी, उस पर भी निगाह दौड़ाना वाजिब होगा। कैसे नेता थे हमारे उस समय ! ऐसे जो सवेरे कहीं किसी क्लब में गोष्ठी करके ब्रिटिश हुकूमत को शासन संबंधी सुझाव और सलाह देने से अधिक कुछ करने में विश्वास नहीं रखते थे और शाम को ब्रिटिश हुक्मरानों के खैरकदम और जीहुजूरी में जो पलक पांवड़े बिछाकर खड़े रहने में ही अपना जीवन धन्य मानते थे कि कहीं साहब बहादुर उन्हें भी कहीं पर रायबहादुरी या सर का कोई खिताब अदा फरमाएंगे। कांग्रेस को उन्होंने क्लबनुमा थिएटर मंडली बना रखा था जिसकी हालत आज देश में चल रहे तमाम चैरिटी क्लबों के समान थी जो सरकार और समाज के साथ अपना पीआर जमाए रखने के लिए गाहे बगाहे मिलते-जुलते और अधिवेशन आदि करते रहते थे। अंग्रेज़ी राज मानो ईश्वर ने सदा के लिए हमारी नियति में लिख दिया था तब लोकमान्य का पदार्पण हिन्दुस्थान की राजनीति में हुआ। उस महान व्यक्तित्व की याद आज के संदर्भ में तो और भी प्रासंगिक हो उठती है क्योंकि उसी ने उन्नीसवीं सदी के उगते सूर्य को साक्षी मानकर पहले पहल कहा था कि अंग्रेजों तुम हमारे भाग्यविधाता नहीं हो, हमारी आजादी हमें सौंपकर तुम हम पर कोई अहसान नहीं करोगे, यह हमारा स्वराज है, सदियों से यह स्वराज हमारी आत्मा को परमात्मा से जोड़ने का साधन रहा है, तुम हमारी आत्मा पर राज नहीं कर सकते, तुम्हें हिन्दुस्थान से जाना होगा, जाना ही होगा क्योंकि स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम इसे लेकर रहेंगे।

स्वराज !!! छोटा सा शब्द, किन्तु मानव ही क्या मानवेतर अन्य योनियों, पशु-पक्षियों के जीवन के लिए भी सर्वाधिक गहन और महत्वपूर्ण इस शब्द के अर्थ को देश को समझाने के लिए तिलक महात्मा ने कैसा भीषण संघर्ष और संताप अपने जीवन में झेला इसे पढ़कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। ब्रिटिश हुकूमत और भारत के कुछ कथित राजनीतिक रहनुमाओं की षड्यंत्री राजनीति ने सन् 1908 में उन्हें 6 साल के लिए बर्मा स्थित माण्डले जेल पहुँचा दिया, जेल में रहने के दौरान ही उन्होंने अपनी धर्मपत्नी को खो दिया। इसके पूर्व अपने नरमपंथी साथियों के खिलाफ दिसम्बर 1907 के कांग्रेस के सूरत महाधिवेशन में ताल ठोककर वे खड़े हो गए। कहाँ-कहाँ उन्होंने संघर्ष नहीं किया। ब्रिटिश पराधीनता की चक्की में पिस रहे स्वदेशी शिल्पकारों, मज़दूरों, किसानों, मजलूमों की वे सशक्त आवाज बने। उनकी लोकप्रियता कैसी इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि जब उन्हें केसरी में ब्रिटिश शासन विरोधी संपादकीय लिखने और ब्रिटिश सरकार के खिलाफ हिंसक आतंकवाद और बगावत भड़काने के आरोप में सन् 1908 में कैद की सजा सुनाई गई, समूची मुंबई उस दिन ठप्प पड़ गई और मुंबई ही क्या समूचे देश में अंग्रेजी शासन ने अलर्ट की घोषणा कर दी। बैरकों में सिपाहियों को किसी संभावित विद्रोह को कुचलने के लिए तैयार रहने को सावधान कर दिया।

लोकमान्य को याद करने का मतलब आज क्या हो सकता है? इसे जानने के लिए हमें लोकमान्य के जीवन में झांकना होगा। वह जीवन जिसने आत्माभिमान शून्य, दिमागी तौर पर अलसाये, मुरझाये और गुलामी के बोझ से कांपते, कातर हिन्दुस्थान को सही मायनों में सोचना और बोलना सिखाया। तिलक की याद करना सिर्फ अतीत के बीते पन्नों को पलटना मात्र नहीं है, उनकी याद आज की तरंगित, उमंगों से भरी युवा पीढ़ी को, संसद में कलफदार धोती कुर्ता, पाजामा और पेंट-शर्ट पहले नेताओं को अपना जीवनोद्देश्य फिर से तलाशने की राह पर ले जाने का प्रयास भी है। यह उस विरासत को संभालने और संजोए रखने का प्रयत्न है जिसकी रक्षा के लिए महात्मा तिलक ने अपना जीवन अर्पित किया।

राजनीतिक दलों में पद को लेकर आज मारामारी हम देखते हैं यह मारामारी तिलक के समय विचारों के स्तर पर प्रबल थी। कांग्रेस पर उन तत्वों ने कब्जा जमा लिया था जो हिन्दुस्थान को अंग्रेजी राज के खिलाफ किसी निर्णायक जंग के खिलाफ खड़ा करने में बुद्धिमानी नहीं समझते थे। ऐसे तत्व 1857 की क्रांति की असफलता के बाद मुकम्मल आजादी यानी पूर्ण स्वराज की मांग को उतना ही गैर जरूरी मानते थे जितना जरूरी वे भारत के कल्याण के लिए अंग्रेजों की उपस्थिति को मानते थे। ...... कुछ साल पहले हमारे देश के एक वरिष्ठ केन्द्रीय मंत्री ने अंग्रेजों द्वारा सौंपी गई इस महान विरासत के लिए लंदन में कैसा धन्यवाद ज्ञापित किया था, उसे यहाँ दुहराने की जरूरत नहीं है, हां यह सच जरूर स्वीकार कर लेने की जरूरत है कि तिलक का कालखण्ड बीतने के 90 साल बाद भी यह कौम हिन्दुस्थान में खत्म नहीं हुई है जिसके खिलाफ तिलक जीवन भर संघर्ष करते रहे किंवा वह कौम तो और मज़बूती और कहीं ज्यादा प्रभावी ढंग से आज हम हिन्दुस्थानियों को उपदेश देती फिर रही है। यह वह कौम है जो यह कहने में कोई संकोच नहीं करती कि हे हमारे विधाता अंग्रेज भाइयों ! तुमने 17वीं शताब्दी में हिन्दुस्थान आकर हमारे ऊपर कितनी कृपा की, यह तुम्हारे 200 साल के कठोर शासन का ही प्रतिफल है कि हम हिन्दुस्थानी कुछ पढ़ लिख गए हैं अन्यथा अगर तुम न आए होते तो जरा सोचो हमारा क्या हाल होता ? तब न यह संसद होती और न यह बिजली बत्ती, दुनिया जरूर 21 वीं सदी में पहुँच गई हम तो वैसे ही आदम के जमाने में रह गए होते। तुमने यहाँ आकर जो कृपा की उसका क्या अहसान हम चुकाएं। हम तो बस यही कह सकते हैं कि तुम एक बार फिर आओ। .....

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

पाठक विचार सारणि

बड़े खेद की बात है कि बीजेपी के शीर्ष नेताओं में शामिल जसवन्त सिंह ने न जाने क्यों भारत विभाजन पर विवादित विचारों से ग्रस्त पुस्तक लिख कर राष्ट्र में एक नकारात्मक चर्चा को जन्म दिया। **आज जब राष्ट्र कश्मीर से कन्याकुमारी तक मुस्लिम आतंकवाद (जेहाद) से जूझ रहा है तो जिन्ना को 'दुश्मन से दोस्त' बनाने का क्या औचित्य है।** द्विराष्ट्र का विचार देने वाले मुस्लिम लीगी जिन्ना भारत विभाजन की ऐतिहासिक त्रासदी के पूर्ण रूप से जिम्मेदार थे।

लेखक लिखता है कि मुसलमानों को 'एलियन्स' समझा जाता है अर्थात् उनको दूसरे दर्जे नागरिक समझा जाता है और वह बहुसंख्यक हिन्दू समाज से भयभीत रहता है। जबकि वास्तविकता यह है कि आज जब भारत के प्रधानमंत्री कहते हैं कि 'देश के संसाधनों पर पहला हक मुसलमानों का है' तो फिर वे इससे क्या प्रमाणित करना चाहते हैं?

आज राष्ट्र में जहाँ-जहाँ मुसलमान बहुसंख्यक हैं वहाँ-वहाँ हिन्दू मारा जा रहा है या भगाया जा रहा है। जबकि हिन्दू बहुल क्षेत्रों में मुसलमान आन-बान-शान से रहता है। अन्य सभी लोग सलामवालूकुम या आदाब अर्ज करके उनसे मिलते हैं जबकि वह कभी 'जयश्रीराम' या 'जय माता दी' नहीं करता। इसके अतिरिक्त जगह-जगह निकलने वाली हिन्दू धार्मिक शोभायात्राओं पर वे आक्रमण करते हैं। समाचारों से यह भी विदित होता है कि प्राय: हिन्दू मुस्लिम दंगे की शुरुआत मुसलमान ही करते हैं। पुलिस पर व अन्य अर्द्धसैनिक बलों पर भी मुसलमान ही आक्रमण करने का दुस्साहस करते हैं।

किसी मुस्लिम बस्ती में पुलिस अपराधी पकड़ने जाती है तो उस पर ताबड़तोड़ पत्थर बाजी करके उन्हें सरकारी कार्यवाही नहीं करने देते और अपराधी को बचा लेते हैं। इस प्रकार की अनेक घटनाएं पिछले 50 सालों में समाचार पत्रों के माध्यम से संज्ञान में आती रही हैं।

अत: यह कहना कि मुसलमान हिन्दू समाज से भयभीत हैं तो सर्वथा अपने आपको धोखे में रखना होगा। आज भी अगर किसी सभा में हिन्दू जेहाद के विषय में बात करते हैं तो उस सभा में अगर एक भी मुसलमान बैठा होगा तो अधिकांश लोग कहेंगे कि ऐसा मत कहो मुसलमान बुरा मान जाएगा।

तीन राज्यों में आतंक का पर्याय बन चुका सोहराबुद्दीन को जिस पर हजारों रुपये का इनाम घोषित था, जब पुलिस मुठभेड़ में मार गिराया तो उस पर मुस्लिम-उन्मुखी राजनीति के कारण उन बड़े पुलिस अधिकारियों को जेल में डालकर मुकदमा चलाया जा रहा है, और कुख्यात सोहराबुद्दीन के परिवार को सरकार 10 लाख रुपये मुआवजा दे रही है।

वाह क्या विडम्बना है? **देश के लिए मर मिटने वाले बहादुर हिन्दू पुलिस अधिकारियों को प्रताड़ना व कुख्यात मुस्लिम अपराधी को पुरस्कार।** इसी प्रकार दिल्ली में पिछले दिनों बटाला हाउस में मारे गए पुलिस इंस्पेक्टर पर भी मुसलमानों व उनके तथाकथित सहयोगियों द्वारा आरोप-प्रत्यारोप लगा कर मुस्लिम आतंकवादियों को बचाने का भरसक प्रयास किया जा रहा है। क्यों जसवन्त सिंह जी को यह सब घटित हो रही राष्ट्रद्रोही गतिविधियां दिखाई नहीं दे रही हैं। जबकि वे लगभग 30 साल से राष्ट्रवादी पार्टी बीजेपी के नेता बने हुए थे। **अभी लगभग 15 प्रतिशत मुसलमान भारत में हैं और वे सरकार के साथ-साथ राजनैतिक दलों की आंखों के तारे हैं उन्हें एलियन्स या दूसरे ग्रह का नागरिक कह कर जसवन्त सिंह ने अपनी खोखली मानसिकता का परिचय कराया है या फिर 'जिन्ना की प्रशंसा' व 'मुसलमानों के प्रति भक्ति' पर कोई पुरस्कार की अभिलाषा जागी है।**

विनोद कुमार सर्वोदय

नयागंज, गाजियाबाद

पुस्तक समीक्षा

पुस्तक : **श्रीरामकथा की व्यापकता** लेखक : **श्री रघुनन्दन प्रसाद शर्मा**

प्रकाशक : **श्रद्धा प्रकाशन, 129-बी, एम.आई.जी. राजौरी गार्डन, दिल्ली**

सहयोग राशि : **250 रुपये, पृष्ठ-576** समीक्षक : **डॉ. महेश चन्द्र**

भारतीय संस्कृति के उन्नायक और संपूर्ण जीवन में समाज के लिए ही जीने वाले श्री रघुनन्दन प्रसाद शर्मा की लेखनी से अनेक उच्चस्तरीय ग्रंथ, स्मारिकाएं और पत्रिकाओं के विशेषांक निकले हैं जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं :-

प्रयोजनमूलक हिन्दी (सरकारी कामकाज में), हमारा सांस्कृतिक स्वर्ग : कैलास मानसरोवर, वैवस्वत मन्वतंतर में सृष्टि निर्माण - कहाँ, कैसे और कब?, भारतीय एकात्मता के अग्रदूत (आद्य जगद्गुरु शंकराचार्य), महापुराण सार, हिन्दू संस्कृति के

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

ग्रंथ, विश्वव्यापी भारतीय संस्कृति, स्मृतियों में भारतीय जीवन पद्धति, भारत के प्राचीन साहित्य में विज्ञान, भारत का आधुनिक इतिहास लेखन : एक प्रवंचना, हिन्दू विश्व : रजत जयंती विशेषांक, गंगाश्री धर्म संसद् विशेषांक, श्रद्धांजलि स्मारिका, प्रशासन में हिन्दी : सतत साधना के 25 वर्ष, एकात्मता दर्शन, आदि।

यशस्वी लेखक ने श्रीरामकथा की व्यापकता नाम से जो ग्रंथ लिखा है, वह रामकथा साहित्य की शृंखला में उसी प्रकार का है जिस प्रकार अनेक पुराणों में श्रीमद्भागवद् महापुराण है। लेखक ने श्रीराम कथा की व्यापकता सिद्ध करने के लिए ग्रंथ की विषयवस्तु को तीन खण्डों में प्रस्तुत किया है, यथा – 'रामायण : गाथा है भारत की सांस्कृतिक दिग्विजय यात्रा की', 'रामायन सतकोटि अपारा' और 'जिन्ह की रही भावना जैसी' । **प्रथम खण्ड** में श्रीराम कथा की व्यापकता और प्राचीनता बताते हुए विश्व के कोने कोने में यह कथा कैसे पहुँची, बताया गया है, **द्वितीय खण्ड** में विश्व की 52 प्रमुख भाषाओं की प्रमुख-प्रमुख 1000 से अधिक मौलिक और अनुवादित श्रीरामकथाओं के नाम उनके लेखकों सहित दिए गए हैं और **तीसरे खण्ड** में विभिन्न भाषाओं की लगभग 90 श्रीराम कथाओं में किस-किस रूप में श्रीराम और सीताजी को चित्रित किया गया है, बताया गया है। इसमें यूरोप की 12 यथा – अंग्रेज़ी, फ्रैंच, इटेलियन, रूसी आदि और एशिया की 16 भाषाएं यथा-चीनी, जापानी, बर्मी, मलय, ख्मेर, थाई आदि भाषाओं सहित भारत की संस्कृत, प्राकृत, पाली सहित 24 भाषाओं में लिखित रामकथाओं का सार 'वाल्मीकी रामायण' से अंतर बताते हुए किया गया है। विस्तार में जाते हुए लेखक ने पुस्तकों के लेखन के वर्ष का भी यथासंभव उल्लेख किया है।

पुस्तक में महाकाव्यों, नाटकों और विभिन्न विधाओं की रचनाओं का यहाँ तक की ग्राम्य गाथाओं के आधार पर मणिपुरी, मिज़ो, गारो आदि भाषाओं में लिखित ग्रंथों का भी सम्यक विवेचन किया है, जिससे यह पता चलता है कि लेखक ने अपनी वृद्धावस्था के अमूल्य वर्ष इस महाग्रंथ के लेखन में लगाए हैं।

डॉ. कृष्ण वल्लभ पालीवाल ने पुस्तक की भूमिका में यह सही लिखा है कि यह अविस्मरणीय प्रयास है। ऐसा लगता है कि श्री रघुनन्दन प्रसाद शर्मा ने इस महाग्रंथ को लिख कर अपने रघुनन्दन नाम को सार्थक तो किया ही है साथ-ही धन्य भी किया है।

विश्वास है कि गौरव घोष के पाठक इस पुस्तक को अवश्य मँगवा कर पढ़ेंगें और अपने ज्ञान की वृद्धि करेंगे।

पुस्तक का नाम : **आचार्य रघुवीर भारतीय धरोहर के मनीषी**

लेखिका : **डॉ. शशिबाला** प्रकाशक : **आदित्य प्रकाशन, एफ 14/65, मॉडल टाउन-2, दिल्ली-110 009**

मूल्य : **300 रुपये (सजिल्द)** समीक्षक : **डॉ. महेश चन्द्र**

अग्रेंज़ों के विरुद्ध लड़े जा रहे स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारत माता ने एक से बढ़ कर एक सपूतों को जन्म दिया है। भारत में वेदों के प्रति लुप्त हुई आस्था को जगाने वाले महर्षि दयानन्द जिन्होंने सुप्त भारतीय आत्मा को झकझोर कर स्व के प्रति सजग होने की प्रेरणा सारे भारतवासियों को दी उन्हीं की कोटि के पंजाब में आचार्य रघुवीर जैसे महापंडित ने भी उसी संग्राम के दौरान जन्म लिया। यह उल्लेखनीय है कि आचार्य रघुवीर के पिता भी महर्षि दयानन्द के प्रभाव में थे और उन्हीं के कारण पूरे परिवार में संस्कृत का गहरा प्रभाव था। आचार्य रघुवीर पर भी संस्कृत व्याकरण की सूक्ष्मता और वैदिक विचारों की गहनता का अमिट प्रभाव पड़ा। प्रस्तुत पुस्तक में भारतीय संस्कृति और संस्कृत की विदुषी डॉ. शशि बाला ने बड़े परिश्रम और गहन निष्ठा से आचार्य रघुवीर के व्यक्तित्व और कृतित्व का सजीव चित्रण किया है।

वैसे तो आचार्य रघुवीर का कृतित्व इतना विराट है कि उसे एक 180 पृष्ठों की पुस्तक में समेटना संभव नहीं है तो भी यह पुस्तक उनके कृतित्व की कुछ झलक देने में समर्थ हो सकी है। प्रारंभिक जीवन, यूरोप में किशोर रघुवीर, आचार्य जी का वैदिक कृतित्व, संस्कृत का उत्कर्ष, सरस्वती विहार की स्थापना, तिब्बत में भारत-भारती की गवेषणा, भारत-जापान के सांस्कृतिक संबंध, दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों में, चीन में संस्कृत ग्रंथों की खोज में, आचार्य जी का भाषा-दर्शन आदि अध्यायों में आचार्य रघुवीर जैसे महापंडित के जीवन के विभिन्न पहलुओं के साथ-साथ लेखिका ने उनके कृतित्व का व्यापक दर्शन कराने की चेष्टा की है जिससे यह पता चलता है कि वे कई दर्जन भारतीय और विदेशी भाषाओं के पंडित थे। वे प्रखर वक्ता थे। लेखिका ने यह सही लिखा है कि : "जब आचार्य जी किसी सभा में अपने सिद्धांतों का उद्घोष करते थे तो लगता था जैसे साक्षात् बृहस्पति देवताओं की सभा में आह्वान कर रहे हों, सचेत कर रहे हों।" डी.लिट् की उपाधि लेने के दौरान उन्होंने ईरानी, रूसी, लिथुआनियन, जेन्द, बुल्गार, गोथिक आदि भाषाओं का गहन अध्ययन कर लिया था। दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों में शीर्षक के अंतर्गत लेखिका ने एक स्मरणीय व्याख्यान दिया है जो इस प्रकार है : *जब आचार्य जी इण्डोनीसिया*

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

गये तो उन्होंने राष्ट्रपति सुकर्ण को इण्डोनीसिया के दो हज़ार प्राचीन पाण्डुलिपियों की सूची देते हुए कहा मुझे ये ताडपत्र ग्रंथ चाहिएं। राष्ट्रपति सुकर्ण चकित रह गये। पूछने लगे कि "क्या हमारे देश का साहित्य इतना समृद्ध है? मुझे तो पता ही नहीं था।"

विदुषी लेखिका ने पुस्तक में आचार्य रघुवीर के कृतित्व का दर्शन कराने के लिए अनेक दुर्लभ चित्र प्रकाशित किए हैं साथ-साथ उन अनेक शिलालेखों के चित्र भी दिए हैं जो आचार्य रघुवीर ने अपनी यात्राओं के दौरान चीन, तिब्बत, मंगोलिया, इंडोनीसिया आदि देशों में जाकर प्राप्त किए थे। उन्होंने ब्रह्म देश (म्यांमार) में बौद्ध धर्म के उत्थान के लिए अनेक प्रयत्न किए थे। कम्पूचिया में उन्होंने संस्कृत शिलालेखों का अध्ययन किया, रामायण के नृत्य देखे और पाण्डुलिपियों का विशाल संग्रह किया। लेखिका ने पुस्तक की भूमिका में लिखा है कि ''धीरे-धीरे मेरे मन में आचार्य जी की विराट् मूर्ति अंकित हो गयी थी, आज उसी को शब्द-रूप में प्रस्तुत कर रही हूँ, यह पुस्तक उस विलक्षण जीवन की समग्रता लिए हुए नहीं है, यह तो एक प्रारंभिक प्रयास है।" पाठकों से अनुरोध है कि उक्त पुस्तक अवश्य पढ़ें और उच्च कोटि के मनीषी के कृतित्व का दर्शन अवश्य करें।

Islamic Vs. British Rule in India

Dr. Shridhar Pant

Hindus have suffered the tyranny of both Muslim and British rulers. The basic difference between the two was that while loot and forced conversion /massacre were the chief concern of Islamic rulers, the British interest was centered on business exploitation and colonization. The commonality was that both were attracted to India because of its wealth. Flourishing agriculture, unmatched quality products from cottage industry and expanding trade, that brought gold and silver into the country from all over the world, was the magnetic force. It was for this reason that India was called the "golden sparrow". A famous Swiss writer, Bejoran Landstorm in his book entitled-The discovery of India , writes, "There were many routes and means but the objective always was only one- to reach the famous India that was overflowing with gold, silver, valuable pearls and stones, pleasant eatables, spices, clothes". Lord Clive as reproduced by Lajpat Rai in, England's Debt to India , page 24 said "India is the unparallel store of wealth, the country that will rule India will become the richest country of the world". Radhakumud Mukherjee in his History of Indian Shipping and Maritime Activity from the Earliest Time records, "For full 30 centuries, India stood out as the very heart of the old world, and maintained her position as one of the foremost maritime countries". Bombay and Bengal were famous for shipbuilding industry. Iron and steel industry too was famous. Even in 1842 when the Indian industry was sliding back Captain J.Kampwell wrote, "Even the best iron of England did not compare with the inferior quality iron of India "

As for the torture, while Islamic rulers looted temples, destroyed learning places, adopted open slaughter and sale of slaves, the British were (particularly the East India Company) no less cruel. While in other countries the slave system was abolished in the year 1833 yet in India forced slavery in plantations of tea, coffee and rubber continued. The slave labour was coercively carried over to far-off places like Caribbean islands, Trinidad , Jamaica etc. in the west and Fiji in the east. The farmers were forced to grow indigo (*Neel*). The torture on this account is very well recorded in the "Indigo Commission" established in 1860. It will suffice to prove this torture giving the statement of an ex- magistrate of Faridpur district. He said that before him were presented many farmers whose bodies were spiked by dagger for not accepting to raise indigo. We know that Gandhiji started his *satyagraha* here.

Brooks Adams in his famous book, Law of Civilization And Decay writes," The wealth stocked for centuries by crores of people was taken away to London by the British, like the wealth of the Greek and Pontius was usurped by the Romans" (Page 290-91). He quotes Lord Macaulay, "After the Plassy war (1757) over 900 boats were used to transfer the gold and silver coins from Murshidabad to Calcutta ."(Macaulay, Critical and Historical Ages" p.527.) Obviously this treasure finally landed in Britain . It is this capital that helped Britain develop its industry. In Britain up to 1760 wood was used to smelter iron ore. The weaving machine was invented by Hargreese in 1764. In 1768 James Watt invented the steam engine. In fact it is India that provided the capital, raw material and market for finished products.

The British authors claim that they brought peace and order to India . It is true that Muslim rulers were a terror and after the death of Aurangjeb in 1707 there was all round social disorder. U.S. Secretary of State for External Affairs, William Jennings Bryan commented on peace established by Britain in India in 1915

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

as: “If it (Britain) has done anything in the interest of India then it has extracted heavy price of the same. Where it claims establishment of peace among living persons, it has restored peace of the cremation ground to crores.” Even Mahatma Gandhi had to comment: “The peace established by the British in India is worse then warfare.” Deep mental effects are disastrous. Fear complex became the very character of the Indians. Fear from soldiers, police, every government servant, and every Whiteman got engrained into the Indian psyche. Fatalism became rampant. These were the natural outcome of prolonged hunger, deprivation and poverty.

With the advent of steam-driven ships the need for increased internal trade in India was felt. On the recommendation of India ’s Governor General Lord Harding in 1845 and Lord Dullhoji in 1853 the construction of railways started in 1853 itself. The objective was to collect and transport cotton to the ports. The steamers were used to take it to England . On return they were used to transport salt. To promote sale of British salt heavy duty was levied on Indian salt while the British salt was almost duty free. As we know in 1930 Gandhiji undertook Satyagraha against the salt tax. By the middle of the nineteenth century the Indian industry had been destroyed. This forced the workers employed in various industries to go back to land. Before the British rule land had little value. Labour was priced higher. The movement back to land led to the gradual fall in size of holdings. In 1793 the system of permanent settlement was introduced by Lord Cornwallis. Now the *zamindars* whose business was to collect rent in proportion of the produce were made land owners. In addition, the land revenue was increased. In the past farmers paid revenue in proportion to produce. Now revenue was paid as per land held and only in cash. It had to be paid even if there was no produce. The farmers had to borrow. The result was the growth of the moneylender class. When the farmers couldn’t return the loan taken against land it became the property of the *Mahajan.* In the past loan was given not against land but only on personal security. Both the *zamindars* and moneylenders became staunch supporters of the British regime. It may be noted that before the British, the land, the minerals and the forest belonged to the village community. The British declared them the state property. Hence neither wood nor minerals could be used by the people. Hence farming was the only option and it became overcrowded.

Durant, in his book: Our Oriental Heritage, p.441 records that the Greek Ambassador to India , Meghastanese held the view that “ India had never faced famines nor was there any shortage of nutrients.” The British got administrative powers in 1765. Just four years later there was a serious famine in Bengal . Similarly before the British handed over power in 1947 there was a serious famine in Bengal in 1942-43. India faced as many as 12 famines during 1765 to 1858. The deaths due to famines run into crores. One of the great achievements the British claim is to impart education to Indians. It will suffice to quote the leader of Independent Labour Party, and Member of British Parliament J.K. Hardy who in 1909 wrote: “It is often claimed that we (the British) brought education to Indians. As for the old states this claim is a baseless boast”. Max Muller on the basis of a Christian Missionary says, “In Bengal at that time there was a school after a population of 400. In Travancore universal education had been started in 1801 whereas in England the same was started in 1870. (Nehru Discovery of India, p324) According to Hardy, in Mysore and Baroda states education was free and compulsory. However by the time the British handed over power illiteracy had became rampant. Yes, the British initiated western type schools and colleges to man the administrative services. Macaulay is credited with introduction of the western type education system. The objective of Macaulay was to promote as “a class of persons, Indians in blood and colour, but English in taste, in morals, opinions and intellect”. In simple language it means colonizing the Indian minds for ever. The colonial rule ended in 1947 but with Pt. Jawaharlal Nehru at the helm a nexus between Macaulayian and Marxist academia perpetuated the English domination.

The foregoing observation not withstanding, the positive part of the British rule need not be lost sight of. The immediate impact was the subjugation of both Muslim and Hindus. This gave a level playing ground to the suppressed Hindus. Since the British needed English-knowing Indians as clerks it was the Hindus who got into these schools.

Another feature of the European nations was the urge for inventing and exploring. As a result the British explored every nook and corner of the country and brought into light many archeological sites which had almost been forgotten. Employing the Brahmins they resurrected and translated the Hindu scriptures. These positive contributions, however, in no way undermine the plunder of the country. The final; stroke was dividing the country on religion. The obvious objective was to keep the parts fighting among themselves so that none could ever standup to challenge the west.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

Assault on Hinduism by Rashtriya Sanskrit Sansthan

Dr. Indulata Das*

It is no secret that a deep-rooted world wide conspiracy to uproot Hinduism and eliminate the existence of the hoary Indian civilization is vehemently active. With every passing day there is a newer assault on it in one form or other. Hindus are humiliated, their divinities are ridiculed, their beliefs are despised and their revered ideals are denigrated. Our gods and goddesses are portrayed in the nude, pictured on shoes and toilet tissues. The characters of great personalities like Ramachandra etc. are abased by false attribution of vices on them.

When the assault on Hinduism is at the peak, when the survival of the same is gravely jeopardized, when standing united to face the fatal attack has been the only choice before every Hindu, the behaviour of many Hindus is maddening. Most of them have no concern about anything. Many of them are passive and reaction-less onlookers of the happenings of the surrounding. But the misfortune does not end here. Assault on Hinduism, although hard to believe, is receiving support from the most unexpected quarters. Many individuals and institutions who have an outward exhibition of protecting Indian culture or even officially assigned to protect the same are active participants in this wreckage brigade.

One such dazzling example is the action of the Rastriya Sanskrit Sansthan. Rastriya Sanskrit Sansthan is an institute which has been assigned with the sacred duty of protecting the culture of India through the promotion of Sanskrit. But see what it is really doing.

In the recent past Rastriya Sanskrit Sansthan has translated a book named 'Yajnaseni' originally written in Oriya and is based on the story of Mahabhata. The Vice Chancellor of Rastriya Sanskrit Sansthan Sri Vempaty Kutumba Sastry is the publisher of the translation. He is the initiator of the translation project also.

The book under reference is blasphemous to the limit. All the great characters of Mahabharata have been debased and gravely assassinated in the said work

Draupadi in the book has been depicted as a lustful lady who has been falling in love with any body and every body she comes across. There are so many examples of the blasphemous work which is full of immoral, unethical, misleading and untrue dirty descriptions which one would be ashamed to cite here. Needless to say that such immoral and indecent imaginations, sprung exclusively from the writer's mind and having no trace in the Mahabharata are meant to defame the high moral systems of Hinduism and blacken the highly ideal characters portrayed in our scriptures which people aspire to emulate.

And this book is fondly picked up by Sri Kutumba Sastry, Vice Chancellor of Rastriya Sanskrit Sansthan as his first choice for translation into Saskrit in a scheme he introduced for translation of a series of books from regional languages. One can guess what are the other books he must have chosen or in his mind for translation.

The choice of the book speaks volumes about Sri Kutumba Sastry's underlying motive and exposes his active involvement in the Hindu assault spree. It is also a testimony which certifies how he is dancing to the music of the anti Hindu work force working in the country.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

The misfortune does not end here. When the book was objected by some culture loving people, many so called Sanskrit scholars who are frequent beneficiaries of the Sansthan in one way or another , came forward with written approvals in favour of the book, on instruction by Sri Kutumba Sastry.

It is therefore the prayer of an anguished heart to all lovers of Hindu culture to immediately post their written protests to the Ministry of HRD to pressurize the minister to immediately withdraw the book (Sanskrit translation of Yajnaseni) and punish Sri Kutumba Sastry for his misdeed and misuse of power and save Hinduism from destruction. The matter should be publicized in every possible way. Some legal experts may think of some legal actions also.

**Qr. No. 5R9, Forest Park*
Bhubaneswar, Orissa

Crusade for Survival

Udalguri, Darang (Asom)

The Bodo villages were attacked by Bangladeshi Muslims on 3rd Oct. 2008, just after the completion of Ramjan and Eid on 2nd October. A counter was also given by the Bodos and the Assamese together while the affected people are from all the communities i.e. Bodo, Assamese, Bihari, Santhali, Garo, Bengalee and Nepali. About 96000 of those affected people are in 50 small and big relief camps in the districts of Udalguri and Darrang districts. On the other hand approximately 20,000 Bangladeshi Muslims are also taking shelter in some relief camps in Muslim dominated areas.

The growing Bangladeshi problem was opposed in Arunachal Pradesh a few months ago and they were driven out from the state who entered into Assam. After this the different Students Organization of Assam took the drive of detection in Assam in the month of July and August. It was largely opposed by the Muslim Organization and Assam Bandh was called on 13th August by AMSU (Assam Minority Students' Union) and on 14th August by MUSA (Muslim Students' Union of Assam). But it was ineffective and opposed by the people at Bhalukamari Hatkhola chowk in Udalguri district. In retaliation, the Muslim attacked the Hindu shopkeepers with traditional arms which was a preplanned one.

The Muslims planned to attack the Boros after the Eid which was revealed by some Assamese Muslims of Udalguri district of the Boros and Assamese on their contact. Accordingly they were also mentally prepared to face the attack. The Hindus and Christian villages were attacked from 2nd Oct. night, to 4th Oct. night, which were burnt and looted. They were in thousands and with traditional arms and sophisticated weapons as well when they attacked Sonaripara, Kuptimari and Jhargaon village on 3rd Oct. night, which were totally burnt down and an old woman named Keteri Boroof Jhargaon aged 75 years was burnt alive. They faced a good reply form the police personnel who were posted there who fought for four hours and fired 197 rounds of bullets to save their own lives. The villagers and the police personnel had witnessed that the attackers, who were with both traditional and sophisticated weapons with them, were shouting "Allah Ho Akbar", 'Age Barho', 'Ghar Khali Karo-Ham Jalayega' and they hoisted Pakistani flags at 2 places there.

The same was reported by the relief Camp inmates of different Camps that the Muslims were with arms, shouting 'Allah Ho Akbar', 'Pakistan Zindabad' and hoisted Pakistani flag. But it was denied by the Govt. of Assam and said it was not Pakistani flag but it was their religious one.

In support of the above 'Pakistani Daily' wrote in 8th Oct.08 with the heading 'Pakistani Flag is a symbol of Freedom in India' (WWW.DAILY.PK,File//k:\Pakistani Flag in India.htm) the news read as follows:-

"Depressed from how New Delhi is suppressing local Assamese people who want to carve a separate home land out of India, people in Assam waved Pakistan's flag in five districts. The Eastern India state is one of the dozen Indian states in the North and East where ferocious freedom movements are in full swing, demanding the right of self determination from Indian rule. As usual, the Indian government, blaming Pakistani agencies for the violence has ordered an immediate inquiry for this incident......."

So for 23 Non Muslims have died and 43 injured till 6th Oct. 2008. At present there are 96,090 inmates from 321 villages took shelter in 50 relief camps (Muslims camps are separate from this data).

It was observed that Muslims are getting support from the administration while the non Muslims are put under Curfew and their movements are being restricted. It was reported by the camp inmates that the

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

Muslim extremists are moving openly with sophisticated arms. Some of the examples of govt. supports to the Muslims can be sited as follows -

1. On 14th August 2008, Sri Dipak Rabha was killed at Bhalukmari chowk in front of Dr. Saddiq Ali Ahmed, S.D.P.O. of Udalguri.

2. On 4th Oct. 2008, Sri Francis Sangma (45), Sri Patros Marak (40) and Sri Naen Marak (44) from village Boruaneza (Ulubari/Khairsli), P.O.Bhakatpara, P.S.Dhula, Dist. Darrang, were killed by Muslims in the presence of Mohd. Imdadul Hussain, S.P.

3. When the Muslims were burning the houses of Hindus and Christians, the Police just remained silent, but when it was retailed they were checked by the police.

People lost their faith on the Govt Administration and preparing for their own safeguard. Youths are found working hard to guard their respective villages and their rice crop day and night. The total number of burnt villages are 22, which are as follows-

From Udalguri District :

1. Jhargaon 2. Sonaripara 3. Kuptimari 4. Sapmari 5. Nahibari 6. Simalguri
7. Falangsiguri 8. Dingdangpara 9. Amlaibari 10. Annaipara 11. Hajragaon 12. Akarabari
13. Batahbari 14. Kathalbari 15. Fakidia
16. Bhalukmari 17. Mohanpur 18. Kadamtal
19. Dalgaon-Tharaibari

From Darrang District

1. Mudaipara 2. Bhakatpara 3. Puniya

It is a matter of praiseworthy that different social organization and students' bodies are highly active in providing relief to the victims in relief camps.

They are collecting eatables and clothes in large quantity even from the village areas. It was also reported by the Managing Committee of Nalkhamara High School Relief Camp that the people of surrounding villages are taking utmost care for the inmates of relief camp by providing sufficient clothes and eatables. The organization active in the relief work are All Bodo Students Union (ABSU), All Assam Students Union (AASU), All Assam Gorkha Students Union, Bodo Sahitya Sabha, All BTAD Bengali Yuva Chhatra Federation, Bodo Baptist Convention, Udalguri District Christian Coordination Committee etc. Kalyan Ashram Assam has started its Medical services through a mobile medical van an preparing for other relief materials. The National Democratic Front of Bodoland (NDFB) which is in cease fire now has also provided relief materials.

As it was observed all communities and organization working together without any difference and a sense of nationalism is established in their mind. Also it was observed that the racial affinity is taking its shape barring the difference among indigenous faith followers and the Christians. It is a good sign of course.

Muslims used bow and arrows during their attacks on Hindus. It was made of Santhali design. It was reported that some of the Santhali villages are surrounded by Muslim population and so, Santhali people of those villages were compelled to help them during their attacks, for which the females and childern of Santhalis were made captive by the Muslims. Following the incidents, the involvement of Santhalis with the Muslim was smelt by the Bodo people. But the leadership of Santhal Sri Gopeswar Kisku, Vice President of Ad Santhal Samaj denied their involvement and said he himself will visit those villages if he will get any clue about it. The Santhali Youths were also found collecting relief materials from their own villages and depositing in relief camps. It is a matter of fact that even 3000 Santhals are also in relief camps with the Bodos and other communities.

Smt. Khauni Daimari, an oldlady from Khaouklachuba village (revenue village Chilabantha, Darrang Dist.) reported at Mudaiguri H.S. relief camp that their temple of Bathou was damaged by Muslims and Pakistani Flag was hoisted. Bathou Temple of Kuptimari village, 8 km from Udalguri, was also found damaged.

At Kharupetia town (Darrang dist.) the Durga idol was damaged and cow blood was poured on its mouth and shouted - "Kya Shakti hai is mein?

Sri Sansuma Khungur Bwisumatary (M.P., Kokrajhar LS) in his speech delivered at Mudaiguri H.S. relief camp on 7th Oct. 2008 said, "Flag of Pakistan on the Indian soil is a great threat to the unity and

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

integrity of India. It is an act of Muslim Fundamentalist and Jihadis. It is our land and it must remain ours for which we have to fight tooth and nail."

Mount Kailash : A cultural BharatMount Kailash

Regarded as the spiritual centre of the universe, Mount Kailash (21,778 feet), a mass of sheer black rock, is revered by Hindus, Buddhists, Jains and Bon-pos (followers of an ancient Tibetan religion). Hindus believe Kailash is where Shiva sits in a state of eternal meditation, holding the universe together with the force of his will. There have been no recorded ascents of the mountain. In 2001, China gave permission to a Spanish expedition to climb the mountain. However, the expedition abandoned their plans in the wake of widespread international protests.

Lake Mansarovar

At an altitude of approx 15,000 feet, Mansarovar is one of the highest freshwater lakes in the world. It covers an area of approx 320 sq. km. According to legend, Mansarovar was created by Brahma using his mental powers (hence manas=mind and sarovar=lake). Legend also has it that Parvati performed the penance that won her the hand of Shiva on its banks. Hindus believe their sins of many lives will be washed away if they bathe in the lake's icy waters. To the west of Mansarovar is Rakshastal, said to symbolise evil in the way Mansarovar symbolises good.

The importance of Mansrover/Kailash for the spirit and soul of 85 percent Hindus of India has never been properly acknowledged by the secular castes in the Post Independence period though the negotiations on the Mc Mohan line did make use of the regiments of Hindu religious centres totted through Himalayas, and Kailash Mansrover as the inalterable and principal limb of the Hindu culture. Our secular coots had to discuss their Mansrover. **The loss of Kailash Mansrover is the biggest tragedy that has ever occurred in India's existence sure nitrous of years ago.** Such a loss is spiritually choking the whole nation. The region which truly beloved to the India and indeed the whole world has been cordoned off by the heuristic Chinese. How long this attack on the Divine persists is any body's guess.

An Inergral part of Our Heritage

The geographical feature which dominates India most is the Himalayas. There are no mountain ranges anywhere in the world which have contributed so much to shape the life of a country as the Himalayas have in respect of Hindusthan. It is not only the political life of the people of Hindustan, but the religion, mythology, art and literature of the Hindus that bear the imprint of the great mountain barrier. To the Hindus the Himalayas have been a perpetual source of wonder and veneration. To the people of the south, a thousand and five hundred miles away, to the men of the seacoast, to the dwellers of the desert land of Rajputana no less than to the inhabitants of the Gangetic valley the Himalayas have been the symbol of India. The Hindus have invested it with an element of the divine: it is *devata* — a fraction of divine majesty.

It is the abode of the gods to the Hindus, not the friendly Olympus of the Greeks, but the inaccessible seat of the great Siva. From one end to the other, it is studded with sacred places of pilgrimage—Amarnath, Jwala Mukhi, Hardwar, Kedanath, Badrinath, Pasupat and rest and above all the magnificent and isolated peak of Kailas, the unapproachable seat of the Great God himself. Parvati, the consort of Siva, the deviwhose worship in different forms constitutes so much of popular Hindusim, is the daughter of the mountain god. One of the great peaks, Gauri Sikhar, identified in popular mind with Everest, is held sacred as the place of her penance. The holy Ganges takes its rise in the Himalayas and girdles it for over 500 miles before it streams into the plains of Hindustan to fertilise and sanctify its soil. The Jumna and the Saraswati, the Brahmaputra and the Indus and most of their tributaries on which depends the life of India, all have their origin in the Himalayas. Sri Krishna claims in the *Gita:* "Among mountains I am the Himalayas." In a very special measure the Himalaya is India's national mountain as the Ganges is its national river. The popular mind, not only in India but elsewhere has from time immemorial identified the Himalayas with India. The very description of India which has come down to us by tradition is Himavat-Setu Paryantam, from the Himalayas to Rameshwaram.

The conquest of the lower regions of the Himalayas and the exploration of the great range itself must have been acts of high adventure in the dawn of Indian history. When the story of India unfolds itself we find flourishing Hindu kingdoms already established in Kashmir and Nepal, both being valleys ensconced

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

in the Himalayas. The kingdoms of Dwigarta, Trigarta and Madra in the sub-Himalayan regions are already famous in the time of the Mahabharata.

Beyond its lofty peaks they passed towards a sea of sand. The holy lake of Manasarowar and the great kailas itself, both on the Tibetan side, had become part of Sanskars of Bhartiya people long before the Christian era.

The gorges and the routes across the Himalayas were also known and explored by that time. Kalidasa in the *Meghaduta* gives a description of the gorges through which the cloud has to pass to cross the Himalayan range and reach the mysterious city of Alka, which mythology locates near Kailas. In the 6th, 7th and 8th centuries we have ample literary evidence of Indian rulers annexing Himalayan kingdoms. Bana's description in *Harsha Charita* of the conquest of Kashmir and Nepal by Sri Harsha shows that these kingdoms had long ago been incorporated into the historic conception of the homeland of the Hindus. This must indeed be considered an epic story, for it must have taken centuries of undaunted effort before the great mountain range was so fully explored by the Hindu explorers of those days.The dominance of this great mountain range, on the mind of the Hindus has only increased with time.

The *Meghahuta* —or the cloud messenger is no less a tribute to the majesty of the Himalyas. The theme of the poem is the message that a Yaksha, a resident of Alaka, near Kailas, living a life of exile in the Vindhyas, sends to his beloved through a cloud. Wherever the Hindus colonised they took with them their love of the Himalayas.

Nor is it to be forgotten that the temple in which the king of Siam is crowned even today is known as Mount Kailas.

courtsy: H.T.

Editors response **Below is a belated reaction to an article 'cracking India' by Bhiku Parekh which appeared, in The Indian Express, New Delhi. August 27, 2008 on p. 11**

It is acknowledged that when Bhikhu Parekh writes it carry's weight. But some strands need to be extricated from its weight. His model of secularism ignores Hindu's spirit of secularism. He should answer a question how to stop intolerance from decimating tolerance. I know what is in his mind as an answer - 'intolerance is self destructive'. By that time will it not have effaced a civilisation and by what yard stick he has preferred pseudo secularism of congress and dismissed B.J.P's secularism as 'no secularism'. As a political scientist it appears he is subjectively attached to some kind of Nehruism. Did Nehru tame religious passions or sowed the seeds of another post Independence chapter of communalism while opening the door for further partition of of the country? Is Muslim community a minority or a perpetual state in the making? Is scientific temper an invention of Nehru or is it a characteristic of Hindus? His four criticisms need to be stated again in critical light. Hinduism reconciled the scientific temper with Dharma while not separating it from the state. But he rightly observed that a state which separates 'religion' has no authority to venture into the reform of Hindu law. And the third by leaving Muslim personal law alone he was inconsistent with the equality of religions. Though one wonders where is the equality of all religions except in the mythical sense promoted by politicians. He has interstood well that 'Hindus felt shy and nervous when expressing their cultural identity and began to develop a sense of victim hood in their own country'.

His description that B.J.P. is not secular at all despite its belief in common single civil code and the record of six years rule, seeks to dismiss an issue altogether. He has got it wrong that Indian civilisation is plural. It is Hindu civilisation which is marked by pluralism and challenged by Monolitic Islamic civilisaion. It is Hindu who is plural not an Indian, and Muslim is the monolith. Let him try to use this premises and all his subsequent comments become flawed. Muslim alienation is not a new thing, they are already alienated where ever they are in minority whether it is Europe or any other country which is not a Muslim Majority country. Please don't blame B.J.P. for their alienation. Mr. Bhikhu Parekh you are dragging B.J.P. unnecessarily in the creation of a mess in Kashmir which is the work solely of Congress in general and Nehru - Abdula in particular. If political parties have drifted please try to find its cause in the manner we are governed. If Mr. Bush feels and acts like Mr. United States, can you say the same thing for Man Mohan Singh or any other Prime Minister of India except Indra Gandhi and A.B. Vajpayee. With the knowledge of the history of Islam and of their metaphysics, I wonder how you talk of the integration of Muslim community. If they are integrated they will no longer be Muslim, or it will all become an Islamic

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

world. National histories take their own time to resolve such contradictions, which is also the time it takes to reconcile the religious ideologies. Is their any hope? Judge for your self.

-Bhiku Parekh is a Labour member of the House of Lords and professor of political philosophy at the University of Westminster.

Quotations

We don't run the BJP, which is an independent political outfit. We also don't have the time to run it.
RSS Sarsanghchalak Mohan Madhukar Bhagwat
Pioneer, September 13, 2009

Diary of Events

June 1 Top ULFA commander Paresh Baruah, who has been hiding in Bangladesh for many years now, is known to be in China for about a month now, intelligence agencies have told the government. *The Indian Express, New Delhi, p. 1.*

_________ A defiant Israel has rejected US demands to halt all settlement activity in the occupied territory of West Bank, terming the American stance as unfair and tantamount to ‘expulsion’. *The Pioneer, New Delhi, p. 12.*

_________ The drought in Uttarakhand has completely dried out the celestial Alaknanda for a distance of about 10 km between Pandukeshwar and Vishnupryag in Chamoli district. Thanks to the prevailing drought and building up of a hydel power project along the river valley, the Alaknanda - is dry. *The Pioneer, New Delhi, p. 1.*

June 2 Washington: China is providing assistance to Pakistan in developing a plutonium-based nuclear weapons programme, a congressional report has told US lawmakers. *The Times of India, New Delhi, p. 20.*

_________ Senior BJP leader LK Advani and party president Rajnath Singh called on RSS chief Mohan Bhagwat to discuss the reasons behind the party’s defeat in the Lok Sabha election and the future course of action for the revival of the BJP’s fortunes. *The Pioneer, New Delhi, p. 5.*

June 3 In a glaring example of the deteriorating law and order situation in the holy town of Puri, Guru Ramcharan Das (61), popularly known as Mouni Baba was brutally killed in the morning while he was having morning walk near his Sidhamavirpatana house under Kumbharpara police station. *The Pioneer, New Delhi, p. 4.*

_________ Religious leader who participated actively in the protest against the killing of Laxmanananda Saraswati last year was chased and hacked to death by unidentified assailants in Puri. *The Indian Express, New Delhi, p. 8.*

_________ More antiquities were discovered by the Archaeological Survey of India from the hillock near Guwahati, where 17th century cannon balls tumbled out after a bull gore a portion. The cannon balls, the researchers believe could be linked to the Battle of Saraighat in 1671 fought between the Ahoms and the Mughals. *The Pioneer, New Delhi, p. 1.*

June 4 High-profile BJP general secretary Arun Jaitley would be Leader of the Opposition in the Rajya Sabha and Sushma Swaraj will be Deputy Leader of Opposition in the Lok Sabha. *The Pioneer, New Delhi, p. 1.*

June 5 The Maoists have threatened to kill the newly elected MLA from G Udyagiri of Kandhamal Manoj Pradhan. Besides Pradhan, four members of the Bajrang Dal also figure in the hit-list. It was alleged that the Maoists getting support of a few

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

churches have started targeting members of the various Hindu outfits. *The Pioneer, New Delhi, p. 1.*

June 6 The VHP has threatened to launch a nation-wide agitation if the Pak government failed to protect minorities in the state. The VHP also held New Delhi responsible for the miserable plight of the Sikh community in the Swat valley of Pakistan, where the community was forced to pay 'jazia'. *The Tribune, New Delhi, p. 6.*

June 7 The Rameswaram temple in South Tamil Nadu has a mysterious patron in a Swiss lady, Elizabeth Ziegler, who has donated Rs. 2.08 crore, besides providing Rs. 4 to 5 lakh every year from 2006. *The Tribune, New Delhi, p. 2.*

June 9 Fake drugs manufactured in China are being pushed into various African countries with the 'Made in India' tag. Proof in hand, India registered 'strong protest' with China. *The Times of India, New Delhi, p. 1.*

June 13 Kanchi Shankaracharya Jayendra Saraswati vehemently opposed the impending visit of United States Commission on International Religious Freedom (USCIRF) to India, by saying that it was nothing but "an intrusive mechanism of a foreign Government to interfere in the internal affairs of this country". *The Pioneer, New Delhi, p. 7.*

June 15 Protesters set fires and smashed store windows in a second day of violence as groups challenging President Mahmoud Ahmadinejad's re-election tried to keep pressure on authorities that have responded with anti-riot squads and blackouts of Web networks. *The Pioneer, New Delhi, p. 11.*

_________ RSS ideologue M G Vaidya today took digs at the party and asked it to "quit the Hindutva agenda" so that the "Trinamool Congress, Biju Janata Dal and Telugu Desam will once again happily go with the BJP." Vaidya, criticised L K Advani, for dissociating from the main party agenda which he claimed led to its poor show in the elections, said if the party now abandoned Hindutva "its umbilical cord with the RSS will automatically fall'. *The Indian Express, New Delhi, p. 1. & 2.*

June 17 When the entire Parivar is busy guessing the reasons that led to the BJP's defeat in the election, Vishwa Hindu Parishad (VHP) general secretary Praveen Togadia has come out with his analysis: The BJP did not address its core constituency and was pre-occupied in projecting an individual and so it lost. *The Pioneer, New Delhi, p. 5.*

June 18 Tens of thousands of supporters of defeated Iranian presidential candidate Mir Hossein Mousavi staged a protest rally in Tehran against the election results. Street battles in Tehran killed at least seven people according to state media. Other protests have flared up in cities across Iran. *The Hindsutan Tmims, New Delhi, p. 15.*

June 19 Pakistani Hindus keep ashes of their relatives for months or even years waiting for an opportunity to visit India for performing the last rites at Hardwar. They keep ashes of their ancestors stored in temples of their localities till they get a visa, members of a Pak Hindu pilgrims group currently on visit to India, told The Tribune. *The Tribune, New Delhi, p. 6.*

_________ Lawyers practising in Delhi have appealed to Chief Justice of Delhi High Court AP Shah to allow them to argue their cases in the national language. Stating that language is the medium exchanging thoughts and not a status symbol, a lawyers' body,

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

the All India Lawyers Union (AILU) has said that Hindi should get its due respect. *The Pioneer, New Delhi, p. 3.*

_________ Emerging from the cabinet meetings held at Prime Minister's office, in Khatmandu, Nepal Minister for Information and Communication Shakar Pokharel said: "Today's meeting decided to revoke the erstwhile government's decision to sack Nepal's Chief of Army Staff Rookmangud Katawal." *The Tribune, New Delhi, p. 15.*

June 20 The Bandra police filed a case against film star Shah Rukh Khan for "outraging religious sentiments". The complaint was registered by the Mumbai Aman Committee, a religious organisation, in objection to his remark in a recent magazine interview in which he listed Prophet Mohammed as one of the most unimpressive personalities in history. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 1.*

_________ After sports minister M.S. Gill called for renaming Delhi as Dilli, the state unit of the Vishwa Hindu Parishad (VHP) demanded that the Capital be renamed Indraprastha. Their logic: Indraprastha is the oldest name of Delhi, since the days of the *Mahabharata*. The VHP said the historical identity of Delhi could only be restored if it was renamed as Indraprastha. It called on Gill to take the initiative in renaming the Capital. *The Mail Today, New Delhi, p. 6.*

_________ Mohd Omar Madni, a suspected militant, has disclosed about the links between Pakistan-based terror outfit Lashker-e-Taiba and Maoists in Jharkhand, investigators told a court in New Delhi. *The Tribune, New Delhi, p. 2.*

June 21 Virtually daring the BJP to snap links with the RSS, former party ideologue KN Govindacharya has said the RSS can "walk straight without the crutches of the BJP". *The Tribune, New Delhi, p. 2.*

June 22 Saina Nehwal's became the first Indian shuttler to win a super series event. Saina, 19, ranked eighth in the world, upset third seed Wang Lin of China 12-21, 21-18, 21-9 to lift the Indonesian Open badminton title. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 1.*

June 23 The Islamic burqa is "not welcome" in France because it is not a symbol of religion but a sign of subservience for women, President Nicolas Sarkozy said today. "We cannot accept to have in our country women who are prisoners behind netting, cut off from all social life, deprived of identity," he said. *The Tribune, New Delhi, p. 19.*

June 24 Rashtriya Swayamsevak Sangh (RSS) chief Mohanrao Bhagwat told BJP top brass not to compromise with its core ideology of 'Hindutva' and to remain firm on 'Hindu' way of life in order to realise the dream of strong 'Bharat'. *The Pioneer, New Delhi, p. 6.*

June 25 Even as UP BJP was keen to dump Varun as no-good, but The Sangh Parivar has rallied behind the young MP, who is facing the wrath of party elders for "having spoken too quick, too much and out of turn". The development is interpreted as a clear snub by the parivar to the state BJP unit for its attempts to marginalise the young MP, post-parliamentary polls. *The Times of India, New Delhi, p. 12.*

June 27 RSS ideologue MG Vaidya, said the educational reforms being mooted were "an attack on the diversity of the country". Asked why did the RSS, which otherwise favoured a centralised approach towards solving larger problems, favour a "decentralised, localised approach" on this issue, Vaidya said: "We believe in unity, not

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

uniformity", Vaidya was opposed to the idea of "doing away with the examinations". *The Indian Express, New Delhi, p. 4.*

June 28 Chennai: A largely intact piece of pottery with a significant inscription in Tamil-Brahmi and the symbol of a gem or bead was found this week from a burial site at Porunthal village on the foothills of the Western Ghats. K. Rajan, Head of the Department of History, Pondicherry University, who directed the excavation, called the discovery of Tamil-Brahmi script "very important". *The Hindu, Gurgaon, p. 18.*

June 29 An unidentified caller claiming to represent the Taliban demanded Rs 6 million as "jiziya" from the minority Hindu community of Battagram district in Pakistan's North West Frontier Province. The caller made the demand during a phone call to local Hindu leader Parkash. He asked Parkash, a doctor, to collect Rs 6 million from the Hindus in Battagram and pay the amount to the Taliban. *The Pioneer, New Delhi, p. 12.*

_________ The Centre has refused to clear controversial amendments to the Madhya Pradesh Religious Freedom Act, 1968. *The Indian Express, New Delhi, p. 1.*

July 1 Around 13,500 pilgrims performed darshan at the holy cave shrine of Amarnath yesterday, which included 5,661 pilgrims who had reached the cave from Baltal route and over 6,100 yatris via Pahalgam route. *The Tribune, New Delhi, p. 6.*

July 3 Maha govt has ordered CID to check if Muslim boys are enticing Hindu girls to marry as part of a 'conspiracy'. *The Times of India, New Delhi, p. 7.*

_________ Renowned poet-lyricist Gulzar has expressed concern over the overwhelming influence of cinema on various aspects of life and underlined the need to protect the culture from its effects. Inaugurating a two-day seminar on "Narrating and translating women's cultural heritage in Chamba" at the Indian Institute of Advanced Study Shimla, Hindi film music was posing a threat to folk songs and "remix music culture" was "vandalising" old melodies. *The Tribune, New Delhi, p. 10.*

July 6 Advani's call triggered a serious debate about the possibility of 'error' and deliberate misuse in the functioning of EVMs. Even as the CPI(M), JD(S) and LJP backed his suggestion for re-introduction of ballot papers in place of EVMs. *The Pioneer, New Delhi, p. 1. & 4.*

_________ Uma Bharti says she has 'great respect for Manmohan Singh', he, not the BJP, can resolve Ayodhya. *The Indian Express, New Delhi, p. 1. & 2.*

July 8 A new wave of violence hit the capital of the Chinese region of Xinjiang as thousands of angry Han Chinese rampaged through Urumqi, many smashing up Uighur stores and seeking vengeance for Han deaths at the weekend. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 1. & 15.*

_________ Noted yoga exponent Baba Ramdev moved the Supreme Court with a special leave petition (SLP) challenging the recent Delhi High Court judgment decriminalising sexual relationship between two consenting adults in private. Ramdev's view is that "homosexuality is a disease that is curable". *The Times of India, New Delhi, p. 9.*

July 9 "As per the Geological Survey of India (GSI) studies, the Gangotri glacier has receded at the rate of 18.80 metres per year between 1935 and 1936. Studies by the Department of Science and Technology reveal it as receding at the rate of 17.15 metres

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

per year from 1971 to 2004. Another study estimated a retreat of 12.10 metres in 2004-05." *The Pioneer, New Delhi, p. 1. & 4.*

_________ The BJP trained guns at the UPA Government for not giving its consent to a proposal for installing a memorial for freedom fighter Vinayak Damodar Savarkar in the French city of Marseilles. BJP MP Gopinath Munde raised the matter in the Lok Sabha during the zero hour saying 100 years ago on this day Savarkar had escaped from a British ship, which had docked near Marseilles, when he was being brought to India after being arrested in London for his anti-British activities. *The Pioneer, New Delhi, p. 5.*

July 11 Nearly 45 years after former PM Lal Bahadur Shastri died in Tashkent, mystery continues to shroud the circumstances around his death. In reply to a RTI query, the PMO said it had one document relating to Shastri's death but refused to declassify it. *The Times of India, New Delhi, p. 11.*

_________ Chinese authorities banned prayer gatherings at mosques here the principal day of prayer for Muslims, as security officials tried to prevent further ethnic violence in Xinjiang. *The Tribune, New Delhi, p. 16.*

July 12 China says riots toll 184, exiled leader counts thousands. State media adding that most of those killed were Han Chinese in the first ethnic breakup of the number since communal violence. *The Times of India, New Delhi, p. 12.*

July 13 Recession has "shut the Chinese exports shop", creating an "unprecedented internal social unrest" which in turn was severely threatening the grip of the Communists over the society. *The Tribune, New Delhi, p. 16.*

_________ Standing tall and dominating the famous Tiger Hill on the Line of Control (LoC) is a grim reminder of the Kargil war. Point 5353, the highest peak in the region which has a clear view of the national Highway 1 D, remains occupied by Pakistan even a decade after the battle. *The Indian Express, New Delhi, p. 6.*

July 15 The worlds 'Islamic fundamentalists', used worldwide to refer to the Muslim terrorists groups, have become a taboo in Assam Assembly after the Speaker TB Rai expunged the word 'Islamic' from the day's record proceedings. *The Tribune, New Delhi, p. 2.*

July 16 India has been raising with China the issue of Pakistan's "illegal" cession of part of territory occupied in Kashmir under the China-Pakistan "Boundary Agreement", the Lok Sabha was told today. *The Tribune, New Delhi, p. 14.*

July 17 The main opposition Telugu Desam party (TDP) has demanded that Electronic Voting Machines (EVMs) should not be used in the forthcoming elections to the Greater Hyderabad Municipal Corporation (GHMC) in view of the doubts being raised about its efficacy in reliable recording of votes. *The Pioneer, New Delhi, p. 5.*

July 18 RSS ideologue M G Vaidya says the larger points raised by Shourie, that ideology must remain the mainstay of any political party, are extremely important. *The Indian Express, New Delhi, p. 4.*

_________ The Maharashtra unit of the BJP demanded the Malegaon blast accused Sadhvi Pragya Singh Thakur's lawyer Ganesh Sovani be given security cover after reports that he was under threat from the Chhota Shakeel gang. *The Indian Express, New Delhi, p. 9.*

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

July 19 The Vishwa Hindu Parishad (VHP) has spelled out its stand on homosexuality: "it's a foreign disease and a social crime." "Granting a legal sanction to homosexuality will affect family lines, and disintegrate the society," VHP leader Dilip Khandelwal told The Sunday Express. *The Indian Express, New Delhi, p. 4.*

July 22 The CPI (M)-led LDF Government in Kerala is planning to start a financial institution based on Islamic banking principles. It has already formed a promoters' committee as part of the initial procedures. *The Pioneer, New Delhi, p. 7.*

_________ Muslim model from Singapore has been sentenced to flogging by a Malaysian Islamic court after she confessed to drinking beer at a nightclub here. *The Pioneer, New Delhi, p. 12.*

_________ Gangubai Hangal a great singer of her generation died at the age of 96. She was known for her harmonious recital of rage Shuddha Kalyan, raga Abhogi and raga Shankara and it is these song that will continue to remind us of her charismatic personality. *The Pioneer, New Delhi, p. 4.*

July 24 VHP national vice president Omkar Bhave passed away following a brief illness. He was 85. "Bhave, a bachelor, was a lifetime *pracharak*. He devoted his entire life in serving the nation," Bansal said. Born on July 26, 1924 at Azamgarh district of Uttar Pradesh, Bhave joined RSS in 1938, and became a lifetime *pracharak* of Sangh and served the organisation in various capacities. Bhave actively participated in Ram *Janma Bhumi* movement. *The Pioneer, New Delhi, p. 7.*

_________ Prime Minister Manmohan Singh's government has mostly looked away since 2004 when it came to observing the anniversary of the BJP government-era war. President Pratibha Patil was requested to come to Drass but declined, army sources said. Congress MP Rashid Ali called it "Bharatiya Janata Party's war". Coal Minister Sri Prakash Jaiswal said he did not know about the anniversary. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 1. & 4.*

_________ Getting past the three-tier security system, the snake-believed to be a venomous cobra-was seen by two cleaners around 8 am near Chief Minister Naveen Patnaik's desk. Patnaik and other legislators were not present in the House at the time. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 8.*

July 25 Allahabad: The Allahabad high court quashed the judgment delivered by a single judge of the same HC on April 5, 2007, holding that Muslims in Uttar Pradesh were not a religious minority. *The Times of India, New Delhi, p. 11.*

July 27 The INS Arihant, India's first nuclear submarine that was till now known by the code name S2, was launched at a simple ceremony in this port town with the traditional breaking of a coconut of its hull by Prime Minister Manmohan Singh's wife, Gursharan Kaur. This gives India the ability to launch a 'second strike" nuclear attack from land, air and now, the sea. *The Indian Express, New Delhi, p. 1.*

July 28 A report published by the Rashtriya Sewa Bharti, an outfit of the RSS, says that the activities of the Rashtriya Swayamsewak Sangh (RSS). This year, 10,479 Swayamsevaks from 6,982 places participated as trainees in the *'Pratham Varsha'* (first year) Sangh Shiksha Varg, which is a part of a three-year course. 2,581 Swayamsevaks participated in the *'Dwitiya Varsha'* (second year training), while 973 Swayamsevaks completed the '*Trutiya Varsha'* (third year) training. *The Pioneer, New Delhi, p. 7.*

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

July 29 The Modi government has cited terrorism as a key justification for its controversial Gujarat Control or Organized Crime (GujCOC) Bill, passed unanimously by the assembly. "Organized crime and terrorism", has been added, to its original form. *The Pioneer, New Delhi, p. 1.*

July 30 Tokyo: Nearly 10,000 Uighurs involved in deadly riots in China's northwestern Xinjiang region went missing in one night. "Kadeer said in Toky. "If they are dead, where are their bodies? If they are detained, where are they?" *The Times of India, New Delhi, p. 20.*

July 31 The Madhya Pradesh government's directive to state teachers to compulsorily recite "Bhojan Mantra" before meals during its special training programme has angered the Muslim community whose religious heads, said today they will ignore it. *The Tribune, New Delhi, p. 16.*

August 1 The stand-off between the Archaeological Survey of India (ASI) and a section of the Muslim population in South Delhi's Mehrauli area continues. The Jamali Kamali mosque is listed by the Waqf Board as a mosque, but the ASI has listed it as a protected monument. *The Indian Express, New Delhi, p. 3.*

_________ S Chandrasekhar, Astrophysicist has provided the strongest evidence yet that dark matter must exist. It has independently confirmed the existence of dark energy and provided astonishing images of titanic explosions produced by matter swirling towards supermassive black holes. *The Mail Today, New Delhi, p. 11.*

_________ Farmers of the state may head for Mongolia soon with the Ministry of External Affairs considering a proposal to send them to farm land in that country for six months every year. *The Tribune, New Delhi, p. 1.*

August 2 A day after a Mumbai special court dropped charges under MCOCA against Malegaon blast accused Sadhvi Pragya Thakur and Colonel Srikant Purohit, the BJP said the "fictional myth" about Hindu terror had been 'smashed'. *The Pioneer, New Delhi, p. 5.*

August 8 Six eminent personalities and Nominated members bade farewell to the Rajya Sabha on completion of their six-year term. They included Chandan Mitra, Bimal Jalan, Hema Malini, Dara Singh, Ram Jethmalani and Narain Singh Manaklao. *The Pioneer, New Delhi, p. 5.*

August 10 The Congress-led (UPA) is working hard for *'khaas aadmi'* (special people) instead of *'aam aadmi'* (the common man), said senior Communist Party of India-Marxist (CPI-M) leader Brinda Karat. *The Pioneer, New Delhi, p. 6.*

_________ The Vishwa Hindu Parishad will stage two separate 'silent protests' in Bhubaneswar and Kandhamal on August 13 to mark the first death anniversary of Laxmanananda Saraswati and four of his disciples, who were allegedly killed by Maoists last year. The day will be observed as 'Day of Sacrifice'. *The Indian Express, New Delhi, p. 5.*

August 12 New Delhi: An article on a quasi-official Chinese website has detailed a roadmap for breaking up India. "...China in its own interest and the progress of whole Asia, should join forces with different nationalities like Assamese, Tamils, and Kashmiris and support the latter in establishing independent nation-states of their own, out of India," the article said. *The Times of India, New Delhi, p. 15.*

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

August 15 China has turned down India's request to declare Masood Azhar, chief of Pakistan-based Jaish-e-Mohammed terror group, a terrorist. *The Times of India, New Delhi, p. 15.*

August 16 Rashtriya Swayamsevak Sangh chief Mohan Bhagwat argued that the BJP was an independent, autonomous organisation capable of managing its affairs. *The Hindu, Gurgaon, p. 8.*

_________ The number of minority concentration districts (MCDs) in the country would rise beyond the existing 90, with the government making changes in the eligibility criteria for such a district. *The Tribune, New Delhi, p. 2.*

_________ In comments that could reignite the *burqa* controversy in France, a Muslim woman Minister from the country has sought a "ban" on the veil arguing that it could help stem the spread of radical Islam. *The Pioneer, New Delhi, p. 7.*

August 18 Sushma Swaraj Deputy Leader of opposition in the Lok Sabha said, "To glorify Jinnah and to blame Sardar Vallabhai Patel for partition is against the ethos of BJP." RSS was equally quick in disagreeing with Singh's contentions. *The Times of India, New Delhi, p. 20.*

_________ Americans are becoming more like Hindus and less like traditional Christians in the way they think about God, themselves, and eternity, a Newsweek essay has said, citing new surveys and poll data. *The Times of India, New Delhi, p. 26.*

August 19 The man who paints naked women has had a taste of his own medicine. In an ongoing exhibition, Delhi-based artist Pranava Prakash has shown MF Husain being painted stark naked by a female artist. Titled *Your Turn*, this painting is a response to Husain's "unnecessary and disrespectful objectification of women" says the artist. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 1.*

August 20 Sanskrit poet Satya Vrat Shastri was conferred the Jnanpith award for his contributions to the enrichment of the language by his disciple and Princess of Thailand Maha Chakri Sirindhorn, Shastri became the first Sanskrit poet to be conferred the award since its inception. *The Times of India, New Delhi, p. 9.*

August 21 Defence Minister A K Antony, signed a series of measures with the island nation of Maldives that will step up defence cooperation between the two countries and bring Maldives into India's security grid. *The Indian Express, New Delhi, p. 7.*

August 22 RSS *Sarsanghachalak* Mohan Bhagwat brushed aside all questions relating to the expulsion of senior BJP leader Jaswant Singh from the party saying it was BJP's internal matter. "I can't comment on it." *The Times of India, New Delhi, p. 13.*

_________ A new study has suggested that global warming may heat up oceans to the extent that it could cause Earth's axis to tilt in the coming century. *The Times of India, New Delhi, p. 17.*

August 24 Insurgent groups working on a long-term plan to create a separate homeland for Muslims in the North-East. The secessionists essentially comprise Islamic fundamental groups and provide logistics support to the ethnic and terrorist groups. *The Pioneer, New Delhi, p. 1.*

August 26 The historical temple, believed to be built by the Pandavas, survived mammoth glacial pressure for at least 400 years. This fact has been revealed by a team of scientists at the Wadia Institute of Himalayan Geology in Dehradun. In the Kedarnath

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

area, the researchers were surprised to find multiple evidence indicating that the temple remained completely submerged in colossal ice for as many as four centuries. *The Pioneer, New Delhi, p. 1. & 4.*

_________ Sudarshan praised Jinnah's secular outlook by recalling that "when Mahatma Gandhi supported the Khilafat movement in 1919, Jinnah opposed it. He had argued that Indian Muslims had no connection with the Khalifa of Turkey. But nobody heeded Jinnah. After this, Jinnah left for England and returned only in 1927." *The Times of India, New Delhi, p. 1.*

August 29 Islamists in Kerala have launched an organised campaign for converting girls belonging to other religions into Islam. Girls told the court that they were, forced to convert into Islam and sign marriage contracts. *The Pioneer, New Delhi, p. 7.*

August 30 The strategically located Northern Areas, which borders the North West Frontier Province to the west, Afghanistan and China to the north, has virtually been turned into another province of Pakistan with the name Gilgit and Baltistan. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 19.*

August 31 Two Chinese helicopters have reportedly violated the Indian air space in recent months in Leh area of north Jammu and Kashmir during which they air-dropped some canned food in barren land at Chumar, northeast of this Himalayan town. *The Times of India, New Delhi, p. 9.*

September 1 Unfazed by objections raised by the Maoists, the managing committee of Nepal's Pashupatinath Temple recommended the names of two Indians for appointment as priests at the renowned Hindu shrine. *The Pioneer, New Delhi, p. 11.*

September 2 Come 2010, students in schools under the Board of Secondary Education, Assam (SEBA) will have to study Hindi as a compulsory subject till they pass Class X. *The Indian Express, New Delhi, p. 6.*

September 3 In a landmark legislation, the California State Lgislature has unanimously passed a bill about Sikhs and the religious significance of 'kirpans'. The bill defines a kirpan as a blade that resembles a sword and is required for the practice of the Sikh faith. *The Tribune, New Delhi, p. 13.*

September 4 Researchers in Israel say they have developed a computer programme that can decipher previously unreadable ancient texts and possibly lead the way to a Google-like search engine for historical documents. *The Tribune, New Delhi, p. 18.*

September 5 the issue of Indian priests officiating at Pashupatinath temple in Nepal reached a flashpoint with a mob assaulting the two newly appointed Indian priests, stripping them naked and tearing off their sacred threads regarded as mandatory for Brahmins. *The Times of India, New Delhi, p. 11.*

September 6 Punjab Prant president of the Rashtriya Sikh Sangat, Sardar Rulda Singh passed away on August 15 in PGI Chandigarh. He had been shot by two unidentified armed persons on July 28 and was admitted to Rajindra Hospital of Patiala. *The Organiser, New Delhi, p. 9.*

_________ A ten day Sambhashan Shibir was conducted by Sanskrit Bharati an organisation to promote spoken sanskrit former election commissioner Shri N Gopalswami was one of the learners of Sanskrit speaking the shibir held in Badodara ended on August 15, 2009. *The Organiser, New Delhi, p. 9.*

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

September 9 The Rashtriya Swayamsewak Sangh (RSS) has invited his Jaswant Singh's son and former Barmer MP Manvendra Singh to its forthcoming national meeting in Mumbai. *The Tribune, New Delhi, p. 18.*

September 10 Disgraced Pakistani nuclear scientist AQ Khan has now admitted to Islamabad's role in helping Iran's nuclear weapons programme. *The Pioneer, New Delhi, p. 12.*

_________ In the past four years, some 5,000 Hindus may have crossed over from Pakistan, never to return. They say they had no choice: they had to flee the Taliban. *The Times of India, New Delhi, p. 1.*

_________ The Babri Masjid demolition was a result of Vishwa Hindu Parishad's strength and not the result of the BJP's efforts, VHP chief Ashok Singhal said the BJP needed to change its leadership. "I have told them that they took out raths to get arrested, but it was our people who gathered at the Babri site within five hours. BJP has no connection with the Ram temple issue as whatever was done was done by our 'karsevaks'," said Ashok Singhal while talking to reporters. He also said that the BJP lost the recent Lok Sabha elections because it did not espouse the cause of Hindus. It will happen again if they do not change their stand, he added. "There is growing dissent among the party workers. "For people like us who protect the Hindu religion, BJP is an Opposition party. We have never backed the BJP. We have only said that vote for those who protect the Hindu tenets. There is a need for a party which protects interests of Hindus," he added. *The Indian Express, New Delhi, p. 1.*

September 15 The tiny hill State of Himachal Pradesh has been adjudged as "overall best performer and fastest moving State" in the country surpassing all other States in key sectors. The awards were presented by Pranb Mukherjee at New Delhi. The function was organised by India Today group. *The Pioneer, New Delhi, p. 9.*

_________ India signed a civil nuclear pact with uranium-rich Mongolia that will help it source uranium for its power plants. *The Indian Express, New Delhi, p. 2.*

_________ Mongolia today became the fifth nation to sign a civil nuclear pact with India as New Delhi extended a 25 million US dollar soft loan to the Central Asian nation to help it mitigate the effects of the global financial meltdown. *The Tribune, New Delhi, p. 1.*

September 20 In the oldest part of Rig Veda, 'Asura' is used to denote 'supreme spirit', like 'Ahura' of the Zoroastrians. It also meant a god and was applied to deities like Indra, Agni, Varuna, Later, Asura stood for enemies of Sura (Gods). Some scholars believe the change happened because of a family quarrel between Aryans in Iran, thus dividing them into Vedic Aryans and Iranian Aryans. This is perhaps why Deva means 'demon' in the Iranian language. *The Times of India, New Delhi, p. 14.*

September 23 Shimla: Aiming at ushering in another 'white revolution' the Himachal Government is all set to launch the Rs 300 crore 'Doodh Ganga' project on the birth anniversary of Pt Deen Dayal Upadhyaya, falling on September 25, to cover Shimla, Mandi and Solan districts in the first phase. *The Pioneer, New Delhi, p. 7.*

September 24 The local government in Multan, have decided to close down the music department at Multan's Bahauddin Zakariya University. Teachers at the department see the closure as death of music. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 17.*

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

September 25 The great Indian divide along north-south lines now stands blurred. A pathbreaking study by Harvard and indigenous researchers on ancestral Indian populations says there is a genetic relationship between all Indians and more importantly, the hitherto believed "fact" that Aryans and Dravidians signify the ancestry of north and south Indians might after all, be a myth. "This paper rewrites history ... there is no north-south divide," Lalji Singh, former director of the Centre for Cellular and Molecular Biology (CCMB) and a coauthor of the study, said. *The Times of India, New Delhi, p. 1.*

September 27 The Russian capital city Moscow is celebrating Durga Puja for the 20th time in a row this year as more and more Russians are joining the Indian community in the festivities. *The Pioneer, New Delhi, p. 7.*

September 28 With countrywide concern over Chinese incursion in the North-East, RSS chief Mohanrao Bhagwat cautioned that India was not "adequately prepared" in the event of any hostility with China and suggested Government to take effective steps to secure its "porous border". *The Pioneer, New Delhi, p. 1.*

September 29 Chief Minister Narendra Modi ridiculed the Congress-led UPA Government for its attempts to deny the existence of the Ram Setu through which Lord Ram's soldiers had entered the then Lanka to kill the demon king Ravan. *The Pioneer, New Delhi, p. 6.*

_________ New Delhi/Nagpur: The RSS will launch a Gau Grama Yatra (procession to protect the cow), covering 22,000 km and three lakh villages in 108 days. The campaign will start from Kurukshetra in Haryana on September 30. RSS publicity chief Manmohan Vaidya said, "this is our largest movement ever involving the cow". *The Hindustan Times, New Delhi, p. 13.*

September 30 A rock engraving similar to the unique sign of the Indus Valley civilization - a man with a jar - has been found in Kerala for the first time. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 8.*

_________ Shashtra Puja an annual practice of along with Dusshera festival took place in the residence of Narendra Modi Gujarat Chief Ministers. The NSG commandos on duty to guard chief Minister also joined and performed Puja of their weapons. The 'secular's of the country are disturbed. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 12.*

Select Articles

India and Southeast Asia : Paramjit S. Sahai, The Tribune, New Delhi, June 3, 2009, p. 9.

Conference at Ho Chi Minh City in Vietnam, historic and the first of its kind in facilitating an academic discourse between Indian and Vietnamese experts - academicians, research scholars, former diplomats and bureaucrats. The theme of the conference was: "Relationship between India and Southeast Asia - A Strategic Commitment of Regional Integration".

Ideology key to BJP's survival : Kanchan Gupta, The Pioneer, New Delhi, June 3, 2009, p. 8.

The consequences of the former course of action would be three-fold: Those allergic to ideological rigour will make an exit, debilitating the party in the short and medium term, but strengthening it in the long term; the BJP's integrity quotient will increase substantially; and the drift which began in 1998 will be arrested.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

Vedic perspective on the environment : K N Sharma, The Times of India, New Delhi, June 4, 2009, p. 18.

"Do not harm the environment, do not harm the water and the flora; earth is my mother, I am her son; may the waters remain fresh, do not harm the waters... Tranquillity be to the atmosphere, to the earth, to the water, to the crops and vegetation." This Vedic prayer invokes divine intervention to bless and protect the environment.

Leading from the edge : Ajoy Bose, The Pioneer, New Delhi, June 4, 2009, p. 9.

Despite its electoral setback, the BJP continues to be an important political player because of its robust State units, many of whom have done exceedingly well in the general election. The BJP should focus on developing its regional assets which will undoubtedly keep the party in play in national politics.

Going green at 12,500 ft : ASRP Mukesh, The Pioneer, New Delhi, June 5, 2009, p. 13.

"The Gangotri region of Uttarakhand Himalayas contains one of the largest glacier systems in the world that feeds the Ganges river which is the lifeline for millions. Due to global warning, glaciers are receding at an alarming rate prompting international attention and concern.

Tiananmen and modern China : Marshall Berman, The Pioneer, New Delhi, June 6, 2009, p. 9.

Tears for Tiananmen are not allowed; Communist China has turned the Chinese into a race of mechanised amoeba fit for only eating, producing, reproducing and dying.

Primary tasks for BJP : Upamanyu Hazarika, The Pioneer, New Delhi, June 8, 2009, p. 9.

To become a winning force once again, the BJP should focus on putting into place a system that will enable the inclusion of new members and the emergence of leaders through a democratic process. It could begin by adopting the American system of primaries to select candidates for elections.

Lanka Buddhists take on Church : Sandhya Jain, The Pioneer, New Delhi, June 9, 2009, p. 8.

Sri Lanka's Joint Committee of Buddhist Organisations wants re-introduction of the stalled Bill on Prohibition of Forcible Conversion of Religion.

No sanction for cow slaughter : Maneka Gandhi, The Pioneer, New Delhi, June 10, 2009, p. 9.

Scholars of Islam and Islamic rulers have repeatedly urged Muslims to desist from cow saughter. The practice must stop.

Revival of Christian heritage of Europe : Priyadarsi Dutta, The Pioneer, New Delhi, June 13, 2009, p. 9.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

The Left is out to discredit the Rightist victory; the past few years have seen enough Islamist disruption of the essential Europe thanks to misplaced multi-culturalism.

Apply scientific stress test to the study of history : Jayakrishnan Nair, The Mail Today, New Delhi, June 14, 2009, p. 10.

According to BB Lal, who was the Director General of the Archaeological Survey of India, the correct translation of *Baudhayana Srautasutra* says that while some Aryan tribes went east the other went west from some intermediary point. This intermediary point for Dr Lal is not the valley of the Kabul river, but that of the India.

'BJP failed to project Hindutva' : Pioneer News Services, The Pioneer, New Delhi, June 15, 2009, p. 5.

Criticising the BJP for its 'inconsistency' in toeing the 'Hindutva' policy, senior RSS ideologue MG Vaidya said the party should give up the policy as it had "failed" to attract commoners.

Rising Chinese military power : Air Marshal R.S. Bedi (retd), The Tribune, New Delhi, June 15, 2009, p. 8.

China is creating areas of influence in South Asia. Its interest in South Asia is purely strategic with India in mind. China has global power aspirations; it aims to possess military power commensurate to its economic strength. It finds India as a thorn in its flesh that comes in the way of its aspirations.

Text from the Tehran street : Ramin Jahanbegloo, The Indian Express, New Delhi, June 17, 2009, p. 10.

Islamic Iran is more divided than at any time since 1979, a divide between traditionalists and modernists that has been deep in Iran since the Islamic Revolution. But in this election the divide between the state and the nation has become deeper than even before.

Iran's day of destiny : Robert Fisk writes from Tehran, The Tribune, New Delhi, June 19, 2009, p. 11.

Not since the 1979 Iranian Revolution have massed protesters gathered in such numbers, or with such overwhelming popularity.

After the election, revolution postponed : Pyotr Goncharov, The Pioneer, New Delhi, June 19, 2009, p. 9.

Iran is seething with Opposition rallies to protest against the official presidential election returns. According to some media reports, Opposition slogans have become harsher. In Tehran, one can see wall writings: "Down with the dictator!" and "Down with Ahmakinejad" - the president's name misspelled as a sign of disrespect.

The other great game : Ajey Lele, The Indian Express, New Delhi, June 19, 2009, p. 12.

There has been much debate in the past regarding India's unwillingness to use air power when it fought its war with China in 1962. But India is a much more confident

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

state economically and militarily today. Apart from strengthening its air defences India also plans to put two army divisions, each comprising around 25,000 to 30,000 troops, in the region.

The courage of conviction : Rakesh Sinha, The Indian Express, New Delhi, June 19, 2009, p. 13.

The crisis in the Bharatiya Janata Party should not be seen as an outcome of the party's defeat in the Lok Sabha elections or merely a rumpus hinting at the change of leadership. Even if BJP had emerged victorious the crisis was inevitable.

Iran stands divided : Syed Nooruzzaman, The Tribune, New Delhi, June 20, 2009, p. 13.

Most Iranians are opposed to the government jeopardising their country's economic growth because of its isolationist policies.

Demanding to be counted : The Economist Newspaper Limited 2009, The Indian Express, New Delhi, June 20, 2009, p. 11.

In the three decades since the Islamic Republic was founded, Iran has not been rocked like this. Tehran is engulfed in huge marches every day. Women in *chadors*, bus conductors, shopkeepers and even turbanned clerics have joined the joyous show of people power. Nationwide strikes are planned.

Iran's unique system rests uncomfortably on two pillars, one democratic, the other theocratic. The elected parliament and presidency have plenty of power over state spending and investment.

Today's upheaval undermines both these pillars at once. Most Iranians believe electoral fraud has occurred on a massive scale.

An apparently rigged election is shaking the fragile pillars on which the Iranian republic rests.

Iran rises up : The Economist Newspaper Limited 2009, The Indian Express, New Delhi, June 22, 2009, p. 13.

The sight of a million-odd demonstrators on the streets of Tehran, the like of which has not been seen since the revolution that unseated the shah in 1979, is bound to stir the hearts of freedom lovers the world over. It looks increasingly as though the government will have to crack down or back down.

Let Church leave Hindus alone : Sandhya Jain, The Pioneer, New Delhi, June 23, 2009, p. 8.

The Shankaracharya made the most significant intervention in public life when he denounced the US Commission on International Religious Freedom as "an intrusive mechanism of a foreign Government". "We will not allow external interference in our internal affairs."

Neda emerges Iran's heroine : AP Tehran, The Pioneer, New Delhi, June 23, 2009, p. 11.

Young Iranian woman lying in the street - blood streaming from her nose and mouth - has quickly become an iconic image of the country's opposition movement and unleashed

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

a flood of outrage at the regime's crackdown. Thousands of people inside and outside Iran have written online tributes to the woman, praising her as a martyr. Some calling her "Iran's Joan of Arc."

Between a rock and a hard place : Prafull Goradia, The Pioneer, New Delhi, June 23, 2009, p. 9.

The BJP is struggling with a split identity. Many Hindus accuse the party of soft-peddling the 'Hindu cause'. On the other hand, the BJP feels it has been too aggressive with Hindutva.

Don't abandon us this time around : Asif Ali Zardari, The Indian Express, New Delhi, June 24, 2009, p. 11.

The west used my nation as a blunt instrument of the cold war. Once the Soviets were defeated, the Americans took the next bus out of town, leaving behind a political vacuum.

Bush was right after all : Ashok Malik, The Pioneer, New Delhi, June 27, 2009, p. 8.

That realism was a critical element of the Bush doctrine. It remains the former President's most abiding foreign policy legacy. Mr Obama can paint it in another colour, give it a new name; ultimately, he has to embrace it.

System, not exams, causes stress : Swapan Dasgupta, The Pioneer, New Delhi, June 28, 2009, p. 1.

The trauma suffered by children preparing for board examinations is not on account of the hard work they have to put in. The disorientation is caused by the sheer mindlessness of the learning process and the equivalence process inherent in the evaluation.

Zardari's obfuscation : K. Subrahmanyam, The Tribune, New Delhi, June 29, 2009, p. 8.

Some observers believe that the most serious threat to Pakistan may come from the Lashkar-e Toiba spreading its influence in Punjab.

Court martialled but not disgraced : Sidharth Mishra, The Pioneer, New Delhi, June 29, 2009, p. 3.

It's common knowledge that Khanduri battled several mafia groups hankering after Government contracts. He reined in the realtors who were out to exploit the hill State environmentally. He acted touch with poachers and made industrial houses pay taxes. The General probably made too many enemies in too short a period.

Courting the dragon : Brahma Chellaney, The Times of India, New Delhi, July 2, 2009, p. 12.

The key reason why India ranks lower in the policy profile of the Barack Obama administration than it did under President George W Bush is that America's Asia policy is no longer guided by an overarching geopolitical framework. After five months in office, Obama's approach on Asia lacks a distinct strategic imprint and thus appears fragmented. His administration may have a policy approach toward each major Asian country and issues, but still lacks a strategy on how to build an enduring power

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

equilibrium in Asia. The result is that Washington is again looking at India primarily through the Pakistan prism.

The Sunday Story, Derailed : Raghvendra Rao, The Indian Express, New Delhi, July 5, 2009, p. 5.

The Katra-Qazigund railway line would have connected Kashmir with the rest of India. Seven years and many crores later, the Railway's most 'strategic' line remains in the works.

Bengal thinks tomorrow : Chandan Mitra, The Pioneer, Foray, New Delhi, July 5, 2009, p. 4.

Mamata Banerjee has established her claim to being the only political leader who can take the CPM head-on. Her politics and policies may be terribly unstructured but she epitomises Bengal's determination to throw off a 32-yar-old yoka. The future is unfolding before our eyes. And once again it will be a peaceful transition from authoritarianism. This time the voters of Bengal don't want an encore; they want a curtain call even though the last act of the play -namely two more years of Buddhadeb Bhattacharjee's tenure - is yet to get over.

Free education of Marxist fetters : Sidharth Mishra, The Pioneer, New Delhi, July 6, 2009, p. 3.

The Marxists have benefited most from the licence-permit raj in the higher education sector. Therefore, it's no wonder that they are crying hoarse over the initiation of reforms by HRD Minister Kapil Sibal. Strategically they are, as of now, hitting at the reforms proposed for the school-level examinations.

A life dedicated to national integration : Saswat Panigrahi, The Pioneer, New Delhi, July 6, 2009, p. 14.

The nation is celebrating the 108th birth anniversary of its favourite nationalist leader Syama Prasad Mookerjee. A prophet of Indian nationalism, he founded Bharatiya Jana Sangh - the first nationalist political party of independent India. He also championed the cause of integration of Jammu and Kashmir with the rest of India.

Rock and a hard place : Sandhya Jain, The Pioneer, New Delhi, July 7, 2009, p. 8.

The reasons for which the respective commissions were set up, viz, tensions between Hindus and Christians in one case, between Hindus and Muslims in another, sum up the psycho-political existential crises faced by India's native Hindu community since independence.

Waging war to Taliban : Hiranmay Karlekar, The Pioneer, New Delhi, July 9, 2009, p. 9.

Two outcomes the Pakistani Army's ongoing offensive against the Taliban can have - failure of success. India stand to lose in both cases.

Engineering marvel on track : Jupinderjit Singh, The Tribune, Extra, New Delhi, July 11, 2009, p. 1.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

The Jammu-Udhampur track has many remarkable feats, including the region's highest rail bridge - Gambhir bridge. Apart from the 2-km-long bridge, it also has a nearly 2.50-km tunnel, which is even longer than the historic Jawahar Tunnel.

Is China fraying? : The Economist Newspaper Limited 2009, The Indian Express, New Delhi, July 14, 2009, p. 13.

The ethnic Uighurs in the far western city of Urumqi, the capital of Xinjiang province, accused Han Chinese factory workers in the southern province of Guangdong of racial violence against Uighur co-workers. By the time Urumqi's Uighurs had finished venting their anger, more than 150 people were dead and hundreds more injured and thousands missing.

UPA on a borrowing spree : M Venkaiah Naidu, The Pioneer, New Delhi, July 16, 2009, p. 9.

The Budget presented by the UPA Government does not inspire confidence in its ability to steer the economy to the path of high and inclusive growth. After raising expectations of job-generating reforms, the Finance Minister has skirted the issue entirely. What we have is a disastrous plan to borrow blindly, pay huge interest, and leave the people struggling to cope with the consequences of the UPA's folly.

The end of ideology : Arun Shourie, The Indian Express, New Delhi, July 15, 2009, p. 11.

That party has since become a mere electoral machine. But as general standards deteriorate, the party has to 'adjust'; it has to effect 'compromises'. Gandhiji's warning comes true - "An organisation that relies on rogues to do its work shall soon have rogues at its helm." As relatives and henchmen acquire properties on the sly, as they run businesses benami, the party loses is ability to fight the rulers. As the Zulu proverb has it, "A dog with a bone in its mouth, can't bark". Arun Shourie reveals the inside outside of politics with democratic idea in his mind. The picture truly disturbing raising the question is this the means to attain greatness or the greatness is being thrust despite all this a paradox indeed.

How the party withers away : Arun Shourie, The India Express, New Delhi, July 16, 2009, p. 11.

The leader and his circle could easily see the portent, if only they would. Are only the already-converted coming to our meetings? Are they coming spontaneously, or do we have to bus them? How many uncommitted, new listeners are coming to our meetings? But they don't see. The organisation is busy talking to itself. Those within the circle are busy knifing each other. And the leader? He is enveloped in an impenetrable fog of self-satisfaction: the day's photo-opportunity, the day's conclave, the day's meeting of the 'core group', the day's meeting of 'office-bearers', the day's meeting of allies' - what a fulfilling day...

Ring out the old, ring in the new : Arun Shourie, The Indian Express, New Delhi, July 17, 2009, p. 11.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

The party continues to lose ground. The cries to stem the rot become shriller. They demand that responsibility be fixed. But the decision to fix responsibility is in the hands of the very ones who have brought the organisation to that pass.

Learn from past, focus on China : Swapan Dasgupta, The Times of India, New Delhi, July 19, 2009, p. 20.

If India wants to play a more meaningful role in global affairs, it has to come to terms with its rich imperial inheritance. There is precious little in the post-1947 record that can guide India's journey back to relevance. The meek, it has repeatedly been shown, don't inherit the earth.

Cong's martyrs and BJP martyrs : Sidharth Mishra, The Pioneer, New Delhi, July 20, 2009, p. 3.

The present Congress leadership has shown a pragmatic approach and has accepted that its adventures in Golden Temple and Sri Lanka were uncalled for. It has apologised to the Sikh community for Operation Blue Star. It should now accept the Kargil victory as Indian victory and not that of a BJP-led Government. There are no Congress martyrs and BJP martyrs. In war with enemy country, there are only national martyrs.

Kandhamal lies nailed : Saswat Panigrahi, The Pioneer, New Delhi, July 22, 2009, p. 9.

Media and 'secular' political parties followed the Church in blaming 'Hindu groups' for last year's violence in Kandhamal district of Orissa. The interim report of the Justice Mohapatra Commission of Inquiry nails this and other lies and exposes the role of evangelists.

Feeding Muslim separatism : Prafull Goradia, The Pioneer, New Delhi, July 23, 2009, p. 9.

The Budget allocates Rs 25 crore for Muslim universities in Murshidabad and Mallapuram on the lines of AMU. This will only strengthen the Muslim sense of separateness.

Why 'business as usual' with Pak? Terrorists' infrastructure intact : G Parthasarathy, The Tribune, New Delhi, July 23, 2009, p. 8.

A democratic, secular India cannot share a "common destiny" with a theocratic, feudal and military-dominated Pakistan.

Sharm surrender not surprising : Balbir K Punj, The Pioneer, New Delhi, July 24, 2009, p. 8.

Mr Singh, in keeping with tradition, has now given Pakistan an issue to counter the charge of terrorism that New Delhi levels against Islamabad. The history of Congress governments jeopardising our national interests continues to be played out time after time.

Manmohan unfair to Baluchis : B Raman, The Pioneer, New Delhi, July 28, 2009, p. 9.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

By failing to reject any reference to Baluchistan in the joint statement issued after this meeting with Pakistan Prime Minister Yousuf Raza Gilani at Sharm el-Sheikh, Mr Manmohan Singh has made India a party to the Pakistan exercise to demonise the Baluchi freedom struggle as a 'terrorist movement'.

The cost of minority appeasement : Prafull Goradia, The Pioneer, New Delhi, July 31, 2009, p. 9.

Promoting religious education in the name of minority betterment can induce a certain mindset which will lead to India having to deal with a worldview that is unique to *madarsas* and fuels *jihadi* fervour.

Sharm el-Sheikh-the 'B' word : Ajey Lele, The Pioneer, New Delhi, August 1, 2009, p. 9.

No more Mukti Bahinis and LTTE but 'offensive diplomacy' on Balochistan could lead to Pakistan being exposed as a criminal state that double-deals not just India and the Untied States, but also its own people.

Balochistan - is it to be a 'B' word just as Kashmir is the 'K' word in the Indo-Pak track? Post Sharm el-Sheikh, this question has given rise to fears in Opposition circles that India may have been tricked into giving credence to the ISI's propaganda that new Delhi is somehow 'involved' in Baloch secessionism.

PM's weakness is Sonia Gandhi's biggest strength : Chandan Mitra, The Times of India, New Delhi, August 2, 2009, p. 8.

It pays Sonia Gandhi to keep Manmohan Singh weak, while he benefits by happily staying weak. This ensures she can comfortably mother him, bail him out of traps he frequently falls into but never remotely emerges as a political threat to the dynasty.

Backfoot on Balochistan : Chandan Mitra, The Pioneer, New Delhi, August 4, 2009, p. 8.

The stupefying reference to Balochistan implicitly equating India with Pakistan in promoting terrorism in each other's territory. However, the Government's subsequent attempts to dilute the serious implications of that insertion could hardly hide Pakistan's unrestrained jubilation at having trapped India to concede the unthinkable. Islamabad has never offered concrete evidence of India's alleged involvement in efforts to destabilise Pakistan by promoting separatist movements in that country.

Bengal's stormy alliance : Kalyani Shankar, The Pioneer, New Delhi, August 7, 2009, p. 9.

Mamata Banerjee is clear in her mind that the Congress can at best be the junior partner in its alliance with the Trinamool Congress in West Bengal. The Congress isn't willing to give up so easily. But Mamata Banerjee knows that she has the upper hand and can call the shots.

An empire of lies : Somnath Bharti, The Pioneer, New Delhi, August 8, 2009, p. 9.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

Corruption and flow of Indian moneys to Zurich - both were assured continuity by the UPA Government through the new Companies Bill, which revealed no intent of preventing more Satyam scams from recurring.

Reforms-where to begin? : Udayan Namboodiri, The Pioneer, New Delhi, August 8, 2009, p. 9.

The UPA's new Companies Bill smacks of insincerity - fraudulent practices in auditing will continue to breed more Satyams and resultant misery for millions.

Dealing with Pakistan : K. Subrahmanyam, The Tribune, New Delhi, August 10, 2009, p. 8.

Though India has been a victim of Pakistani terrorism, war is not an option to deal with nuclear-armed Pakistan, as accepted by the US and the UK.

Invasion of a different kind : Prafull Goradia, The Pioneer, New Delhi, August 10, 2009, p. 9.

Inspired by trouble-makers masquerading as community leaders, some Muslims have been trying to invade protected monuments to offer *namaz*. This is patently unacceptable. In the light of these highlights, the Wakf Board has no business to support the intruders into the protected monuments.

The month we lost Dara : Ashok Malik, The Pioneer, New Delhi, August 11, 2009, p. 9.

Dara Shikoh was killed on an August night 350 years ago, and with him dies hopes of a lasting Hindu-Muslim compact. It was the partition before partition. Today Dara lies forgotten in his own country, reduced to a fringe figure by politicians too embarrassed to acknowledge him. This August 30, spare a melancholic thought for that noble prince, and for the India that might have been.

Society's tolerance level is wearing thin : CS Thapa, The Pioneer, New Delhi, August 14, 2009, p. 9.

It won't pay to adopt the line of least resistance with either Pakistan or China. As a nation, we need to take tough decisions. Peace can only be ensured when we are ready for war.

Europe dreads Islamic surge : Sunanda K Datta-Ray, The Pioneer, New Delhi, August 14, 2009, p. 8.

A Princeton historian, Bernard Lewis, articulated this prospect in July 2004 in an interview with *Die Welt*. He thinks that "current trends show that Europe will have a Muslim majority by the end of the 21st Century at the very latest". That thought has animated European politics ever since, reactions being both defensive and placatory.

An open letter : Prem Singh Sher, The Abhay Bharat, New Delhi, August 15-September 14, 2009, p. 2.

Please declare Hindusthan as DAR-UL-ISLAM and obtain the title of GHAZI says Prem Singh Sher in an open letter to PM. The Muslim appeasement policies are made

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

into sarcasm to say that at this rate India is on the way to become an Islamic republic in not to distant a future. The satire is penetrating as well as realistic.

Spread terror, get reward! : Sandhya Jain, The Pioneer, New Delhi, August 18, 2009, p. 8.

The Supreme Court's startling decision to award a staggering Rs 10 lakh as compensation to the family of underworld character Sohrabuddin Sheikh bodes ill for India's battle against *jihadi* terror and its native accomplices. Sohrabuddin and his wife, Kausar Bi, were killed by Gujarat Police in November 2005.

Partition saved India : Premen Addy, The Pioneer, New Delhi, August 19, 2009, p. 9.

The India-Pakistan civilisation divide was too elemental to bridge. Over the years, India has defied the prognostications of doomsayers, who proclaimed famine, war, and dissolution to a world unconvinced of India's permanence. Would India be where it is without partition?

'Too much factionalism in BJP' : Prafulla Marpakwar, The Times of India, New Delhi, August 19, 2009, p. 11.

RSS chief Bhagwat: party should look beyond Naidu, Swaraj, Jaitley & Modi says, Mohan Madhukar Bhagwat the youngest RSS sarsanghachalak after the organisation founder K B Hedgewar. "My predecessors were more capable and well experienced." But those who know him say that the man knows what he wants. Bhagwat is at the top of the sangh parivar structure at a time when its political arm, BJP, is in disarray. Factionalism is rampant and its sense of direction fuzzy. The RSS boss speaks about all this and more in an interviews- his first ever since he took charge of the organisation.

Party to differences : Pratap Bhanu Mehta, The Indian Express, New Delhi, August 20, 2009, p. 12.

It suggests that denying the two-nation theory does not do away with the thorny problem of how we conceptualise the relationship between Hindus and Muslims. If the BJP did not like Jaswant Singh's argument they could have killed it by polite condescension of benign neglect.

Jaswant's Jinnah : Pratap Bhanu Mehta, The Indian Express, New Delhi, August 22, 2009, p. 21.

It is more difficult to make a knockdown argument for one position or the other. Yet, we write and argue as if all these judgments are so easy. This is the backdrop against which a serious book like, Singh argues, the Congress spectacularly misjudged Jinnah at many levels: his political tenacity, his tactical adaptability, his single-mindedness, his sense of mission. The roots of these misjudgments are deep. Partly if was overconfidence. After the UP election results, the Congress came to the erroneous conclusion that it did not need to share power with the voices Jinnah represented. Partly it was a question of historical judgment.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

Jinx of a djinn (ah) : Chandan Mitra, The Pioneer, Foray, New Delhi, August 23, 2009, p. 4.

There can be another view of Jinnah that confers on him the mantle of a deliverer who only precipitated the inevitable; that Partition would have happened with or without him because after Direct Action Day, August 16, 1946 in Calcutta, there was no way Hindus and Muslims could have continued to cohabit. It is further contended by votaries of this argument that many more fearsome communal riots would have been engineered in the aftermath of that massacre, leading to thousands of deaths and complete anarchy.

Yesterday Once More : Swati Das, The Pioneer, Foray, New Delhi, August 23, 2009, p. 1.

A cluster of excavations over the years has made the southern tip of the Indian peninsula, India's most revered heritage mile thought many don't know about it. The excavations have potential to change the world view of pre-historic civilisations. Swati Das in Chennai tells you why. Under water explorations carried out by the State archaeology department and the National Institute of Oceanography found ruins of walls and wells. However, the explorations are not complete yet. It was also known by names, including Kaveripattinam and Puhar (river estuary in the sea). It is situated at the mouth of the Cauvery, where the river meets the bay.

Scramble to control Indian Ocean : Ranjit B Rai, The Pioneer, New Delhi, August 25, 2009, p. 9.

China is actively pursuing a policy of making its presence felt in the Indian Ocean region, but Beijing cannot be allowed to have its way as that would be against India's interests. American strategist Captain Alfred Mahan said "whosoever controls the Indian ocean, dominates Asia. In the 21st century, the destiny of the world will be decided upon its waters."

Who writes history? : Dhiraj Nayyar, The Indian Express, New Delhi, August 27, 2009, p. 10.

It is curious how our big debates on history are begun by politicians, not academics. Historians in India, barring a handful, are too caught up in the traps of patronage laid out not just by politicians but also by leading lights of their own profession. Even within universities and non-university research institutions, it is difficult to find jobs unless you conform to a particular worldview.

Editorial - to defeat Congress, polarise the 74% anti-congress Hindu Votes : P. Deivamuthu, The Hindu Voice, Vol. 8, Issue No. 5, August 2009, p. 1.

There is a set of voters (vote bank) who blindly vote for the Congress. All the issues are out of their consideration. Who are these voters? They are Muslims, Christians and a minuscule section of Hindus. They religiously vote for Congress at every election. The Muslim and Christian voters have been told that if they vote for the opposition BJP, their religions will be in danger. They can make a religious appeal to Muslim voters. Appeal to Hinduism becomes communal. A minuscule section of Hindus are in the grip of their caste leaders. Because of their vested interest, they keep them aloof from the Hindu fold. Thus, the 'secular' Congress gets almost 100 per cent of the approximately 13% Muslim

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

votes and 3% Christian votes. By getting say another 10% of the Hindu votes on caste basis, the total votes come to about 26%, enough to make it victorious. Since the total voting is about 55%, the balance 29% non-Congress Hindu votes gets divided among 3-4 unsuccessful candidates.

BJP needs to recast itself : Sandhya Jain, The Pioneer, New Delhi, September 1, 2009, p. 8.

The BJP is asleep to these grim threats at a time when the UPA is making dangerous compromises with Pakistan, a Western stooge or non-Nato ally in Washington terminology. The sooner a new leadership speaks for Akhand Bharat, the better.

Jinnah to Hafiz Saeed : G Parthasarathy, The Tribune, New Delhi, September 3, 2009, p. 8.

It is shocking when Indians, who should know better, extol Jinnah's "virtues". His culpability in the communal holocaust he unleashed by his call for "Direct Action" cannot be condoned.

Imagining India the 'Secular' way : Prafull Goradia, The Pioneer, New Delhi, September 7, 2009, p. 9.

While Gujarat finds no mention among economically advanced States, the post-Godhra riots find place in Nandan Nilekani's book and he refers to devotees of Ram as thugs!

From Indus to India : Dilip K Chakrabarti, The Indian Express, New Delhi, September 9, 2009, p. 11.

There's a subtle politics operating in archaeology, that denies the links between the Indus civilisation and Vedic culture.

Marketing religion : Khimi Thapa, The Pioneer, New Delhi, September 10, 2009, p. 9.

TV show promotes conversion through disinformation.

Ek Nayee Zindagi leaves three questions to be answered: First, why is it alright for this show to depict that reciting the *Vedas* (or for that matter any other religious scripture) can do no good while adopting the Bible can? Second, can television channels broadcasting such a programme shrug off their responsibility towards their audience by simply claiming that the show is a paid-time programme? Third, will politicians, who were frothing at the mouth over *Sacch Ka Saamna,* take congnisance of this show?

Af Pak on the brink : Ajey Lele, The Pioneer, New Delhi, September 12, 2009, p. 9.

Is democracy a cure-all? That's a question Afghans are asking themselves after seeing how easily Karzai manipulated the recent election. Another poser: how would Pakistan encash the imbroglio? For India, nothing would change either way. Karzai was once thought to be 'close' to India because of New Delhi's support to him during his exile.

Mongolian president arrives on his first to India : Tirthankar Mukherjee, The Mail Today, New Delhi, September 13, 2009, p. 36.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

The great Mongol empire, controlled more landmass than any other imperial power in history. It was the sweeping armies of the Great Khans that brought all the small kings and kingdoms in their way under unified rule and redrew boundaries of nations.

That was 800 years ago. The empire's founder, Chinggis Khaan, has had a chequered reputation in the western world. Jawaharlal Nehru, wrote in one of his letters to his daughter from prison, "Chengiz is, without doubt, the greatest military genius and leader in history. Alexander and Caesar seem petty before him.

Rhetoric is best avoided : G Parthasarathy, The Pioneer, New Delhi, September 17, 2009, p. 8.

We should remember that China still has festering disputes on its maritime boundaries with Japan, Vietnam, Indonesia, Philippines, Brunei and Malaysia and that China settles its border disputes only when a weakened neighbour succumbs to its pressures. The Chinese respect national power and will respect India only if our economic and military strength warrants respect for us as a people and as a nation.

Pakistan-sponsored ethnic cleansing : B Raman, The Pioneer, New Delhi, September 18, 2009, p. 9.

The year 1988 saw the 'invading hordes' of Sunni tribals trained and motivated by OBL coming down the Karakorani Highway constructed with Chinese assistance in territory, which belongs to India. Ever since Shia Sunni have been drawn into mutual killings.

Deconstructing China : Chandan Mitra, The Pioneer, Foray, New Delhi, September 20, 2009, p. 4.

India lost a huge opportunity to settle the boundary issue when the NDA was voted out in 2004. I had accompanied Atal Bihari Vajpayee on his historic visit to Beijing in 2003 during which not only did the Chinese revise their characterisation of Sikkim as an Independent kingdom and classified it as a State of India in their maps, but also agreed to the setting up of a high-level structure to resolve the boundary dispute. More importantly, the principle of settlement was broadly agreed upon.

China's nuke bazaar : B Raman, The Pioneer, New Delhi, September 22, 2009, p. 9.

It's now official. AQ Khan passed on the know-how of making nuclear bombs to Iran and Libya. But it was China which supplied Pakistan with blueprints and fuel to make the Islamic Bomb for use against India. China must be asked to explain.

Criminal slaughter : Anuradha Dutt, The Pioneer, New Delhi, September 23, 2009, p. 9.

Cows continue to be smuggled from various States to Bangladesh where they are slaughtered. West Bengal, ruled by the CPI(M) and where cow slaughter is legal, has proved to be an ideal transit point. The Congress, sensitive to minority sentiments, does not care about this crime.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

Iran tests advanced missiles : Ali Akbar Dareini, The Pioneer, New Delhi, September 29, 2009, p. 11.

Israel, US military bases in West Asia are within striking range. Iran has tested its most advanced missiles to cap two days of war games, raising more international concern.

UPA's disastrous J&K policy : Sandhya Jain, The Pioneer, New Delhi, September 29, 2009, p. 8.

It is neither accident nor coincidence that the now America-friendly Libyan leader Muammar Gaddafi called for an 'independent state' of Kashmir at the UN General Assembly on September 23, even as news reports hint at New Delhi's plans to cede more autonomy, vindicating Hindu fears about disproportionate concessions to separatists.

'Hindus' Fateful Hour - Act before it is too late : Dr. Babu Suseelan, Hindu Voice, West Mumbai, September 2009, p. 8.

Muslims and Christians, the Marxist party, and the bogus secular anti-Hindu Congress party headed by the Italian Catholic Sonia is betraying Hindus and India. They behave like a social virus in the body of Hindus.

Book Reviews

Subramanian Swamy : "Corruption and Corporate Governance in India" Satyam, Spectrum & Sundaram, Har-Anand Publications Pvt. Ltd. (2009), New Delhi, p. 180. Rs. 395/-

The book is about corporate governance in India in the context of recent mega-corporate frauds and corruption. It strives to discover appropriate governance rules to ensure the sustainability and effectiveness of the institution of corporate bodies, private and public, in India in the context of two mega corruption scandals of 2009, namely, Satyam and Specturam.

The author argues that corruption mis-allocates scarce resources from the meritorious to the unworthy, the immoral, the criminal and the powerful. Thus, the author points out, such transactions result in undermining people's trust in the political system and hence causes a decline in the legitimacy of public office.

Dr. Swamy refers to the law of Diminishing Interest of the public in opposing corruption when there is no accountability or if the corrupt are not brought to book. Worse, the author states, this consequent apathy towards mega corruption could vitiate the democratic system of India. Hence, the author argues, it is very important for alert citizens to understand the phenomenon of corruption and then bond together to combat it.

Corruption in India today is worse than the spread of AIDS virus, the HIV. It has multi-dimensional effect on the nation, in weakening of moral standards, in lowering the growth rate of the economy, in distorting investment priorities, subverting democracy, and most of all in enabling the enemies of the nation to play havoc with national security and defence of the country. The two major scandals, Satyam Computers and DoT Spectrum allocation symbolize this virus.

Subramanian Swamy is today nationally known and widely respected for his ideological conviction, for his scholarly credentials, and a blemish-free political career. He has been elected to Parliament for five terms and been a Cabinet Minister twice.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

He taught in the economics faculty of Harward for 10 years before returning to India to become Prof. of economics in the Indian Institute of Technology, Delhi.

Since 2001, Dr. Swamy has been teaching every summer economics course at Harvard University from which world-famous University he had received his PH.D. in Economics after collaborating in research with two Nobel Laureates, Prof. Simon Kuznets and Prof. Paul A. Samuelson.

Dr. Swamy has been amongst the earliest to advocate economic liberalisation and competitive market economy for India. As Union Commerce Minister in 1990-91, he prepared the blueprints for economic reforms, adopted by the successor Narasimha Rao government, in which Dr. Swamy held a Minister-rank position.

Himanshu Roy : Secularism and its Colonial Legacy, Manak, Rs 450/-

This is a pioneering work and a must read book for undergraduate and post-graduate students by Himanshu Roy who teaches political science in the university of Delhi. It is equally a work of importance for those who are interested in research and debates on communalism and secularism in Indian as it posits, through facts and arguments, a historical trajectory of different stages of Indian society particularly with a focus on colonial and post-colonial developments. More, it analyses the transformation of dharma and *relegere* under colonialism/capitalism with a comparison of Western Europe.

Roy's main thesis which he rightly points out, is that "Indian states in history, unlike Europe, have rarely been theocratic. Neither were they ideologically premised on the religious majority-minority divide."

In his second thesis he argues that it was the colonial state that "introduced the religious divisive paradigm in 1909 in connivance with the Muslim elite which was stiffly opposed by the Moderate Congress."

Modern communal politics in India has its basis in the existence of parliamentary electoral arrangements. It is mainly based on the numerical biases of the modern state. Western or capitalist secularism, which Roy takes as the reference point, is based on the simplistic, dualistic picture of the historical processes of depletion of religious beliefs often implying that rationalisation led the growth of the secular atheistic world view. Such an interpretation actually does not fit even for Western secularisation as it denies the complexities and interruptions of the rationalisation process.

It is refreshing to read Roy's book at this juncture when Marx and Marxism are generally forgotten. He brings in lots of insights of the subject from a Marxian perspective.

-Ajay Kumar
The Pioneer, New Delhi,

Ramashray Roy : Economy, Democracy and State-The Indian Experience, Sage, Rs 650/-

The book explores the patterns of economic growth and its impact on Indian democratic politics. It offers an insight into how the changing patterns of economic growth in the country have determined Government policies and questions the extent to which the hopes and aspirations of the common man have been satisfied. It also offers a comprehensive picture of how economic forces have emerged as being of central

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

importance in India and the kind of economic growth the Indian polity has been able to achieve within the framework of democratic politics. Useful for scholars of political philosophy and political economy.

-The Pioneer, New Delhi,

Jaswant Singh : Jinnah-India-Partition-Independence, Rupa, Rs. 695/-

But it's rather hard to believe that the man who was unmoved by the bloodletting that followed his call for 'Direct Action' in August 1946, would be moved by the sight of wailing women and orphaned children at a Hindu refugee camp in January 1948. It at all Jinnah was distressed it was because his vanity had been hurt - the 'Quaid' was being spat upon as a 'Qatil'.

Like Jaswant Singh, I am neither a scholar nor a historian. But unlike him, I am the child of parents who suffered the horrors of partition; my father arrived in India from East Pakistan with his widowed mother and four younger siblings, penniless and virtually with nothing more than the clothes on his back. He didn't have the privilege of growing up in princely Jodhpur, nor did life afford him the luxury of pondering over the minutiae of the politics of partition in the amiable surroundings of Nehru Memorial Library. Yet, I do not recall him ever expressing either rancour of regret. Even if he wanted to my mother wouldn't have let him. The struggle for survival rode rough-shod over any emotional struggle that might have peaked hesitantly in their minds.

I belong to the minority which believes that Partition was the second best thing to have happened to us. The first was the failure of the *ghazis* to prop up a dissolute *badshah* in 1857. In his literally weighty tome *Jinnah: India - Partition - Independence,* Jaswant Singh obviously disagrees with this contention: "It was here in the middle of the 19th century that the symbol of our sovereignty was finally seized and trampled underfoot by British India." Not everybody mourned that event, just as Hindus in Bengal were not terribly upset when Nawab Siraj-ud-Daulah was given the boot in 1757.

But that defeat of presumed Muslim supremacy in 1857 was not without significance. India's vast majority, Muslims discovered salvation in separatism in the subsequent decades.

Ayesha Jalal's is a Pakistani's perspective; but is Jaswant Singh's the Indian perspective? If yes, then which India is he speaking for? That which revels in lighting candles at Wagah border even as more lives are laid to waste to satiate the lust ignited by Jinnah's rhetoric that.

Jaswant Singh's book revolves around the contention that if only Nehru had been farsighted, had he and Patel not colluded to pass the March 8, 1947 Congress resolution asking for the partition of Punjab (and keeping the option of partitioning Bengal open), had they been more accommodative towards Jinnah, there would have been no Pakistan, no Bangladesh today, but a "magnificent edifice of a united India". Jinnah's opposition, Jaswant Singh argues "was not against the Hindus or Hinduism, it was the Congress that he considered as the true political rival of the Muslim League, and the League he considered as being just an extension of himself". Jaswant Singh oversimplifies the case for the Quaid-e-Azam when he says, "The Muslim community for Jinnah became an electoral body; his call for a Muslim nation his political platform; the battles he fought

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

were entirely political - between the Muslim League and the Congress; Pakistan was his political demand over which he and the Muslim League could rule.”

Kanchan Gupta
The Pioneer, New Delhi,

Gurcharan Das : The difficulty of being good-on the subtle art of dharma, Allen Lane, p. 434, Rs. 699/-

Gurcharan Das is a multitalented man. He has been a successful business leader, an author of plays and novels and the book *India Unbound*, which told the world that India had arrived. Now he has taken on the difficult task of reading the *Mahabharata* and interpreting its many messages in light of contemporary circumstances.

It is a recent of *Mahabharata* for contemporary times.

-Meghnad Desai
The Indian Express, New Delhi,

BetweenDream and Realities: Some Milestones in Pakistan’s History. By Sartaj Aziz, (Karachi: Oxford Press, 2009) pp. 408, Rs. 595.00

Sartaj Aziz, having been a Member of Planning Commission and Finance Minister, is fully competent to recount the tragic political devolopment in Pakistan. No New issues have been brought out, but the book gives and authentic account of the Country’s turbulent history.

Jinnah’s demise and Liaqat Ali’s assassination deprived Pakistan of high caliber political leadership. This void was filled by top bureaucrats and Army generals - who ruled Pakistan directly for 24 years and indirectly for 10 years. During these two periods all political institution were destroyed. The foreign policy was dictated by the military, and their budget was enhanced to 6.9 percent of GDP.

The fear of India and Islam were two binding factors. Nehru’s death and killing of Indira Gandhi were heralded as relief from India-centric concerns. To hold the diverse constituents together, Jinnah’s Muslim Pakistan was converted into a semi-secular theocratic Islamic State. In a letter to Steve Cohen, the author says that Jinnah’s vision of Pakistan was confined to having a Muslim rule over the areas where they were in majority and not a homeland for Indian Muslims. This contradicts his oft repeated assertions.

As for the Generals-Ayub surrendered independent foreign policy by joining defence pacts with the USA, Yahya denied legitimate political space to Mujib resulting in formation of Bangladesh. Zia firstly hanged Bhutto, who had revived the economy. Thereafter introduction to Sharia laws and ‘Hadood’ in criminal injustice, and support to 10,000 *madrassahs* (to train Taliban for the war in Afganistan) led to Islamic fundamentalism taking roots in Pakistan. Musharraf exiled Nawaz Sharif, the elected Prime Minister, abrogated the Constitution and dismissed the Chief Justice to legitimise his dictatorial regime. Had he been removed for crossing the LOC, without government approval, Pakistan would have been saved from his nine year’s misrule.

The author regrets the two devastating wars with India, misadventure of Op Gibralter’, Kargil fiasco and clanditine Nuclear development; which ruined the economy and isolated Pakistan internationally.

It is a highly readable account with an Index and seven Appendices.

Brigadier K.Narendra Singh (Retd.)

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

Letters

Will Hindus learn a lesson

This refers to N.Jamal Ansari's Muslims must elect Muslims. Like a true Islamist Ansari has emphasized the real objective of Islam viz. to gain political power, and finally rule the world through "*shariat*" laws! He advocates the well-known process of behaving in a country Islam calls "*darul herb*", i.e. "create a political disbalance that gives them (Muslims) bargaining power". His statement, "So, what should the Muslims do? How should they regain the lost ground in the political arena?" is only another method of reminding Muslims that once they were the rulers the Hindus were their subject of "*dhimmies*". Jamal desires Muslims to support first the Ulema Council candidate (to oppose what Muslims worldwide say (State terrorism). Next, Mr. Badruddin Ajaml's UDF; then the Congress candidate if he be in a sound position. In U.P. he advocates to support the Samajwadi Party (probably because it was Mulayam Singh Yadav who let loose his troops on *Kar Sewaks* to kill the Hindu Sadhus). Ansari is free to hold and propagate his sectarian ideology. So are the Hindus (though they may be condemned as communal by the "secularists").

Ansari states that Muslims have been excluded from "We, the People" of the Constitution forgetting that it was this that recognized the undefined terms like minorities, secular etc. He forgets that Pakistan, the creation of Aligarh University thought eliminated the entire Hindu minority. Ansari raises the Batala House controversy but has never condemned the Islamic terrorists killing innocent Hindus, attacking Hindu temples and ethnic cleaning of the Hindu Pandits from the Kashmir valley. Ansari regrets the non-response of UPA Govt to the memoranda with regard to Batala House encounter. But safely forgets the unbelievable statement of Dr. Manmohan Singh that Minorities (Muslims) have the first right on Bharat's resources, a country that Muslims will never recognize as their motherland and oppose the freedom times prayer 'Vande Mataram.'

Despite all this I welcome his article, which I hope will activate the Hindu thought process and unite them and vote for the candidate who openly vows to support the Hindu cause and elevates them to their rightful position. The current feeling among Hindus of being reduced to the level of second-class citizen in their own country is highly depressing and if not addressed in time may lead to chaos in the country. Will the Hindus learn the appropriate lesson and vote unitedly to protect their own interests and the interest of the country?

Prof. Shridhar Pant

Hindus suffer in Orissa

Those who forcibly convert Hindus to Christianity have found a very easy way to eliminate people who are against their conversion tactics, if appears that Orissa has become an unsafe place for Hindu seers. Certain people claim that about 28 per cent of Hindus have been converted to Christianity in Orissa. The Church seems to believe that it is its fundamental right to convert Hindus and those who oppose it are seen as interfering with religious freedom. This must be stopped.

Hindu organisations must protest in a big way to highlight the killing of Hindu seers and threat to Hindu.

-Vijayalakshmi, Podannur

Education System

Dear Sir/ Madam

With due respect I am writing this email to you.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

Its really nice to go through your website. Its artistically designed and informative too. I am from Karnataka State, presently working in abroad in the field of Engineering Education.I really appreciate the aims, objects, agenda efforts, and the activities of this esteemed organisation. I feel proud to say that I am an Indian, a Hindu.

I have noticed in other religions that the child when he/she is 10years of age, the child will be knowing everything about their religion, its system, culture, epics. But, in our Hindu 'Religion',many of the children even at the age of 18 years are not aware of its system, culture, Sanskriti and epics (like *Ramayana, Mahabharatha, Bhagvadgeetha, Puraanas, Upnishads*, etc.) I really wonder and worried also. Many of the parents are supporting their children to shine in the field of Films, Sports, and in modern life. In this long run, their children will forget our Hindu culture and they will get attracted towards Western Culture like Bars, Pubs, Disco, Romance, etc. These children don't understand the importance of our Hindu culture and hence they cannot be competitive in representing our Hindu Culture infront of people of other relegions in this competitive era. Also, our Hindu Culture and system are having lots of scientific and astrological importance's which are really very beneficial to the society.

It is our duty to cultivate, protect and nurture our great Hindu Culture and matters related to it. But, because of the negligence of many of the parents today we Hindus are facing lots of problems in the society.

I think, these problems can be solved at an early stage by implementing an education policy where our Hindu children are made to study our Hinduism its history and epics at the age of 8 to 10 years, so that the affection towards the modern Hi Fi society and Western life can be minimised. This will also make children aware of our Great Hindu Culture and tradition so that they can implement the same in their life and career. It is advisable to include subjects like Astrology, Purans, Epics, Vedic subjects, etc in the study materials in the elementary level of education.

Our respected swamijis, saints, elders, leaders from various Hindu Organisation like VHP, RSS, Bajrang Dal and senior politicians of BJP and other parties can bring this by making modifications in the elementary education system.

I carried this view in my heart and mind for several years. I finaly decided to express then through your medium

Shrinath Rao (Shet),
B.E., M.Tech, Dip in Journalism, MISTE.
Sr.Faculty in Engineering
Oman.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com